ੴ

सिक्ख धर्म : मूल जानकारी

डॉ. कर्मजीत सिंह

ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ
ਪੰਜਾਬ ਸਟੇਟ ਓਪਨ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ,
ਪਟਿਆਲਾ

ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ
ਪੰਜਾਬ ਸਟੇਟ ਓਪਨ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ
ਪਟਿਆਲਾ

वाहिगुरू

ੴ

सिक्ख धर्म : मूल जानकारी

डॉ. कर्मजीत सिंह

ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ
ਪੰਜਾਬ ਸਟੇਟ ਓਪਨ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ
ਪਟਿਆਲਾ

©

जगत गुरू नानक देव
पंजाब स्टेट ओपन विश्वविद्यालय पटियाला
(पंजाब राज्य विधान सभा के अधिनियम नं.19 (2019)
के तहत स्थापित)

SIKH DHARM : MUDDLI JAANNKAARI (Hindi)

BY

Dr. KARAMJEET SINGH
Vice Chancellor
Jagat Guru Nanak Dev
Punjab State Open University, Patiala
vc@psou.ac.in
krjsingh@gmail.com
Contact: +91 9876107837

Assistance and Design
Dr. Deep Shikha
Jagjit Singh

ISBN: 978-93-93579-28-7

2022

मूलः
HB: 340/- PB: 290

डॉ. धर्म सिंह संधू, रजिस्ट्रार जगत गुरू नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशन किया गया और शहीद–ए–आजम प्रैस एंड होस्पिटैलटि प्रा.लि.पटियाला से प्रकाशित हुई।

विषयानुक्रमणिका (INDEX)

दो शब्द

भूमिका

पहला अध्याय

दस सिक्ख गुरू साहिबान : संक्षिप्त जानकारी

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी : संक्षिप्त जानकारी

दूसरा अध्याय

पांच प्यारे, चार साहिबज़ादे और चालीस मुक्ते

तीसरा अध्याय

प्रमुख सिक्ख शहीद :– भाई मती दास, भाई दिआला, भाई सती दास, बाबा बंदा सिंह बहादर, भाई मनी सिंह, भाई तारू सिंह, भाई सुबेग सिंह, शाहबाज सिंह, बाबा दीप सिंह

चौथा अध्याय

प्रमुख सिक्ख बीबीआं :– बेबे नानकी जी, माता खीवी जी, बीबी भानी जी, माता गुजरी जी, माता साहिब कौर जी

पांचवा अध्याय

सिक्ख धर्म की प्रमुख शख्सीयतें : – भाई मरदाना जी, बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई नन्द लाल जी, भाई घनईआ जी

छठा अध्याय

सिक्ख का दैनिक / नित नेम, सिद्धान्त और अरदास

वाहिगुरू

दो शब्द

जगत गुरू नानक देव पंजाब स्टेट ओपन विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक शहर पटियाला में स्थापना इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए मील पत्थर स्वीकार की जा सकती है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से एक नयी उमंग, नयी आशा उन लोगों का सौभाग्य बनी जिन्होंने लम्बे समय से शैक्षिक क्षेत्र में प्रवेश लेने की सोच को अपनी चेतना से ही मिटा दिया था। सुप्रसिद्ध अकादमिक विशेषज्ञ डॉ. कर्मजीत सिंह की इस विश्वविद्यालय के पहले उपकुलपति के रूप में नियुक्ति तत्कालीन सरकार द्वारा उठाया गया प्रशंसनीय कदम स्वीकार किया जा सकता है, जिस पर निश्चय ही उन्हें भी गर्व अनुभव हुआ होगा।

डॉ. कर्मजीत सिंह पंजाब के ऐसे प्रथम प्रबुद्ध कॉमर्स अकादमिक विशेषज्ञ हैं, जिनकी उपलब्धियाँ राष्ट्रीय क्षेत्र से आगे बढ़ चुकी हैं। कॉमर्स जैसे अति नीरस और कठिन विषय में आपने उच्च स्तर तो प्राप्त किया ही है साथ ही साथ समय ने आपको इस विषय को साहित्य की तरह पढ़ाने की अन्तःदृष्टि एवं पहुंच विधि के निर्माता और चिन्तक के रूप में पहचान दी है। यद्यपि इस क्षेत्र में ऐसी विधा को मात्र स्वप्न और मृगतृष्णा के रूप में ही देखा जाता रहा है।

अकादमिक विशेषज्ञ के रूप में यद्यपि शीर्ष पर पहुंचना सहज कार्य नहीं है साथ ही अकादमिक विशेषज्ञ के साथ–साथ उच्च प्रबन्धक के रूप में मील पत्थर स्थापित करना भी सरल नहीं है, किन्तु डॉ. कर्मजीत सिंह ने इसे भी सत्य सिद्ध कर दिया। प्रबन्धन की गुढ़ती पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से ग्रहण की, जहां सैनेट, सिंडीकेट तथा अन्य विभिन्न महत्त्वपूर्ण पड़ावों को पार करते हुए इस विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार जैसी उच्च पदवी पर प्रतिष्ठित हुए। इनके परिश्रम, सत्य निष्ठा और लगन का ही परिणाम था कि रजिस्ट्रार के रूप में इनका कार्यकाल आज भी इस विश्वविद्यालय में स्वर्ण युग (गोल्डन ऐज) के रूप में जाना जाता है।

किसी स्थापित संस्था में पदवी–आसीन होना और पहले से

स्थापित कार्यों को और आगे ले जाना एक सहज प्रक्रिया है किन्तु एक नयी संस्था को स्थापित करना और चलाना अति विषम कार्य होता है। डॉ. कर्मजीत सिंह ने आसपास की अकादमिकता और शैक्षणिक संस्थाओं का अति गहन दृष्टि अवलोकन किया, मंथन किया, लक्ष्य निर्धारित किए और इस विश्वविद्यालय को शीर्ष पर ले जाने का दृढ़ निश्चय किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कोर्स बनने लगे, इनमें भौगोलिक क्षेत्र के विरासती इतिहास को प्राथमिकता दी गई। यह कार्य नया भी था और अद्‌भुत भी था। सुयोग्य व्यक्तियों की टीम गठित की गई जो पूरी लगन से उपकुलपति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रही। सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने लगी और जगत गुरू नानक देव पजांब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला चर्चा में आने लगी।

डॉ. कर्मजीत सिंह के अन्य कार्यों में एक महत्त्वपूर्ण कार्य 'पब्लिकेशन ब्यूरो' की स्थापना करना भी है। वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि विश्वविद्यालय हमेशा अपने पब्लिकेशन के माध्यम से ही शैक्षणिक क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित करते हैं। विश्वविद्यालय की फैकलटी को इस ओर प्रेरित करने के लिए स्वयं उदाहरण बने और विश्वविद्यालय के पब्लिकेशन ब्यूरो के पहले प्रकाशन के रूप में बहुत ही सुन्दर कॉफी टेबल सुचित्र रंगीन पुस्तक 'तेग बहादर धर्म ध्वज' श्री गुरू तेग बहादर जी के 400 वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित की। मुझे यह बताते हुए अति हर्ष अनुभव हो रहा है दूसरी रचना 'सिक्ख धर्म : मूल जानकारी' उपकुलपति साहिब के नाम जा रही है। सम्बन्धित पुस्तक प्रोफैसर पूर्ण सिंह के शब्दों के साथ ' पंजाब ना हिन्दू ना मुसलमान, पंजाब सारा जींदा गुरां दे नाम ते' का वास्तविक प्रकाशन समझी जा सकती है। इस पुस्तक में सिक्ख धर्म के संस्थापकों, शहीदों, गुरूसिक्खों का जो ऐतिहासिक विवरण दिया गया है, वह नया भी और निराला भी। सम्बन्धित पुस्तक जहां विश्वविद्यालय के कोर्सों का हिस्सा बनेगी, वहीं बहुत कुछ को पुनः हमारी चेतना में जागृत करेगी जिसे हम अनजाने में भूल चुके हैं।

मैं जहां इस पुस्तक के साथ स्वयं का नाम जोड़ते हुए गर्व अनुभव कर रहा हूँ वहीं, डॉ. कर्मजीत सिंह उपकुलपति साहिब को बधाई देता हूँ।

निश्चय ही उनकी यह गतिविधियां इस विश्वविद्यालय के पब्लिकेशन विभाग को उत्साहित करेगी और जरख़ेज बनाएंगी।

सरबजिन्दर सिंह (डॉ.)
डायरैक्टर (आनरेरी) पब्लिकेशन ब्यूरो,
जगत गुरू नानक देव
पंजाब स्टेट ओपन विश्वविद्यालय, पटियाला

वाहिगुरू

भूमिका

समाज को विधिवत् ढंग से चलाने के लिए और सभ्यक बनाने में धर्म केन्द्रीय भूमिका निभाता है। यद्यपि वर्तमान समय में विज्ञान और तकनीक का बहुत विकास हुआ है किन्तु फिर भी सम्पूर्ण विश्व में धर्म का केन्द्रीय स्थान है और रहेगा भी। विश्व के आठ बृहद् धर्मों की प्रकाश भूमि ऐशिया है, जिन्हें पूर्वीय और पश्चिमी धर्मों का नाम दिया गया है। पूर्वीय धर्म शृंखला में हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बुद्ध धर्म और सिक्ख धर्म आते हैं और पश्चिमी धर्म शृंखला में यहूदी, जरतुशत, ईसाई और इस्लाम धर्म की गणना की जाती है। इनके अतिरिक्त ताओवाद, कन्फूयशियस और चार्वाक की गणना विश्व के बड़े दर्शनों के रूप में की जाती है।

इन सभी धर्मों का अपना अनूठा और नवीन सन्दर्भ है। इन धर्मों के धर्म ग्रन्थों में वर्णित सैद्धान्तिक प्रसंगों के आधार पर बड़ी–बड़ी कौमों की सृजना हुई जो इनके उत्पत्ति वर्ष से लेकर आज तक अपने धर्म संस्थापकों और पवित्र ग्रन्थों के समक्ष नतमस्तक होते हुए उसे उसी तरह नया और नवीन रख रही हैं। धर्म की इस तवारीख में पूर्वीय धर्म शृंखला में उत्पन्न हुआ सिक्ख धर्म ऐसा धर्म है जो विश्व के महत्त्वपूर्ण धर्मों में नया भी है और अद्वितीय भी। नया इस कारण क्योंकि सभी धर्मों के बाद उत्पन्न हुआ है और अद्वितीय इस कारण कि 'सरबत का भला' जैसे इन अलौकिक और विलक्षण सर्वकल्याणकारी सिद्धान्तों के कारण एक विलक्षण पहचान का धारणी है। अन्य धर्मों की तरह इसका प्रकाश भी धर्म–संस्थापक के अवतार धारण करने पर हुआ। जिनका सांसारिक आगमन पंजाब की धरती राय–भोई की तलवंडी में हुआ और उनसे अवतरित बाणी के प्रकाश द्वारा ही सिक्ख धर्म अस्तित्व में आया। इस दैवीय नाद पर विश्वास करने वाले और उनके द्वारा बताए मार्ग के अनुगामी जन समूह को 'सिक्ख' की संज्ञा से विभूषित किया गया।

सिक्ख धर्म की शुरूआत के समय में दोनों समकालीन धर्म अपनी–अपनी धार्मिक मर्यादाओं और पवित्र धर्म ग्रन्थों के सैद्धान्तिक प्रसंग को पूर्णतः भूल चुके थे। धार्मिक पतन शिखर पर था और पाप तथा भ्रष्टाचार चरम पर था। धार्मिक नेता धर्म के संरक्षक नहीं अपितु धर्म के ठेकेदार बन चुके थे। धर्म के नाम पर आम लोगों को लूटा जा रहा था।

जनता अपमानित जीवन जी रही थी। शासक वर्ग धर्म–दमनकारी हो गया था। अत्याचार और जुल्म को ही वे धर्म मानते थे। तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन गुरू नानक देव जी ने इस प्रकार किया है–

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।।
कूडु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ।।

अर्थात् कलियुग के राजा अत्याचारी हो गए और धर्म पंख लगाकर उड़ गया। जैसे अमावस की अंधेरी रात्रि (झूठ) के साथ चन्द्रमा (सत्य) छिप गया हो और अंधेरे में कोई मार्ग ही दिखाई नहीं देता।

सिक्ख धर्म के संस्थापक के दैवीय नाद ने शोषित जन को सम्मानित जीवन जीने का मार्ग दिखाया। गुरू नानक देव जी के उत्तराधिकारियों ने अपने संस्थापक के मार्गदर्शन का अनुगमन करते हुए युग–पुरुषों की भूमिका निभाई और शताब्दियों से मनुष्य होने का अहसास भूल चुकी सृष्टि को सिर ऊँचा उठाकर सम्मानित जीवन जीने की कला सिखाई। यद्यपि इस कार्य के लिए सिक्ख गुरू साहिबानों को शहादतें देनी पड़ी और उनके अनुयायियों को अंग–अंग कटवाने पड़े किन्तु उन्होंने सिक्खी के परचम को झुकने नहीं दिया। इस धर्म के दसम नानक ने 1699 ई. को वैसाखी वाले दिन खालसा की स्थापना करके भविष्य का संकेत दिया और शताब्दियों से शूद्र कहकर अपमानित किए जाने वाले लोगों के लिए बादशाहत के दरवाज़े खोल दिए।

जाति–पाति का भेद खत्म करके गुरू गोबिन्द सिंह जी ने खालसा की स्थापना की। भाई नंद लाल जी का गुरू जी ये यह प्रश्न कि खालसा कैसा होना चाहिए? गुरू गोबिन्द सिंह जी द्वारा दिए गए उत्तर को भाई नंदलाल जी ने अपनी रचना तनखाहनामा में अंकित किया है–

खालसा सोइ जो निंदा तिआगै
खालसा सोइ लड़े होइ आगै।।
खालसा सोइ जो पंच को मारै
खालसा सोइ करम को साड़ै।।
खालसा सोइ मान जो तिआगै
खालसा सोइ जो परत्रीआ ते भागै।।
खालसा सोइ पर द्रिशटि को तिआगै।।
खालसा सोइ नाम रत लागै।।

खालसा सोइ गुरबाणी हित लाइ
खालसा सोइ सार मुंहि खाइ।।

खालसा स्थापना वर्ष से लेकर 1708 ई. तक खालसा पंथ ने धर्म युद्ध का अखाड़ा हिन्दुस्तान में कायम रखा। गुरू पातशाह के नेतृत्व में खालसा ने दुष्टों और दोषियों को मार डाला। चमकौर से खिदराणा तक युद्ध करते हुए दुष्टों का विनाश किया गया। इस दौरान चारों साहिबज़ादें, माता गुजरी और खालसा पंथ के जुझारू शहीद हो गए। 1708 ई. में अपनी अंतिम यात्रा से पहले गुरू गोबिन्द सिंह जी ने गुरूगद्दी 'आदि ग्रन्थ' को सौंप कर उन्हें गुरू की उपाधि दी। सिक्ख इतिहास ने इसे इस तरह संभाला हुआ है–

आगिआ भई अकाल की तभी चलाइओ पंथ।
सभ सिखन को हुकम है गुरू मानियो ग्रन्थ।।

गुरू गोबिन्द सिंह जी के ज्योति जोत समा जाने के पश्चात् बंदा सिंह बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने हिन्दुस्तान का भाग्य बदलने के लिए भयंकर युद्ध किए और मुग़ल साम्राज्य की रीढ़ तोड़ दी। इन युद्धों के परिणामस्वरूप मुग़ल हुकुमत का सर्वनाश हुआ और इस धरती पर खालसा परचम लहराने लगा। इन सभी घटनाओं के दर्शन–दीदार को सिक्ख धर्म की अरदास में संभाला हुआ है और एक सिक्ख सुबह–शाम अरदास के माध्यम से अपनी विरासत को याद करते हुए पंथ गुरू साहिबान और शहीदों के समक्ष नतमस्तक होता है। अरदास में वर्णित इस विरासती रंग को संक्षिप्त में पुस्तक में रूपायित किया गया है।

अकाल पुरख की बख्शिश से यह कार्य सम्पूर्ण हुआ। सबसे पहले मैं उनके समक्ष नतमस्तक हूँ, गुरू फरमान है –

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा
सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे।।
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे।।

मैं अति आभारी हूँ, अपने स्वर्गवासी पिता सरदार लक्ष्मण सिंह और माता सरदारनी सविन्दर कौर का, जिन्होंने बचपन में ही मुझे सही दिशा देकर इस मार्ग का अनुगामी बनाया। उनकी प्रेरणा स्वरूप ही मैं इस मुकाम पर पहुंच सका हूँ।

इससे पूर्व मेरी दो पुस्तकें, श्री गुरू नानक देव जी और श्री गुरू तेग बहादर जी के विषय पर प्रकाशित हो चुकी हैं। इन पुस्तकों के पश्चात् मेरी सुपत्नी रमनजीत कौर, सुपुत्र डॉ. बिनेदीप सिंह और डॉ. मफलीन सिंह ने मुझे उत्साहित किया कि मैं एक पुस्तक युवा पीढ़ी के लिए भी लिखूं। मैं अपने परिवार का हार्दिक आभारी हूँ, उनके उत्साह और प्रोत्साहन स्वरूप यह पुस्तक ''सिक्ख धर्म : मूल जानकारी'' लिखी गई ताकि बच्चों को सिक्ख धर्म की जानकारी दी जा सके।

मैं ह्रदय से आभारी हूँ, प्रख्यात सिक्ख विद्वान् डॉ. सरबजिन्दर सिंह जी का जिनके सहयोग से ही पुस्तक का कार्य सहजता से सम्पूर्ण हो पाया है, साथ ही मेरे इस कार्य में दिए गए सहयोग के लिए मैं डॉ. दीप शिखा, सुखदेव सिंह और जगजीत सिंह का भी धन्यवाद करता हूँ।

डॉ. कर्मजीत सिंह
उपकुलपति
जगत गुरू नानक देव
पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला

पहला–अध्याय

दस सिक्ख गुरू साहिबान : संक्षिप्त जानकारी
श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी : संक्षिप्त जानकारी

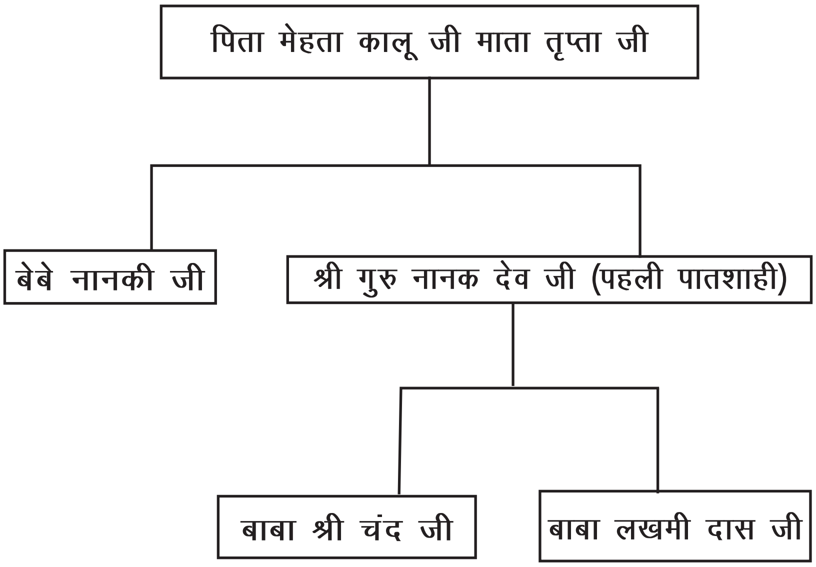
पिता मेहता कालू जी माता तृप्ता जी
बेबे नानकी जी
श्री गुरु नानक देव जी (पहली पातशाही)
बाबा श्री चंद जी
बाबा लखमी दास जी

श्री गुरू नानक देव जी

जन्म

श्री गुरू नानक देव जी सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु हैं। इनका जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. को राय भोई की तलवंडी (ननकाणा साहिब), ज़िला शेखुपुर में हुआ। वर्तमान समय में ननकाणा साहिब पाकिस्तान में स्थित है। गुरू नानक साहिब के जन्म सम्बन्धी भाई गुरदास जी ने पहली वार में लिखा है–

सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ कर सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।।

भाव – सत्गुरू नानक जब प्रकट हुए तो अज्ञान का अंधेरा दूर हुआ और ज्ञान का प्रकाश हो गया जैसे सूर्य उदित होने पर अंधेरा दूर हो जाता है।

परिवार

आप के पिता मेहता कालू ही (पहला नाम कल्याण दास) जी पेशे से पटवारी थे और नौकरी के कारण वह तलवण्डी में रहते थे। आपका मूल गांव पट्ठे विंड, ज़िला अमृतसर में स्थित था। आप की माता जी का मायका गांव 'चाहल' ज़िला लाहौर में था। आप की इकलौती बहन का नाम नानकी था। जो आप से आयु में पांच वर्ष बड़े थे।

विद्या

गुरू नानक देव जी का बचपन तलवण्डी में व्यतीत हुआ। आप बचपन से ही सामान्य बच्चों जैसे नहीं थे। आप तीक्ष्ण बुद्धि थे, बचपन से ही बहुत कम खाते, सोते थे और सदैव आत्म–चिन्तन में मग्न रहते थे। गुरू नानक देव जी को गोपाल पण्डित के पास हिन्दी, ब्रजलाल पण्डित के पास संस्कृत और मौलवी कुतुबद्दीन के पास फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया किन्तु आप साधारण बालक नहीं थे, परमात्मा का ही रूप थे। आपने अपनी तर्क और अन्तर्दृष्टि द्वारा सभी अध्यापकों को हैरान कर दिया। इस सम्बन्धी अनेक घटनाओं का वर्णन मिलता है, इनमें से एक महत्त्वपूर्ण घटना अध्यापकों के समक्ष पैंतीस वर्ण का नया व्याख्याशास्त्र खड़ा करना था। गुरू जी शैक्षिक पक्ष से ही तीक्ष्ण बुद्धि नहीं थे अपितु उन्हें आत्मिक जीवन की बहुत समझ थी। गुरू जी के इस व्यक्तित्व को सबसे पहले उनकी बहन नानकी ही समझ सकी।

जनेऊ की रस्म

लगभग प्रत्येक धर्म में मानव के दो जन्म (शारीरिक जन्म और आत्मिक जन्म) माने गए हैं। पहला जन्म माँ से मिलता है और दूसरे जन्म की प्राप्ति के लिए आयु के एक विशेष स्तर पर पहुंच कर धार्मिक मर्यादा धारण करनी पड़ती है। जब गुरु जी नौ वर्ष के हुए तो पारिवारिक धार्मिक परम्पराओं/रस्मों के अनुसार रिश्तेदारों और भाईचारे को बुलाया गया ताकि बालक नानक के जनेऊ धारण करने की पवित्र रस्म को पूरा किया जा सके। सूत्र को तिहरा करके घुमाते हुए एक डोर (जनेऊ) बनाया जाता है और इस धागे को गले में डालकर बायीं तरफ के कंधे से पहनाते हुए दायीं तरफ कमर तक लटकाया जाता है। इस रस्म के बाद ही बच्चे का अपने पितृ धर्म में प्रवेश माना जाता है। मर्यादा अनुसार गुरू नानक देव जी को जनेऊ पहनाने के लिए पण्डित हरदयाल जी को बुलाया गया। हर्षोल्लास से अन्य रस्में निभाई गईं परन्तु जब हरदयाल पण्डित

गुरू जी के गले में जनेऊ पहनाने लगा तो गुरू जी ने मना कर दिया। उन्होंने ने कहा, जनेऊ को आप पवित्र रस्म कहते हो किन्तु जनेऊ धारण करवाते समय जाति के आधार पर भेदभाव करते हुए आप परमेश्वर द्वारा रचित सृष्टि का अपमान कर रहे हो, आपको ऐसा कोई अधिकार नहीं है क्योंकि उस समय परम्परा थी कि ब्राह्मण को तीन धागों वाला, क्षत्रिय को दो धागों वाला, वैश्य को एक धागे वाला जनेऊ पहनाया जाता था और शूद्रों को तो जनेऊ पहनने का अधिकार ही नहीं था। गुरू जी का इंकार देखकर सभी सगे—सम्बन्धी स्तम्भवत् खड़े रह गए। नानक साहिब ने मुस्कुराते हुए पण्डित को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो जनेऊ आप मुझे दे रहे हैं, यह तो कपास के धागे का है। यह मैला भी होगा और टूट भी जाएगा। पण्डित जी ने बहुत समझाया। पिता ने प्यार से और डराकर भी समझाया किन्तु गुरू जी कहते रहे कि उन्हें आत्मिक जन्म के लिए आत्मिक जनेऊ की आवश्यकता है—

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु।।
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु।।
ना एहु तुटै न मनु लगै ना एहु जलै न जाइ।।

यदि पण्डित जी के पास ऐसा जनेऊ है तो मैं धारण कर लूंगा। सभी सगे—सम्बन्धी, रिश्तेदार और पण्डित हरदयाल बुदबुदाते हुए घर लौट गए। शताब्दियों से इस कट्टर मिथ्या कर्मकाण्ड पर नौ वर्षीय बालक (गुरू नानक देव जी) का यह पहला तीक्ष्ण प्रहार था। समाज सुधार प्रयास में यह उनकी प्रथम विजय थी।

पशु चराने जाना

पिता कालू जी के पास अपनी कुछ ज़मीन थी किन्तु वह खेती करने की अपेक्षा पटवारी के काम की ओर अधिक ध्यान देते थे। उन्हें राय बुलार के दस गांवों की पटवारी करनी होती थी। खेती का काम अधिकतर गरीब किसानों से ही करवाते थे। गुरू जी भी अपने खेतों में आते जाते रहते थे। एक दिन भैंसे चराने के लिए गए। वहां पहुँच कर नाम—सिमरन में लीन हो गए। गुरू जी वृक्ष की ठण्डी छाया में लेट गए, नींद आ गई। भैंसे रोज—रोज घास चर कर थक चुकी थीं। वे समीप ही किसी किसान के हरे—भरे खेत में चली गईं। किसान खेतों में चक्कर लगाने आया तो उसने पशुओं को फसल तबाह करते देखा। किसान गुरू जी को पकड़ कर राय बुलार के पास ले गया। जाते—जाते गुरू जी ने

प्रेममयी दृष्टि से खेतों की ओर देखा। खेत का भाग्य जाग उठा। किसान के कहने पर राय बुलार ने फसल देखने के लिए किसी को भेजा। देखा तो खेत में किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ था।

सगाई और विवाह

16 वर्ष की आयु में 1485 ई. को गुरू नानक देव जी की सगाई और 1487 ई. को 18 वर्ष की आयु में बटाला नगर के निवासी मूल चन्द की पुत्री सुलखणी से विवाह हुआ। विवाह बहुत ही धूम–धाम से हुआ। इस विवाह में बिचौले की भूमिका भाई जै राम ने निभाई थी। जै राम बेबे नानकी जी के पति थे और अपने विभाग के कार्य सम्बन्धी इस गाँव में उनका आना–जाना था। गुरू जी के घर दो पुत्रों श्री चन्द और लखमी चन्द का जन्म हुआ। किन्तु विवाह के बाद भी गुरू जी के कार्य–व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

भाई मरदाना

मरदाना बचपन से ही गुरू जी के घर आता जाता था। उसके पिता गाँव के मरासी थे। वह गुरू साहिब के पिता के पास आता था। अपने पिता के साथ मरदाना भी घर आने लगा। धीरे–धीरे गुरू जी का भाई मरदाना के साथ स्नेह जुड़ गया। गुरू जी बाणी कीर्तन करते और मरदाना उनके साथ रबाब बजाता था। सभी उदासियों के दौरान भाई मरदाना गुरू जी के साथ ही गए। गुरू जी ने भाई मरदाना को अपने साथ रखकर ऊँच–नीच का भेदभाव मिटा दिया।

सच्चा सौदा

पारिवारिक सदस्यों के साथ सोच–विचार करने के बाद मेहता कालू जी के मन में विचार आया कि यदि नानक को व्यापारिक क्षेत्र में भेज दिया जाए, तब शायद ये दुनियादारी को समझ पाए। पिता ने गुरू जी को 20 रुपये देकर व्यापार करने के लिए कहा। उस समय तलवण्डी के समीप तीन बड़े नगर थे–चूहड़काणा, सैदपुर, लाहौर। 1503 ई. में देश में भयंकर अकाल पड़ा। गुरू जी के साथ भाई मरदाना भी थे। जब गुरू जी चूहड़काणे गए तो वहां उन्हें कुछ भूखे साधु मिले। गुरू जी ने पिता के दिए पैसों से भूखे साधुओं को भोजन करवाया, कपड़े दिलाए और सच्चा सौदा करके घर आ गए। इस बात पर पिता जी बहुत नाराज़ हुए। राय बुलार जो वहां का चौधरी था, हमेशा ही बालक गुरू में अल्लाह के दर्शन करता था, मेहता कालू द्वारा नानक जी को डांटने पर उनसे नाराज़ हो

गया। नानक द्वारा खर्च किए बीस रुपये देते हुए कहा, आगे से इस रूहानी बालक को कुछ नहीं कहना। यह हमारा हुक्म है। कालू जी, आपको पता नहीं नानक जी के कारण ही तलवण्डी हरी–भरी है, नहीं तो कब की उजाड़ हो जाती। एक बार बालक गुरू खेतों में घूम रहे थे। तभी अचानक राय बुलार अपने सेवकों के साथ उधर आया। नानक पातशाह को देखते ही घोड़ी से उतरा, जूते उतारे और दर्शन किया। वह नंगे पांव ही बालक गुरू के पास पहुंचा, नतमस्तक हुआ और कहा, "अरदास कबूल कर।" बालक गुरू मुस्कुराए और कहा, "अरदास कबूल भई।" माना जाता है कि यह अरदास कबूल भई के बाद ही राय बुलार के घर पुत्र ने जन्म लिया। पुत्र जन्म के पश्चात् राय बुलार ने आधी ज़मीन अपने बेटे के नाम और आधी ज़मीन बालक गुरू के नाम कर दी।

सुलतानपुर मोदी खाना

माता–पिता की चिन्ता और परेशानी को देखते हुए बहन नानकी ने नानक जी को अपने पास सुलतानपुर बुला लिया। भाई जै राम नवाब के यहां नौकरी करते थे। उन्होंने नवाब को कहकर गुरू जी की मोदीखाने में नौकरी लगवा दी। उस समय यह बहुत ही प्रतिष्ठित नौकरी मानी जाती थी। गुरू नानक जी मोदीखाने में पूरा तोलते थे। वह किसी के साथ बेईमानी नहीं करते थे, सबके साथ मधुर व्यवहार करते और मीठा बोलते थे। आप अपनी कमाई गरीबों को दान में दे देते। अनाज तोलते समय 'तेरा' पर ठहर जाते और तेरा, तेरा करते हुए पूरी बोरी दे देते। मोदीखाने के मालिक के पास रोज़ शिकायतें पहुंचने लगी। मालिक बहुत क्रोधित हुआ, उसने सोचा नानक ने तो पूरा मोदीखाना लुटा दिया होगा। जांच कमेटी बुलाई गई। पूछताछ दौरान सारा हिसाब किताब ठीक निकला। शिकायत करने वाले बहुत शर्मिन्दा हुए। मालिक ने भी पश्चात्ताप किया।

वेई नदी में प्रवेश

एक दिन गुरू नानक जी हर रोज़ की तरह वेई सुलतानपुर नदी में स्नान के लिए गए, किन्तु नदी से बाहर नहीं आए। बेबे नानकी सहित सभी लोगों ने सोचा कि नानक जी नदी में डूब गए हैं किन्तु तभी बेबे नानकी ने सोचा कि जो संसार को पार उतारने वाला है, वह कैसे डूब सकता है। उन्होंने सोचा नानक जी अवश्य ही कोई करामात रचा रहे हैं।

माता–पिता तक इस घटना का समाचार पहुंचाया गया। मुसलमान और हिन्दू सभी की आँखें नम हो गईं। लोग शोक ग्रस्त थे कि तभी समाचार मिला कि नानक तो श्मशान घाट में बैठे 'ना को हिन्दू ना मुसलमान' का उपदेश दे रहे हैं। सभी शहर निवासियों के साथ नवाब और काज़ी भी गुरू जी के पास गए। बाबा नानक निरन्तर 'ना को हिन्दू ना को मुसलमान' का उपदेश दे रहे थे। इस उपदेश द्वारा गुरू जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि हिन्दू और मुसलमान कहलवाने से कोई बड़ा या छोटा नहीं हो जाता।

भाई लालो और मलिक भागो

जब नानक जी तलवण्डी से चलकर, चूहड़खाने के मार्ग से सैदपुर पहुंचे तो वहां एक गरीब श्रमिक भाई लालो, जो बढ़ई था, उसने गुरू जी की भोजन आदि से सेवा की। सैदपुर के पठान हाकिम का एक सेवक मलिक भागो था, जो बहुत ही रिश्वतखोर था। गुरू नानक देव जी को भोजन के लिए निमंत्रण भेजा, किन्तु गुरू जी ने मना कर दिया। मलिक भागो को बहुत बुरा लगा। जन–समूह में नानक जी ने उसे समझाया कि कमाई हक की होनी चाहिए। तुझे इस बात की शिकायत है कि मैंने भाई लालो के घर भोजन क्यों किया, क्योंकि उसकी कमाई मेहनत की है, हक की है।

उदासियाँ

गुरू जी मोदीखाने की नौकरी छोड़ दी और परिवार को बेबे नानकी के पास छोड़ कर मरदाने को साथ लेकर 1507 ई. को संसार के हित के लिए सुलतानपुर से चल पड़े। ''चड़िआ सोधणि धरति लुकाई।'' गुरू पातशाह ने संसार के भले हित पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में उदासियाँ कीं। उदासियों के विवरण हेतु शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित सिक्ख इतिहास (भाग–1) में दिए वर्णन को मुख्य स्रोत के रूप में लिया गया है।

पहली उदासी

श्री गुरू नानक देव की पहली उदासी प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थों की ओर थी। यहां आपने लोगों को झूठे वहम– भ्रमों से बाहर निकाल कर सत्य का मार्ग दिखलाया। पहली उदासी में गुरू जी जहां जहां गए, उन स्थानों का विवरण निम्नलिखित चार्ट अनुसार है –

गुरू नानक देव जी की पहली उदासी

सुलतानपुर → कुरुक्षेत्र → पानीपत → हरिद्वार → गोरखमता → बनारस → मथुरा → काशी → गया → पटना → कामरूप (आसाम) → ढाका → चौबीर परगना → जगन्नाथ पुरी → सुलतानपुर

पहली उदासी से वापिस आकर गुरू जी ने गुरदासपुर ज़िले में रावी के किनारे एक गाँव करतारपुर बसाया। कुछ समय इस नगर की व्यवस्था में व्यस्त रहे किन्तु जल्दी ही दूसरी उदासी के लिए चल दिए।

दूसरी उदासी

अपनी दूसरी उदासी दौरान गुरू जी मुसलमानों, फकीरों, योगियों, बोधियों और जैनियों के प्रमुख स्थानों पर गए, उनसे विचार–विमर्श किया, उन्हें परमात्मा की भक्ति का मार्ग दिखाया। दूसरी उदासी दौरान गुरू जी जिस जिस स्थान पर गए, उन स्थानों का विवरण इस प्रकार है–

गुरू नानक देव जी की दूसरी उदासी

करतारपुर → धर्मकोट → भटनेर → बठिण्डा → सरसा → अजमेर → राजपूताना → इंदौर → हैदराबाद → गोलकंडा → मद्रास → पांडीचरी → तंजौर → सिंहलद्वीप (लंका) → करतारपुर

तीसरी उदासी

जैसे पहली उदासी दौरान गुरू जी तीर्थों पर एकत्रित यात्रियों को आध्यात्मिक जीवन का सही मार्ग दिखाने का प्रयास भी करते रहे, वैसे ही विभिन्न स्थानों पर दर्शन हेतु जाने वाले यात्रियों को एक परमात्मा की भक्ति की ओर प्रेरित किया। इस उदासी दौरान गुरू जी भाई मरदाना के साथ जब सुमेरु पर्वत पर पहुंचे, तो वहां उनकी मुलाकात सिद्धों की एक मण्डली से हुई। गुरू जी ने सिद्धों के साथ गोष्ठि की, उन्हें समझाया कि समाज में रहते हुए ही समाज का सुधार किया जा सकता है। सामाजिक

जीवन का त्याग सही मार्ग नहीं है। कश्मीर में उस समय मूर्ति पूजा का अधिक प्रचलन था और विद्वान् पण्डितों की रिहायश का केन्द्रीय स्थान कश्मीर था। उनके प्रभावाधीन कर्मकाण्ड ओर वर्ण विभाजन के कारण शूद्र कहलाने वाले लोग अत्यधिक कष्ट झेल रहे थे। गुरू नानक देव जी ने कर्म–काण्ड और शूद्रों के साथ हो रहे भेदभाव का ज़ोरदार खण्डन किया। फिर गुरू जी कश्मीर से वापस करतारपुर आ गए। उदासी दौरान स्थानों का विवरण निम्नलिखित है–

गुरू नानक देव जी की तीसरी उदासी

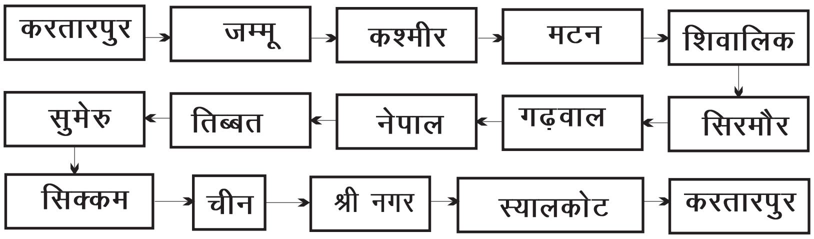

चौथी उदासी

चौथी उदासी दौरान आप इस्लाम से सम्बन्धित स्थानों पर गए। करतारपुर से चलकर आप विभिन्न स्थानों से होते हुए मक्का पहुंचे। आखिरी रात गुरू जी मस्जिद की ओर पैर करके लेट गए। हिन्दुस्तान कांरवां के एक काजी जिऊन ने नानक जी को ऐसे लेटे हुए देखा तो कहने लगा यह कौन काफिर है जो खुदा के घर की ओर पैर करके लेटा हुआ है? गुरू जी ने धैर्यपूर्वक कहा कि मेरे पैर उस तरफ कर दो, जिस ओर खुदा का घर नहीं है। जिऊन सहित सभी काजी हैरान हो गए। इससे आगे हसन अबदाल (पंजा साहिब) गए। यहां का पीर वली कंधारी हमज़ा गौंस की तरह ही लोगों को तंग और परेशान करता था, जो उसके धर्म को नहीं मानते थे। गुरू जी की कृपा से अति दयालु हो गया और गुरू का शिष्य बन गया। वहां सत्गुरू जी की याद में बहुत ही भव्य गुरूद्वारा 'पंजा साहिब' सुशोभित है। फिर आप हसन अबदाल से सैदपुर (एमनाबाद) आ गए। यहां मुसलमान शासक बाबर ने सैदपुर पर हमला कर दिया। बाबर विजयी हुआ। सामान्य लोगों की तरह भाई मरदाना और गुरू जी को भी बन्दी बना लिया गया। गुरू जी और भाई मरदाना अकाल पुरख की रजा में रहते हुए चक्की पीसते रहे। बाबर तक यह समाचार पहुंचा। वह स्वयं गुरू जी से मिलने आया। गुरू जी निर्भीक उसे मानवता

का मार्ग बताया। बाबर ने सभी कैदियों को छोड़ दिया परन्तु वे लोग भय के कारण सैदपुर नहीं गए। उस समय गुरू जी इन डरे–सहमे लोगों को हौंसला देने के लिए उनके साथ गए और कुछ दिन सैदपुर में रहे। फिर गुरू जी करतारपुर वापस आ गए।

गुरू नानक देव जी की चौथी उदासी

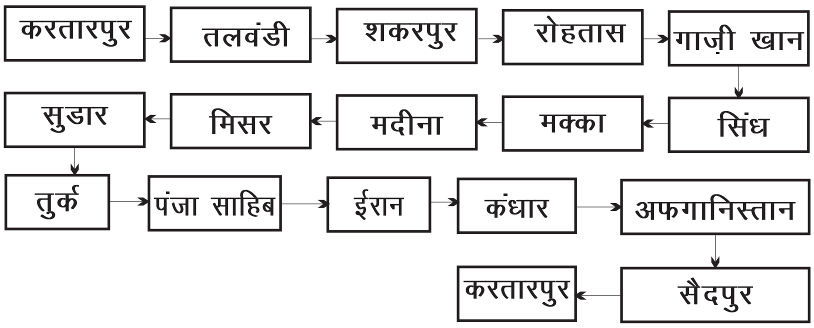

मुलतान–यात्रा

गुरु जी को करतारपुर में रहते हुए 9 वर्ष बीत गए। इस समय गुरू नानक देव जी की आयु 61 वर्ष थी। अचल योगियों का मन्दिर था। गुरू नानक देव जी शिवरात्रि के दिन भाई मरदाना के साथ अचल गए। लोग योगियों को छोड़कर गुरू जी के पास आ गए। योगी भी गुरू जी के पास आकर चमत्कार दिखाने लगे। गुरू जी न उन्हें समझाया कि सत्संग करना और नाम–सिमरन ही असली करामात है। फिर गुरू जी ने उनके साथ लम्बी चर्चा की। गुरू जी भाई मरदाना सहित अचल से मुलतान पहुंचे। जहां मुसलमान दो प्रकार की धार्मिक कुरीतियां कर रहे थे – 1. कब्र परम्परा और 2. स्वयं को खुदा कहना। गुरू जी उन्हें उनकी कुरीतियों के प्रति सुचेत किया। मुलतान से फिर गुरू जी करतारपुर आ गए और यहीं रहकर खेतीबाड़ी करते हुए एक परमेश्वर, एक संसार, एक समाज का उपदेश देते रहे।

बाणी

गुरू नानक देव जी ने 19 रागों में बाणी की रचना की। जिसमें मूल मन्त्र, चऊपदे, अष्टपदीआं, पउड़ीआं, सलोक, पहरे, सोलहे आदि सिरी, माझ, गऊड़ी, आसा, गूजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, तुखारी, भैरुऊ, बसंत, सारंग, मलार तथा प्रभाती राग में अंकित हैं। इसके अतिरिक्त लम्बी बाणियों में जपु, पहरे,

वार, माझ, पटी, वार आसा, अलाहणीआं, कुचजी, सुचजी, थिति, ओंकार, सिद्ध गोसटि, बारहमाहा तथा वार मलार हैं।

भाई लहणा जी को गुरगद्दी सौंपना

गुरू नानक देव जी ने भाई लहणा जी की बहुत कठिन परीक्षाएँ लीं। इस समय गुरू जी की आयु लगभग 70 वर्ष थी। गुरूगद्दी देते समय आपने साहिबजादों, भाई लहणा तथा अन्य सिक्खों में से भाई लहणा जी को हर तरह से योग्य मानकर गुरूगद्दी सौंपने का निर्णय लिया और 14 जून, 1539 ई. को अपने प्रेमी बाबा बुड्ढा जी को बुलाया। आपने पांच पैसे और नारियल भाई लहणा जी के आगे रखकर माथा टेका, बाबा बुड्ढा जी ने लहणा के माथे पर तिलक लगाया, इस प्रकार भाई लहणा जी गुरू अंगद देव जी बन गए। गुरियाई देते समय गुरू नानक देव जी ने गुरू अंगद देव जी को वह सारी पोथी भी सौंप दी, जिस पर वे बाणी लिखते रहे। 1532 ई. से 1539 ई. तक भाई लहणा जी गुरू नानक देव जी की संगति में रहे।

ज्योति–जोत समा जाना

गुरू अंगद देव जी को गुरगद्दी देकर आप 1539 ई. को ज्योति जोत समा गए।

गुरू नानक देव जी की मूल शिक्षाएँ / उपदेश

1. **परमात्मा एक है** : गुरू जी समस्त प्राणि जगत को उपदेश दिया कि परमात्मा एक है। एक ही परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। परमात्मा हर जगह हर कण में मौजूद है।
2. **किरत करना, नाम जपना, वंड छकना** : गुरू नानक देव जी की मूल शिक्षा किरत करना, नाम जपना और वंड छकना है। किरत के महत्व को समझाते हुए गुरू जी कहते हैं कि किरत को केवल आर्थिक समृद्धि का आधार नहीं मानना चाहिए, क्योंकि सच्ची किरत जहां समाज के विकास का मुख्य आधार होती है, वहीं सत्य मार्ग की पहचान भी किरत द्वारा होती है। गुरू साहिब ने स्वयं भैंसे चरा कर, मोदी खाने में नौकरी करके और खेतीबाड़ी करके किरत के महत्त्व को दर्शाया।
3. **ईमानदारी की कमाई और दान** : ईमानदारी की किरत करके उसका कुछ भाग जरूरतमंदों को दान करना चाहिए।
4. **पांच विकार** : गुरू जी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया इन पांच

विकारों को मानव के सबसे बड़े शत्रु कहा है। इनकी संगति मानव को उसके मूल लक्ष्य से दूर कर देती है।

5. **सच्चा आचार** : गुरू जी सत्य को सबसे बड़ा माना और सदाचारी जीवन को तो इससे भी श्रेष्ठ माना है।

6. **भाणा/रज़ा/हुक्म स्वीकार करना** : गुरू जी ने मनुष्य को भाणा मानने भाव परमेश्वर की रज़ा में राज़ी रहने का उपदेश दिया है।

7. **चढ़दीकला और सरबत का भला** : मानव को प्रत्येक स्थिति में चढ़दीकला में रहते हुए सरबत का भला मांगने का उपदेश दिया है।

8. **विद्या का वास्तविक उद्देशय** : गुरू नानक जी ने समाज को यह उपदेश दिया कि विद्या प्राप्ति का एकमात्र उद्देश्य परोपकार होना चाहिए। गुरबाणी सिद्धान्त है–विदिआ वीचारी तां परउपकारी।।

9. **मधुरता और विनम्रता** : गुरू जी ने मधुरता और विनम्रता को मानवता का श्रेष्ठ गुण माना और आपसी भाईचारे का संदेश दिया।

10. **स्त्री का सम्मान** : 'सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान' का उपदेश देते हुए स्त्री को समाज में समानता का दर्जा दिया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सिक्ख धर्म के संस्थापक कौन थे?

(क) गुरू नानक देव जी (ख) गुरू गोबिन्द सिंह जी
(ग) गुरू हरिकृष्ण जी (ङ) गुरू हरिराय जी

प्रश्न 2. गुरू नानक देव जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1539 ई. (ख) 1469 ई.
(ग) 1669 ई. (घ) 1699 ई.

प्रश्न 3. गुरू नानक देव जी की माता कौन थीं?

(क) माता भानी जी (ख) माता दया कौर जी
(ग) माता दानी जी (घ) माता तृप्ता जी

प्रश्न 4. गुरू नानक देव जी की बहन का क्या नाम था?

(क) भानी जी (ख) वीरो जी
(ग) नानकी जी (घ) माता तृप्ता जी

प्रश्न 5. गुरू नानक देव जी के पिता का क्या नाम था?

(क) जैराम जी (ख) मूल चन्द जी
(ग) मेहता कालू जी (घ) बाबा फेरू मल्ल जी

प्रश्न 6. श्री गुरू नानक देव जी के बहनोई का क्या नाम था?

(क) जैराम जी (ख) जै शाम जी
(ग) जै दास जी (घ) जै प्रसाद जी

प्रश्न 7. श्री गुरू नानक देव जी के सुपत्नी कौन थे?

(क) माता जीतो जी (ख) माता गंगा जी
(ग) माता सुंदरी जी (घ) माता सुलखणी जी

प्रश्न 8. श्री गुरू नानक देव जी के कितने पुत्र थे?

(क) चार (ख) तीन
(ग) दो (घ) पांच

प्रश्न 9. श्री गुरू नानक देव जी के पुत्र का नाम बताएं?

(क) बाबा लक्ष्मण दास जी (ख) बाबा श्री चंद जी
(ग) बाबा श्री राम जी (घ) बाबा श्री दास जी

प्रश्न10. गुरू नानक देव जी को सबसे पहले किसके पास पढ़ने के लिए भेजा गया?

(क) गोपाल पण्डित (ख) पण्डित हरदयाल
(ग) पण्डित नारायण दास (घ) पण्डित त्रिलोचन दास

प्रश्न 11.पिता मेहता कालू जी ने जनेऊ धारण की रस्म निभाने के लिए किसे घर बुलाया था ?

(क) पण्डित त्रिलोचन दास (ख) गोपाल पण्डित

(ग) पण्डित हरदयाल (घ) पण्डित तारा राम

प्रश्न 12.गुरू नानक देव जी के पिता जी किसके यहां नौकरी करते थे ?

(क) राय बुलार (ख) जै राम

(ग) नवाब (घ) दौलत खान

प्रश्न 13. गुरू नानक देव जी ने 'ना को हिन्दू ना मुसलमान' का उपदेश किस स्थान पर दिया?

(क) सुलतानपुर (ख) तलवण्डी

(ग) हरिद्वार (घ) मक्का

प्रश्न14. गुरू नानक देव जी जब कीर्तन करते थे तो रबाब कौन बजाता था?

(क) भाई लालो जी (ख) बाबा बुड्ढा जी

(ग) भाई बाला जी (घ) भाई मरदाना जी

प्रश्न 15.गुरू नानक देव जी को उनके पिता ने व्यापार करने के लिए कितने रूपये दिए थे?

(क) 10 रूपये (ख) 20 रुपये

(ग) 40रुपये (घ) 50 रुपये

प्रश्न16. गुरू नानक देव जी बेबे नानकी के पास कहां रहते थे?

(क) सुलतानपुर (ख) अमृतसर

(ग) लाहौर (घ) तलवण्डी

प्रश्न17. मलिक भागो तथा भाई लालो कहां रहने वाले थे?

(क) एमनाबाद (ख) लाहौर

(ग) सैदपुर (घ) करतारपुर

प्रश्न 18. भाई लालो का व्यवसाय क्या था ?

(क) लौहार (ख) राजगिरि

(ग) खेतीबाड़ी (घ) बढई

प्रश्न 19. अलग का चुनाव करें

(क) सज्जन ठग (ख) कौडा राक्षस

(ग) वली कंधारी (घ) भाई मरदाना

प्रश्न 20.गुरू नानक देव जी द्वारा धर्म प्रचार के लिए किए गए भ्रमण को क्या कहते हैं?

(क) उदासियां (ख) घूमना

(ग) यात्राएँ (घ) पर्यटन

प्रश्न 21.भाई मरदाना जी किस गुरू के साथ उदासियों पर गए थे?

(क) गुरू नानक देव जी (ख) गुरू हरिकृष्ण जी

(ग) गुरू गोबिन्द सिंह जी (घ) किसी के साथ नहीं

प्रश्न 22.गुरू नानक देव जी ने पहली उदासी कहां से शुरू की थी?

(क) करतारपुर से (ख) तलवण्डी से

(ग) पंजा साहिब से (घ) सुलतानपुर से

प्रश्न 23.दूसरी उदासी दौरान गुरू नानक जी किस तरफ गए थे?

(क) योगियों, फकीरों की ओर (ख) सिद्धों की ओर

(ग) हिन्दू तीर्थों की तरफ (घ) मक्का की ओर

प्रश्न 24.कौन से गुरू वेई नदी में प्रवेश करके लुप्त हो गए थे?

(क) गुरू गोबिन्द सिंह जी (ख) गुरू नानक देव जी

(ग) गुरू अर्जुन देव जी (घ) गुरू अमरदास जी

प्रश्न 25. सुमेरू पर्वत पर गुरू नानक देव जी की मुलाकात किन से हुई?

(क) सिद्धों से (ख) योगियों से
(ग) नाथों से (घ) पण्डितों से

प्रश्न 26. गुरू नानक देव जी ने कौन सा नगर बसाया था?

(क) गोइंदवाल (ख) अमृतसर
(ग) करतारपुर (घ) तरनतारन

प्रश्न 27.गुरू नानक देव जी की बाणी कितने रागों में है?

(क) 31 (ख) 19
(ग) 22 (घ) 21

प्रश्न 28.गुरू नानक देव जी ने गुरूगद्दी किसे सौंपी?

(क) श्री चंद जी को (ख) भाई गुरदास जी को
(ग) बाबा बुड्ढा जी को (घ) भाई लहणा जी को

प्रश्न 29.गुरू नानक देव जी कहां खेतीबाड़ी की ?

(क) सुलतानपुर लोधी में (ख) करतारपुर साहिब में
(ग) बटाला में (घ) ननकाणा साहिब में

प्रश्न 30.गुरू नानक देव जी कब ज्योति जोत समाए?

(क) 1469 ई. (ख) 1569 ई.
(ग) 1539 ई. (घ) 1529 ई.

उत्तरमाला

उत्तरः— 1.(क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग) 6. (क) 7. (घ) 8 (ग) 9. (ख) 10. (क) 11. (ग) 12. (क) 13 (क) 14. (घ) 15. (ख) 16 (क) 17. (ग) 18. (घ) 19. (घ) 20. (क) 21. (क) 22. (घ) 23. (क) 24. (ख) 25.(क) 26. (ग) 27. (ख) 28. (घ) 29. (ख) 30. (ग)

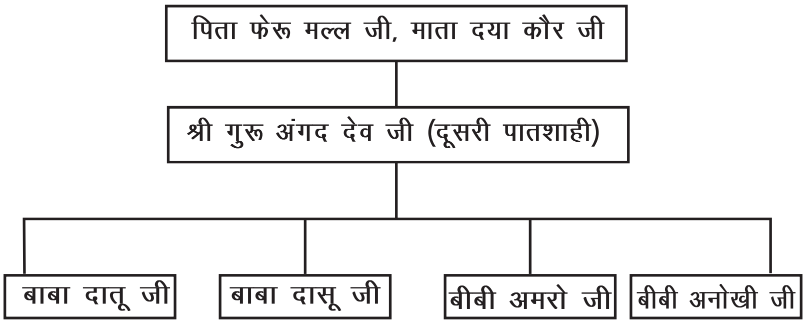
पिता फेरू मल्ल जी, माता दया कौर जी
श्री गुरू अंगद देव जी (दूसरी पातशाही)
बाबा दातू जी
बाबा दासू जी
बीबी अमरो जी
बीबी अनोखी जी

श्री गुरू अंगद देव जी

जन्म

गुरु अंगद देव जी सिक्खों के दूसरे गुरु थे। आप का प्रकाश 18 अप्रैल, 1504 ई. को फिरोजपुर ज़िला के गांव 'मत्ते की सराय' में हुआ

माता – पिता

गुरु अंगद देव जी की माता दया कौर जी और उनके पिता बाबा फेरू मल्ल जी थे। गुरु अंगद देव जी के बचपन का नाम 'लहणा' था। बाबा फेरू मल्ल जी दुकानदार थे। वह गांव के चौधरी तखतूमल्ल और फिरोजपुर के स्थानीय पठान हकीम का हिसाब किताब संभालते थे। किन्तु बाबर के भारत पर आक्रमण करने पर गांव 'मत्ते दी सराय' (सराय नामगा) ध्वंस हो गया। बाबा फेरू मल्ल जी अपने परिवार सहित पहले हरिके पत्तण, फिर ग्राम संघर और फिर खडूर साहिब आए। बाबा फेरू मल्ल जी देवी के भक्त थे और हर साल भक्तों के समूह के साथ देवी–दर्शनों के लिए जाते थे। घर के धार्मिक माहौल का प्रभाव उनके बेटे भाई लहणा जी पर भी पड़ा।

विवाह

गुरु अंगद देव जी का विवाह माता खिवी जी से हुआ और आपके घर दो पुत्र बाबा दासू और दत्तू जी और दो पुत्रियां बीबी अमरो और बीबी

अनोखी पैदा हुईं।

गुरु नानक देव जी से मुलाकात

खडूर के सभी निवासी ज्वाला माता के पुजारी थे और नियमित रूप से वहां जाते थे। अपने पिता की मृत्यु के बाद, लहणा जी देवी भक्तों के समूह को नियम से ज्वाला देवी लेकर जाने लगे। गुरु नानक देव जी के सिक्ख भाई जोध जी खडूर साहिब में रहते थे और नित्य गुरु नानक जी की बाणी का पाठ करते थे। उनसे बाणी सुनकर लहणा जी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने करतारपुर जाने और गुरु नानक देव जी के दर्शन करने का फैसला किया। 1532 ईस्वी में, भाई लहणा देवी के दर्शन करने के लिए जाते समय करतारपुर में रुक गए। अपने साथियों को बताकर घोड़ी पर सवार होकर गुरू नानक देव जी के दर्शनों के लिए करतारपुर चल दिए। रास्ते में एक व्यक्ति मिला, लहणा जी ने उससे गुरु नानक देव जी की धर्मशाला का रास्ता पूछा। गुरू जी लहणा जी की घोड़ी के आगे पैदल चलते हुए उन्हें ले आए और पीछे जाकर गद्दी पर बैठ गए। यह देखकर भाई लहणा जी बहुत पछताए क्योंकि वे घोड़े पर सवार रहे और गुरू नानक देव जी पैदल आए थे। गुरु जी ने लहणा जी से पूछा, भाई, तुम्हारा नाम क्या है? लहणा जी ने उत्तर दिया, "मेरा नाम लहणा है और मैं गाँव के लोगों का समूह देवी के दर्शनों के लिए लेकर जा रहा हूँ।" गुरु जी ने कहा, "भाई लहणा, आपको लेना है और हमें देना है।" इस संसार के देवी–देवता जिससे लेकर देते हैं, उसकी ही सेवा करनी है।" लहणा जी ने गुरु नानक देव जी के वचन सुनकर मन से देवी के दर्शन का विचार त्याग दिया। उन्होंने साथ आए समूह से कहा कि मुझे देवी के पास जाने की जरूरत नहीं है। मुझे जो चाहिए था वो मिल गया। वे खडूर साहिब लौट आए।

गुरूगद्दी की परीक्षाएँ

भाई लहणा जी गुरु नानक देव जी की दृष्टि में परिपक्वता प्राप्त कर चुके थे, किन्तु वे अपने पुत्रों और अन्य सिक्खों को विश्वास दिलाना चाहते थे कि योग्यता के आधार पर केवल लहणा जी ही उनके उत्तराधिकारी बनने में सक्षम है। इस बात को सिद्ध करने के लिए नानक जी उनकी परीक्षाएँ लेते रहते, जिसमें बाबा श्रीचंद जी, बाबा लखमी दास जी और अन्य सिक्ख पीछे रह जाते थे और लहणा जी प्रत्येक परीक्षा में हमेशा उत्तीर्ण होते थे।

सिक्ख परंपरा के अनुसार गुरु साहिब द्वारा ली गई प्रमुख परीक्षाएँ—

1. एक बिल्ली, आधी चबायी चुहिया को, सड़क पर फेंक गई। गुरु नानक जी ने अपने बड़े बेटे श्री चंद को चुहिया को उठाकर फेंकने का आदेश दिया, लेकिन उसने गुरु जी के आदेश की अवज्ञा की। उसके बाद गुरु जी ने अपने छोटे बेटे लखमी दास से कहा कि इस चुहिया को फेंक दो और उन्होंने कहा कि मैं किसी और से उठवा देता हूँ। फिर गुरु साहिब ने भाई लहणा जी को चुहिया फेंकने के लिए कहा। उन्होंने तुरंत गुरु साहिब का हुक्म स्वीकार कर आधी चबायी चुहिया को फेंक दिया।

2. एक बार आधी रात को गुरु जी ने श्री चंद से कहा कि चादर धोकर ले आओ लेकिन उन्होंने अपनी असमर्थता दिखाई। लखमीदास ने भी मना कर दिया। लहणा जी ने तुरंत चादर उठाई और कुछ देर बाद ही धोकर और सुखा कर ले आए।

3. एक बार शीत ऋतु में भारी वर्षा के कारण डेरे की एक दीवार का कुछ भाग ढह गया। गुरु जी ने कहा कि दीवार के टूटे हुए हिस्से को तुरंत बनाया जाए। बाबा श्रीचंद जी और बाबा लखमी दास जी ने कहा कि वे सवेरे राज मिस्त्री को बुलाकर ठीक करवा देंगे। गुरु जी के कहने पर किसी सिक्ख ने भी उठने और काम शुरू करने की हिम्मत नहीं की, तब गुरु जी ने भाई लहणा जी को दीवार बनाने के लिए कहा। भाई लहणा जी सतनाम कहकर उठे और दीवार बनाने लगे। सुबह तक लहणा जी ने अकेले ही दीवार का काफी हिस्सा बना दिया। गुरु जी ने कहा कि दीवार ठीक नहीं बनी। लहना जी ने उस हिस्से को तोड़कर फिर से बनाना शुरू किया। बाबा श्री चंद जी और बाबा लखमी दास जी ने लहणा जी से कहा कि तुम मूर्ख हो जो यह व्यर्थ के काम कर रहे हो, लेकिन लहणा जी ने हाथ जोड़कर कहा, "सेवक का काम है हुक्म का पालन करना।"

4. एक बार गुरु जी स्नान करके लौट रहे थे। गुरु जी के हाथ से एक कटोरा कीचड़ भरे गड्ढे में गिर गया। गुरु जी ने बारी बारी दोनों साहिबजादों को कटोरा निकालने के लिए कहा लेकिन दोनों ने कीचड़ में जाने से इंकार कर दिया तब गुरू जी ने लहणा जी की ओर देखा तो वे तुरंत ही कपड़ों सहित कीचड़ में उतर गए और कटोरा ले आए।

5. एक बार गुरु जी ने एक वृक्ष की ओर संकेत करते हुए अपने

साहिबजादों से कहा कि वृक्ष पर चढ़कर इसे हिलाओ तब मिठाई गिरेगी। बाबा श्रीचंद जी और बाबा लखमी दास जी ने गुरू जी का हुक्म नहीं माना। गुरु जी ने जैसे ही लहणा जी की ओर इशारा किया तो वे तत्काल वृक्ष पर चढ़ गए। गुरू जी के पुत्रों ने भाई लहणा जी से कहा कि वृक्षों पर मिठाई नहीं लगती। लहणा जी ने उत्तर दिया, "सेवक का काम तो हुक्म मानना है, हुक्म के बारे में कोई किन्तु, परन्तु नहीं।"

6. एक बार की बात है, गुरु जी ने जंगली लोगों की तरह फटे पुराने और मैले कपड़े पहने, कमर में चाकू बांधा, कुत्तों को पीछे लगाया और भयावह रूप धारण कर जंगल की ओर चल पड़े। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शिकार करने जा रहे हों। कई सिक्ख तो गुरू जी का भयावह रूप देख कर भाग गए, अन्य सिक्ख पीछे चल रहे थे। चलते–चलते आगे पैसे बिखरे देखकर कई लोग पैसे उठाकर वापस चले गए। कुछ आगे जाने पर कुछ लोग चांदी के सिक्के लेकर लौट गए कुछ और सिक्खों ने आगे सोने की मुहरें देखी तो उठाकर वापिस मुड़ गए। अब गुरू जी के साथ लहणा जी और दो सिक्ख रह गए। आगे जाकर देखा कि एक शव पड़ा है जो सफेद चादर से ढका हुआ था। गुरु जी ने उस शव के पास खड़े होकर कहा, ''इस शव को खाओ। बाबा बुड्ढा जी और भाई दूनी चंद पीछे हो गए। लहणा जी ने तुरंत पूछा, हुजूर, किस ओर से खाना शुरू करूँ? पैरों की ओर से या सिर की ओर से? गुरु जी ने कहा, बीच में से। लहणा जी ने चादर खींची तो देखा कि नीचे कड़ाह प्रसाद था। गुरु जी ने लहणा जी से पूछा, जब सभी वापस चले गए तो तुम क्यों नहीं गए? लहणा जी ने कहा, सच्चे पातशाह जी सबका कोई न कोई ठिकाना है, परन्तु आपके बिना मेरा कोई ठिकाना नहीं, कोई स्थान नहीं। यह सुनकर गुरू जी बहुत खुश हुए।

इस प्रकार भाई लहणा जी ने गुरु जी के हुक्म का पालन करते हुए निस्वार्थ सेवा, किरत और नाम जपने की भावना, अपने प्रेमपूर्ण और मधुर स्वभाव और गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव रखते हुए सभी परीक्षाओं को पास किया। गुरु जी ने लहणा जी को गले लगाया और कहा, आज से आप मेरा ही अंग बन गए हो। यह कहकर लहणा जी का नाम अंगददेव रख दिया।

संदेशः उपरोक्त परीक्षाओं में निहित संदेश हमारे सामने 'हुक्म के संकल्प' को स्वरूप प्रदान करता है अर्थात् गुरु हुक्म को मानना ही सबसे बड़ा कर्म है।

गुरूगद्दी की प्राप्ति

इस प्रकार भाई लहणा जी सात वर्ष (1532–1539) श्री गुरु नानक देव जी और संगत की पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव सेवा करते रहे। निस्वार्थ सेवा करते हुए आप श्री गुरु नानक साहिब जी का ही रूप बन गए। ज्योति जोत समा जाने से पहले, गुरु नानक देव जी ने अपनी ज्योति भाई लहणा में रखकर उन्हें अपने स्थान पर गुरु अंगद देव जी के रूप में विराजमान किया।

अमरदास जी को गुरुगद्दी देना

बासरके गांव के अमरदास जी, गुरू अंगद देव जी पुत्री बीबी अमरो के ससुर जी के भाई थे। बीबी अमरो के मुख से गुरबाणी सुनकर उनके मन में गुरू जी से मिलने की इच्छा जागी। जब वे गुरू अंगद देव जी से मिले तो उन्हें लगा जैसे उन्हें सब कुछ मिल गया है। अमरदास जी ने वृद्ध अवस्था में गुरू अंगद देव जी पूर्ण लगन और निष्ठा से सेवा की। गुरू नानक देव जी की तरह ही गुरू अंगद देव जी ने अपने पुत्रों दातू और दासू जी की जगह अपने सेवक सिक्ख अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी चुना। उन्होंने कहा कि गुरियाई विनम्रता, भक्ति और सेवा का फल है और अमरदास जी ने अपनी अटूट भक्ति और आस्था के परिणामस्वरूप गुरुगद्दी प्राप्त की है। उन्होंने गुरू अमरदास जी को गोइंदवाल जाकर रहने का हुक्म दिया और वहां रहते हुए अपने उपदेश और शिक्षा द्वारा लोगों का उद्धार करें। यह कहकर गुरू अंगददेव जी ने मर्यादा पूर्वक गुरूगद्दी गुरू अमरदास जी को सौंप दीं।

ज्योति जोत समा जाना

गुरू अमरदास जी को गुरूगद्दी सौंप कर 1552 ई. में 48 वर्ष की आयु में गुरू अंगद देव जी खडूर साहिब में ज्योति जोत समा गए।

गुरु जी द्वारा किए गए विशेष कार्यः

गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित सिद्धांतों के अनुसार, गुरु अंगद देव जी द्वारा किए गए प्रमुख कार्य इस प्रकार हैंः

1. खडूर साहिब प्रचार केन्द्र स्थापित करना

श्री गुरू अंगद देव जी ने खडूर साहिब को सिक्खी प्रचार का केन्द्र स्थापित किया। खडूर साहिब में रहते हुए आपने गुरू नानक देव

जी द्वारा चलाई परम्परा संगत–पंगत, शब्द–कीर्तन और शब्द–विचार को ओर भी दृढ़ता प्रदान की। आप नित्य प्रति संगत को गुरू नानक देव जी की बाणी का उपदेश देते और जीवन में सदगुणों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करते। खडूर साहिब में आई संगतों की देखभाल और उनकी सुख–सुविधाओं का ध्यान आपकी पत्नी माता खीवी जी रखते थे।

2. गुरमुखी लिपि के प्रचार–प्रसार हेतु कार्य किए

श्री गुरू अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि के प्रचार के लिए बहुत काम किया। आपने पंजाबी के 35 अक्षरों को क्रमबद्ध करके वर्णमाला तैयार करवाई। गुरमुखी को आकार दिया, बच्चों के लिए बाल–बोध तैयार करवाए और खडूर साहिब में पंजाबी विद्यालय स्थापित किया। आप दिन का अधिकतर समय बच्चों के साथ व्यतीत करते थे।

3. अखाड़े स्थापित करवाए

आप ने प्रभु–भक्ति और नाम–सिमरन के साथ–साथ शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए अखाड़े भी स्थापित किए। परिणामतः कुछ समय में ही सिक्ख साहसी, शस्त्रधारी और निर्भीक योद्धा बन गए।

4. बाणी एकत्रित करना

आपने गुरू नानक देव जी की बाणी एकत्रित और लिपिबद्ध करवाकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के संपादन का पहला कदम उठाया।

5. लंगर

लंगर, जिसे गुरू नानक देव जी ने 20 रुपयों के साथ सच्चे सौदे के रूप में शुरू किया था, उस लंगर–पंगत की प्रथा को आपने आगे बढ़ाया और दिन–रात लंगर चलते रहने की प्रथा जारी रखी। गुरू साहिब ने अपनी सुपत्नी खीवी जो को गुरू के लंगर मुखिया नियुक्त किया।

6. बाणी रचना

श्री गुरू नानक देव जी की विचारधारा का प्रभाव श्री गुरू अंगद देव जी की बाणी पर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आपकी कुल बाणी केवल 63 सलोक ही हैं, जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की 22 वारों में से दस वारों में दर्ज हैं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू अंगद देव जी का पहला नाम क्या था?

(क)	जेठा	(ख)	लहणा
(ग)	गोपाला	(घ)	अंगद

प्रश्न 2. श्री गुरू अंगद देव जी की माता जी का क्या नाम था?

(क)	माता दया कौर जी	(ख)	माता अमर कौर जी
(ग)	माता कृष्ण कौर जी	(घ)	माता निहाल कौर जी

प्रश्न 3. गुरू अंगद देव जी के पिता जी का क्या नाम था?

(क)	बाबा सूरज मल्ल जी	(ख)	बाबा फेरू मल्ल जी
(ग)	गुरू नानक देव जी	(घ)	बाबा हरिदास जी

प्रश्न 4. श्री गुरू अंगद देव जी की सुपत्नी का क्या नाम था?

(क)	माता सुलखणी जी	(ख)	माता दया जी
(ग)	माता गुजरी जी	(घ)	माता खीवी जी

प्रश्न 5. गुरू अंगद देव जी के कितने बच्चे थे?

(क)	छह	(ख)	तीन
(ग)	दो	(घ)	चार

प्रश्न 6. श्री गुरू अंगद देव जी के पुत्र कितने थे?

(क)	4	(ख)	3
(ग)	2	(घ)	5

प्रश्न 7. लहणा जी किस देवी के दर्शन करने जाते थे?

(क)	नैना देवी	(ख)	ज्वाला देवी
(ग)	सती देवी	(घ)	माता गंगा

प्रश्न 8. श्री गुरू अंगद देव जी ने लंगर की जिम्मेवारी किसे सौंपी?

(क)	बीबी अमरो जी	(ख)	माता खीवी जी
(ग)	बीबी अनोखी जी	(घ)	बीबी भानी जी

प्रश्न 9. श्री गुरू नानक देव जी गुरू अंगद देव जी से कहां मिले थे ?

(क) करतारपुर साहिब (ख) अमृतसर साहिब

(ग) आनन्दपुर साहिब (घ) कीरतपुर साहिब

प्रश्न 10.गुरुगद्दी मिलने से पहले गुरू अंगद देव जी ने कितने समय तक श्री गुरू नानक जी की सेवा की ?

(क) 5 वर्ष (ख) 2 वर्ष

(ग) 7 वर्ष (घ) 25 वर्ष

प्रश्न 11.गुरू अंगद देव जी ने किस नगर को सिक्खी का प्रचार केन्द्र बनाया?

(क) खडूर साहिब (ख) गोइंदवाल साहिब

(ग) तरनतारन (घ) करतारपुर साहिब

प्रश्न 12.श्री गुरू अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि में सुधार करके क्या तैयार किया?

(क) बच्चों के लिए बाल–बोध (ख) नयी भाषा

(ग) नयी लिपि (घ) पुस्तक

प्रश्न 13.श्री गुरू नानक देव जी के कहने पर वृक्ष पर कौन चढ़ गया?

(क) बाबा श्री चंद जी (ख) बाबा लखमी दास जी

(ग) बाबा बुड्ढा जी (घ) भाई लहणा जी

प्रश्न 14.गुरू नानक देव जी ने सबसे पहले किसे मरी हुई चुहिया को उठाने के लिए कहा ?

(क) भाई लहणा जी को (ख) बाबा लखमी दास जी को

(ग) भाई मरदाना जी को (घ) बाबा श्री चंद जी को

प्रश्न 15.श्री गुरू अंगद देव जी के कुल कितने सलोक हैं?

(क) 60 सलोक (ख) 40 सलोक

(ग) 53 सलोक (घ) 63 सलोक

प्रश्न 16.गुरू अंगद देव जी को गुरूगद्दी कब मिली?

(क) 1539 ई. (ख) 1704 ई.

(ग) 1469 ई. (घ) 1569 ई.

प्रश्न 17.ज्योति जोत समाते समय गुरू अंगद देव जी की आयु कितनी थी ?

(क) 50 वर्ष (ख) 48 वर्ष

(ग) 58 वर्ष (घ) 65 वर्ष

प्रश्न 18. सिक्ख धर्म दूसरे गुरू कौन हैं?

(क) श्री गुरू हरिकृष्ण जी (ख) श्री गुरू हरिराय जी

(ग) श्री गुरू अंगद देव जी (घ) श्री गुरू हरिगोबिन्द सिंह जी

प्रश्न 19. गुरू अंगद देव जी कहां ज्योति जोत समाए?

(क) करतारपुर साहिब (ख) आनन्दपुर साहिब

(ग) खडूर साहिब (घ) तरनतारन साहिब

प्रश्न 20. श्री गुरू अंगद देव जी कब ज्योति जोत समाए?

(क) 1553 ई. (ख) 1551 ई.

(ग) 1552 ई. (घ) 1550 ई.

उत्तरमाला

उत्तरः— 1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5 (घ) 6. (ग) 7. (ख) 8 (ख) 9. (क) 10. (ग) 11. (क) 12. (क) 13. (घ) 14. (घ) 15. (घ) 16 (क) 17. (ख) 18. (ग) 19. (ग) 20. (ग)

श्री गुरू अमरदास जी से श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी

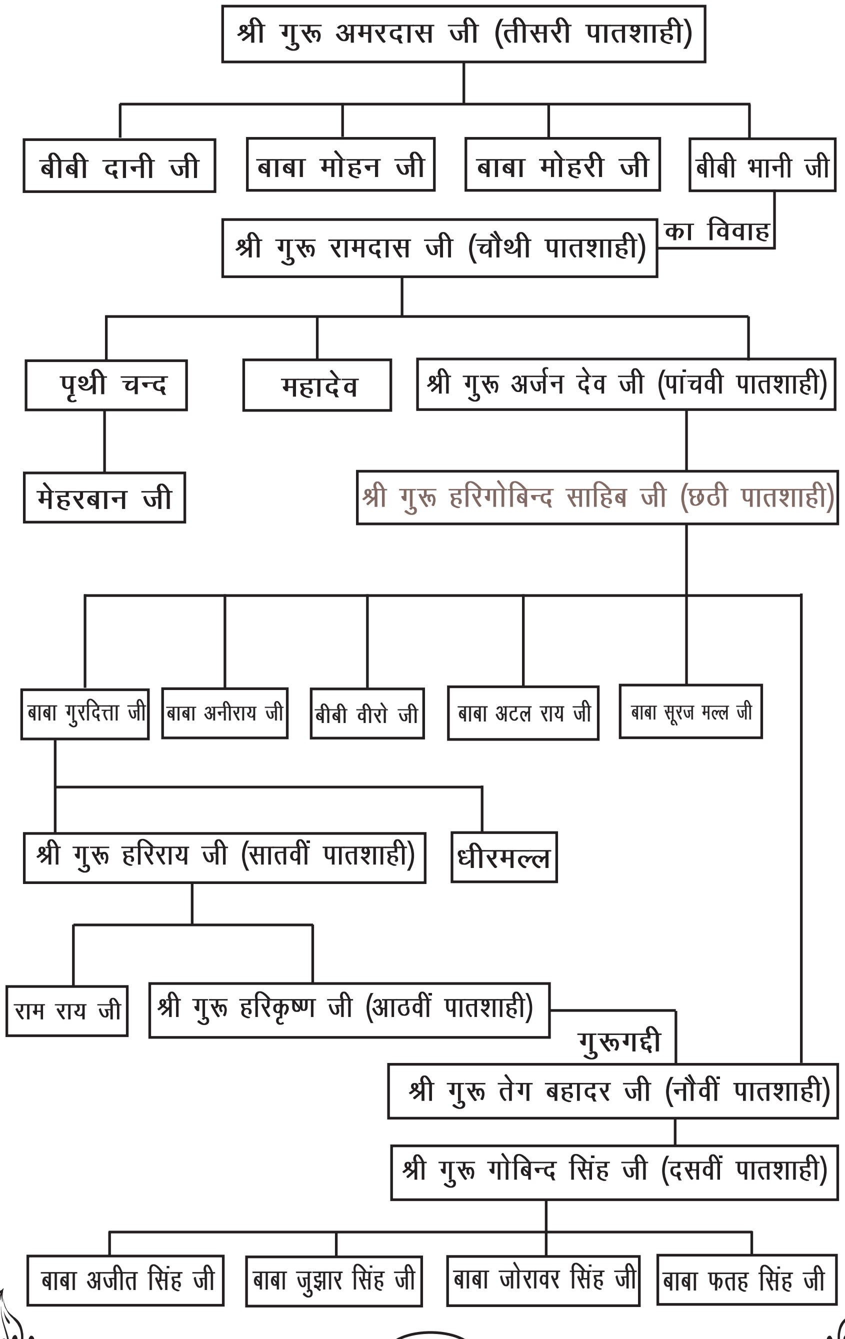

श्री गुरू अमरदास जी

जन्म

सिक्खों के तीसरे गुरू श्री गुरू अमरदास जी हैं। गुरू अमरदास जी का प्रकाश ज़िला, अमृतसर, गाँव बासरके में 5 मई 1479 ई. को हुआ।

माता–पिता

आपके पिता जी का नाम श्री तेजभान और माता जी का नाम बीबी लक्ष्मी था। आपके पिता जी खेती और व्यापार का कार्य करते थे।

विवाह

24 वर्ष की आयु में आप का विवाह सणखतरे गाँव के निवासी श्री देवी चन्द की सुपुत्री बीबी राम कौर जी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी तथा दो पुत्रियां बीबी भानी और बीबी दानी जी थीं।

गुरू की प्रबल इच्छा और गुरू की तलाश

लगभग बीस वर्ष तक आप गंगा स्नान के लिए जाते रहे, किन्तु आत्मिक तृप्ति नहीं हुई। गुरू अंगद देव की पुत्री अमरो का विवाह बाबा अमरदास जी के भतीजे जस्सू जी के साथ कुछ समय पहले ही हुआ था। बीबी अमरो भक्ति भाव से पूर्ण अति श्रद्धालु स्त्री थी। एक बार आपने अमृत वेला में बीबी अमरो की मधुर आवाज़ में बाणी सुनी तो अपनी भाषा

में परमेश्वर का गुणगान सुनकर बाणी रचयिता को मिलने की तीव्र इच्छा जाग गई और आप गुरू अंगद देव जी के दर्शन करने की इच्छा से खडूर साहिब पहुंच गए। समधि के आने का समाचार सुनते ही गुरू जी आपके सम्मान में उठ खड़े हुए किन्तु आप उनके चरणों में झुक गए और प्रभु प्रेम का दान मांगा। मन शान्त हो गया और आपने वहीं रहने का निर्णय लिया। इस समय आपकी आयु 62 वर्ष थी।

दिन में आप लंगर की सेवा करते और लंगर के लिए प्रतिदिन जंगल से लकड़ियां भी काटकर लाते। उस समय घरों में नलके आदि नहीं होते थे। आवश्यकता अनुसार पानी कुओं और दरियाओं से घड़ों तथा गागरों में भर कर लाया जाता था। अमरदास जी आधी रात में उठकर खडूर साहिब से कुछ मील की दूरी पर बहते ब्यास दरिया से गागर में पानी लेकर आते और गुरू अंगद देव जी को अमृत वेला में स्नान करवाते। क्योंकि उस समय आपकी आयु अधिक थी इस कारण भरी हुई गागर सिर पर उठाना सहज कार्य नहीं था।

निथाविआं का स्थान

इतिहास में वर्णित है कि एक बार सर्दियों की बारिश भरी अंधेरी रात में आप गागर उठाए आ रहे थे कि अचानक जुलाहे की कील से ठोकर खाकर गिर गए किन्तु गागर को गिरने नहीं दिया। गिरने की आवाज़ सुनकर जुलाहे ने पत्नी से कहा लगता है कि कोई गड्ढे में गिर गया है। पत्नी ने कहा 'होगा अमरू निथावां। न दिन को चैन न रात को। घर–घाट छोड़ कर आया हुआ पेट की खातिर गुरू जी का पानी भरता है।' गुरू अमरदास जी ने कहा, "जिसे दुनिया के गुरू की शरण मिल गई हो वह निथावा क्यों? मेरा स्थान है गुरू आप' उस समय आपकी आयु 73 वर्ष थी।

गुरूगद्दी

यह बात गुरू अंगद देव जी तक पहुंची। गुरू अंगद देव जी तो पहले ही अमरदास जी की सेवा और मेहनत, गुरू वचनों के प्रति दृढ़ता, लोगों के उलाहनों से बेपरवाह और शान्त स्वभाव से प्रभावित होकर फैसला ले चुके थे कि आप ही गुरूगद्दी संभालने के योग्य हैं और आपने बाबा अमरदास जी को गुरू अमरदास बनाने का निश्चय किया। 1552 ई.

को गुरू अंगद देव जी ने गुरूगद्दी की सारी जिम्मेवारी बाबा अमरदास जी को सौंप कर वचन कहे कि गुरू अमरदास जी निथाविआं का स्थान और निआसरो का आसरा हैं।

प्रचार केन्द्र नगर गोइंदवाल

गुरूगद्दी की सारी जिम्मेवारी गुरू अमरदास जी ने संभाल ली और गुरू अंगद देव जी के हुक्म से बसाए नगर गोइंदवाल को आप ने प्रचार केन्द्र बना लिया। संगत की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

दातू जी और दासू जी द्वारा गुरूगद्दी के लिए विद्रोह

गुरू जी का सम्मान और सत्कार देखकर दातू जी के मन ईर्ष्या पैदा हो गई। बेशक संगत ने अंगददेव जी के हुक्म अनुसार बाबा अमरदास जी को गुरू मान लिया था किन्तु गुरू जी के पुत्र दातू और दासू जी का मन यह स्वीकार न कर सका कि गुरू घर का सेवक ही गुरू बन जाए। माता खीवी जी ने उन्हें समझाया कि उनके द्वारा पिता के हुक्म का उल्लंघन करने के कारण ही ऐसा हुआ है। माता जी के समझाने पर दासू जी गोइंदवाल गए, गुरू अमरदास जी से क्षमा मांगी और फिर कभी विपरीत विचार मन में नहीं आने दिया।

किन्तु दातू जी के मन में गुरूगद्दी की लालसा बनी रही। वे अपने कुछ समर्थकों को लेकर गोइंदवाल आए और गुरू जी को बुरा–भला कहने लगे। परन्तु गुरू जी शान्त रहे, यह देखकर क्रोधित दातू ने भरे दीवान में गुरू जी पर टांग से प्रहार किया। गुरू अमरदास जी ने स्वयं को संभाला और दातू के पांव दबाते हुए कहा कि बुढ़ापे में उनकी हड्डियां सख्त हो गई हैं, कहीं आपको चोट तो नहीं लगी। नाज़ुक परिस्थितियों को देखते हुए गुरू जी गोइंदवाल छोड़कर बासरके चले गए और गांव से बाहर किसी कमरे में ठहरे किन्तु किसी को अपने आने खबर नहीं दी। इस तरह गुरू जी दातू जी को गुरू बनने का पूर्ण अवसर दिया किन्तु संगत ने दातू जी को स्वीकार नहीं किया। शर्मिन्दा हुए दातू जी वापस खडूर साहिब चले गए।

गुरूद्वारा सन्ह साहिब

इधर संगत गुरू जी के दर्शनों के लिए व्याकुल हो रही थी। किसी को कुछ पता नहीं लग रहा था कि गुरू जी कहां चले गए। आखिर

गुरू जी को खोजते खोजते बाबा बुड्ढा जी संगत के साथ बासरके पहुंच गए। गुरू जी जिस घोड़ी पर सवारी करते थे, बाबा बुड्ढा जी ने उसे खुली छोड़ दिया और उसके पीछे–पीछे चलने लगे। घोड़ी वहीं जाकर रूकी जहां गुरू अमरदास जी ठहरे हुए थे। जैसे ही वे दरवाजे के पास गए तो दरवाजे पर लिखा हुक्म पढ़कर संगत कांप उठी। लिखा था, "जो कोई यहां आकर दरवाज़ा खोलेगा, वह हमारा सिक्ख नहीं होगा और हम उसके गुरू नहीं रहेंगे।" सभी सोचने लगे कि अब क्या किया जाए। तभी बाबा बुडढा जी के मन में एक विचार आया। उन्होंने दरवाज़ा तो नहीं खोला किन्तु पिछली तरफ की दीवार पर सेंध (बड़ा सुराख करना) लगाकर अन्दर चले गए और गुरू जी के समक्ष नतमस्तक होते हुए संगत को दर्शन देने के लिए प्रार्थना की, साथ ही कहा, "यदि कोई भूल हो गई हो तो बख्शिश करनी। आपके हुक्म की अवहेलना नहीं की सच्चे पातशाह। देख लीजिए दरवाज़ा उसी तरह बंद है।" गुरू जी मुस्कुराए और बाबा बुड्ढा जी के प्रेम और समझ की प्रशंसा की। वर्तमान में इस स्थान पर गुरूद्वारा सन्ह साहिब है। इस प्रकार संगत गुरू जी को वापस गोइंदवाल ले आई और गुरू जी ने गुरूगद्दी की जिम्मेवारियों को पुनः संभाल लिया।

बाऊली का निर्माण

जब उच्च जाति के लोगों ने लंगर के लिए सांझे कुएं से पानी लेकर आ रहे सिक्खों के घड़े पत्थर मारकर तोड़ने शुरू कर दिए तब गुरू अमरदास जी ने शान्ति बनाए रखने के लिए पानी का अलग प्रबन्ध करने के उद्देश्य से ऐसी बाऊली का निर्माण करने का निर्णय लिया, जहां सभी को खुला पानी मिले, खुला स्नान हो सके और बंदगी के लिए शान्त वातावरण मिल सके। बाऊली की तैयारी में सिक्खों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। दूर–दूर से सिक्ख सेवा के लिए आए। बाबा बुड्ढा जी से सबसे पहले खुदाई करवाई गई। जेठा जी भी निष्काम भाव से सेवा करते रहे। बाऊली की 84 पऊड़ियों ने धीरे–धीरे सिक्खों के मन में यह विचार पैदा कर दिया कि यहां स्नान करने से मानव की 84 योनियों का चक्र खत्म हो जाता है। इस बाऊली का निर्माण 1559 ई. में हुआ था।

सामाजिक कार्य

गुरू अमरदास जी का मानना था कि वहम–भ्रम और अन्य सामाजिक बुराइयों में ग्रस्त समाज कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। अतः गुरू जी ने सभी सामाजिक कुरीतियों को मूल से उखाड़ने के प्रयास शुरू किए।

लंगर की प्रथा जो गुरू नानक देव जी के समय से ही जारी थी, उसका उपयोग सामाजिक सुधार के साधन रूप में करते हुए आपने सर्वप्रथम "पहले पंगत पाछै संगत" का नियम बनाया। कोई कितनी भी उच्च पदवी पर होता, सभी के लिए नियम का पालन जरूरी था। बादशाह अकबर को भी कोई छूट नहीं दी गई। इस प्रकार धीरे–धीरे ऐसे वातावरण की सृजना हुई, जिसने सामान्य लोगों के बीच दूरियां कम हुईं और सभी परस्पर भाईचारे की भावना से साथ रहने लगे। समाज में से छूत–छात और भेदभाव खत्म करने का यह पहला ठोस कदम था। गुरू नानक देव जी के संदेश अनुसार स्त्री जाति के साथ हो रहे भेदभाव को दूर करना आपका महत्त्वपूर्ण कदम था। तत्कालीन समय में मृत्यु के समय निभाई जाने वाली सभी रस्मों को छोड़कर केवल नाम–सिमरन और कीर्तन करने की परम्परा आपने चलाई।

भाई जेठा जी को दामाद बनाना

वैवाहिक सम्बन्ध तय करते समय केवल गुणों को ही आधार बनाने का उपदेश और इसे व्यावहारिक रूप देते हुए आपने स्वयं अपनी पुत्री भानी जी का विवाह, शहर में घुंगणीआ बेचकर अपना और अपनी नानी का पेट भरने वाले अनाथ भाई जेठा जी से कर दिया क्योंकि आप उनकी सेवा और लगन से बहुत प्रभावित थे।

22 मंजीआं, 52 पीहड़े की स्थापना

आपने सारे इलाके को 22 हिस्सों में विभाजित करके उन्हें मंजीओं का नाम दिया और आगे 52 उपभागों में विभाजित कर उन्हें 52 पीहड़ों की संज्ञा दी। प्रत्येक मंजी और पीहड़ा एक प्रबन्धक को सौंप कर सिक्खी के प्रचार–प्रसार की जिम्मेवारी दी। यह प्रचार केन्द्र हिन्दुस्तान से बाहर दूरस्थ द्वीपों में भी थे। महिलाओं को इन प्रचार केन्द्रों का मुखिया नियुक्त किया। विश्व इतिहास में यह पहला अवसर था जब महिलाओं को

यह जिम्मेवारी दी गई हो।

गुरू का चक्क

आपने भाई जेठा जी को सिक्खी का एक अन्य केन्द्र स्थापित करने के लिए हुक्म दिया, जिसका नाम 'गुरू का चक्क' रखा गया। बाद में इस शहर का नाम अमृतसर रखा गया जो सिक्खी का केन्द्रीय स्थान बना।

बाणी रचना

आपके द्वारा रचित बाणी में 172 शब्द, 91 अष्टपदियां और 20 छंत हैं, जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज हैं। इसके अतिरिक्त चार वारें भी श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित है, जिनकी पऊडियों की संख्या 84 है। वारों की पऊड़ियों के साथ दर्ज सलोकों की संख्या 343 है। वारा और वधीक में भी आपके 67 सलोक दर्ज हैं। इसके अतिरिक्त आपने अन्य बाणी की भी रचना की। राग आसा की बाणी 'पट्टी' में आप जी की 18 पऊड़ियां हैं। वडहंस राग में अलाहुणीआं के चार शब्द, बिलावल राग में वार सत, दस दस छन्द के दो शब्द, रामकली राग में आनन्द साहिब और मारू सोलहे में 24 शबद हैं। आपकी कुल बाणी 17 रागों में रचित है।

भाई जेठा जी को गुरूगद्दी सौंपना और ज्योति जोत समा जाना :

अपना अंतिम समय समीप अनुभव करते हुए गुरू अमरदास जी अपने दामाद भाई जेठा (गुरू रामदास) जी को गुरूगद्दी के योग्य जानकर, गुरूगद्दी की सेवा उन्हें सौंप कर 85 वर्ष की आयु में 1574 ई. को ज्योति–जोत समा गए।

विशेष कार्य:

1. गोइंदवाल नगर बसाया।
2. बाऊली का निर्माण करवाया।
3. जात–पात तथा ऊँच–नीच दूर करने के लिए 'पहले पंगत पाछै संगत' का नियम बनाया।
4. सती प्रथा का खण्डन किया।
5. धर्म प्रचार के लिए 22 मंजीओं और 52 पीहड़ों की स्थापना की।
6. मृतक संस्कार सम्बन्धी गुरू मर्यादा कायम की।
7. कई धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गुरू अमरदास जी का प्रकाश कब हुआ?

(क) 1475 ई. (ख) 1479 ई.

(ग) 1579 ई. (घ) 1570 ई.

प्रश्न 2. गुरू अमरदास जी के पिता जी का क्या नाम था ?

(क) सरूप दास (ख) तेजभान

(ग) हरजी दास (घ) भजन दास

प्रश्न 3. गुरू अमरदास जी किस नदी में स्नान करने के लिए जाते थे?

(क) गोमती (ख) गोदावरी

(ग) गंगा (घ) यमुना

प्रश्न 4. किस बीबी के मुख से बाणी सुनकर गुरू अमरदास जी के मन में गुरू मिलाप की इच्छा जागृत हुई?

(क) बीबी भानी जी (ख) बीबी अमरो जी

(ग) बीबी अनोखी जी (घ) बीबी दानी जी

प्रश्न 5. गुरू अमरदास जी को गुरूगद्दी किस आयु में प्राप्त हुई ?

(क) 73 वर्ष (ख) 50 वर्ष

(ग) 62 वर्ष (घ) 55 वर्ष

प्रश्न 6. गुरू अमरदास जी ने कौन सा नगर बसाया ?

(क) करतारपुर (ख) गोइंदवाल

(ग) खडूर साहिब (घ) फतहगढ़ साहिब

प्रश्न 7. गुरू अमरदास जी ने कितनी मंजिओं की स्थापना की?

(क) 12 (ख) 22

(ग) 10 (घ) 52

प्रश्न 8. गोइंदवाल साहिब में बाऊली का निर्माण किस गुरू ने करवाया था ?

(क) गुरू रामदास जी (ख) गुरू हरगोबिन्द जी

(ग) गुरू अर्जुन देव जी (घ) गुरू अमरदास जी

प्रश्न 9. बाऊली किस वर्ष बनकर तैयार हुई ?

(क) 1559 ई. (ख) 1569 ई.

(ग) 1573 ई. (घ) 1560 ई.

प्रश्न 10.लंगर प्रथा के नियम में गुरू अमरदास जी ने क्या परिवर्तन किए?

(क) पहले संगत फिर लंगर (ख) पहले पंगत फिर संगत

(ग) पहले संगत फिर पंगत (घ) कोई नहीं

प्रश्न 11.गुरू अमरदास जी द्वारा रचित बाणी कौन सी है?

(क) अलाहुणीआं (ख) जाप साहिब

(ग) जपु साहिब (घ) सुखमनी साहिब

प्रश्न 12.गुरू अमरदास जी ने कुल कितने रागों में बाणी की रचना की?

(क) 18 (ख) 22

(ग) 20 (घ) 17

प्रश्न 13. गुरू अमरदास जी के कितने बच्चे थे?

(क) चार (ख) एक

(ग) दो (घ) तीन

प्रश्न 14.गुरू अमरदास जी का जन्म कहां हुआ?

(क) करतारपुर (ख) बासरके

(ग) गोइंदवाल (घ) तरनतारन

प्रश्न 15.गुरू अमरदास जी की माता का क्या नाम था?

(क) बीबी मनसा देवी जी (ख) बीबी दानी जी

(ग) बीबी सुलखणी जी (घ) बीबी लक्ष्मी जी

प्रश्न 16. गुरू अमरदास जी की सुपत्नी का क्या नाम था?

(क) दया कौर जी (ख) वीर कौर जी

(ग) राम कौर जी (घ) चरन कौर जी

प्रश्न 17.गुरू अमरदास जी गुरू अंगद देव जी के स्नान हेतु किस दरिया से पानी लेकर आते थे?

(क) रावी दरिया (ख) सतलुज दरिया

(ग) जेहलम दरिया (घ) ब्यास दरिया

प्रश्न 18.मंजी प्रथा की स्थापना किस गुरू ने की?

(क) गुरू नानक देव जी (ख) गुरू अर्जुन देव जी

(ग) गुरू अमरदास जी (घ) गुरू तेग बहादर जी

प्रश्न 19.गुरू अमरदास जी कितनी आयु में ज्योति–जोत समाए?

(क) 72 वर्ष (ख) 50 वर्ष

(ग) 60 वर्ष (घ) 85 वर्ष

प्रश्न 20.गुरू अमरदास जी कब ज्योति–जोत समाए?

(क) 1469 ई. (ख) 1570 ई.

(ग) 1574 ई. (घ) 1608 ई.

उत्तरमाला

उत्तरः— 1.(ख) 2. (ख) 3.(ग) 4.(ख) 5. (क) 6.(ख) 7.(ख) 8. (घ) 9.(क) 10. (ख) 11. (क) 12. (घ) 13. (क) 14. (ख) 15. (घ) 16. (ग)17. (घ) 18. (ग) 19. (घ) 20. (ग)

श्री गुरू रामदास जी

जन्म

गुरू रामदास जी सिक्खों के चौथे गुरू हैं। आपका जन्म 24 सितम्बर 1534 ई. को चूना मण्डी लाहौर में हुआ।

माता–पिता

आपके पिता जी का नाम श्री हरिदास था। वे सोढी खत्री थे। आपकी माता जी का नाम दया कौर था। आपके बचपन का नाम भाई जेठा जी था, जिसका अर्थ है– सबसे पहले जन्म लेने वाला बच्चा या पुत्र।

बचपन

भाई जेठा जी बचपन से ही मधुर भाषी और धार्मिक प्रवृत्ति के मालिक थे। दया, विनम्रता, प्रेम तथा उदारता आदि आप के स्वभाव के विशेष गुण थे। आप जब दो वर्ष के हुए तो आपकी माता जी का देहान्त हो गया। आपके नाना जी ने बासरके से लाहौर आकर आपका पालन–पोषण किया। जब आप सात वर्ष के हुए तब आपके पिता जी का भी देहान्त हो गया। नाना जी आपको अपने साथ अपने गांव बासरके ले गए। जहां संगत के साथ आपको गुरू अमरदास जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

घुंगणीआं बेचना

ननिहाल में गरीबी होने के कारण भाई जेठा जी अल्पायु में ही किरत–कमाई करने लगे। जीवन निर्वाह के लिए आप चने की घुंगणीआं बनाकर बेचा करते थे। दानी स्वभाव के कारण आप कई बार गरीबों और साधु–फकीरों को मुफ्त घुंगणीआं दे देते थे।

गुरू अमरदास जी के साथ गोइंदवाल आना

1546 ई. में गुरू अंगद देव जी के हुक्म अनुसार जब गुरू अमरदास जी ने गोइंदवाल नगर बसाया तो वे आपके बहुत से रिश्तेदारों को गोइंदवाल ले आए। जेठा जी भी अपनी नानी सहित गोइंदवाल आकर रहने लगे। उस समय आपकी आयु 12 वर्ष थी। गोइंदवाल आकर भी घुंगणीआं बेचने का काम जारी रहा। आप बहुत ही प्रेम और निष्ठा से गुरू–संगत की सेवा करते। समय के साथ–साथ गुरू अमरदास जी के साथ आपकी समीपता बढ़ती गई।

बीबी भानी जी के साथ विवाह

गुरू अमरदास जी दो पुत्रियाँ थी, जिनमें से बीबी दानी जी का विवाह श्री रामा जी के साथ हुआ। एक दिन माता जी ने कहा कि बीबी भानी जी के लिए योग्य वर की तलाश करनी चाहिए। भाई जेठा जी को देखकर उन्होंने कहा कि बीबी भानी जी का वर इस काका जैसा होना चाहिए। गुरू जी ने उत्तर दिया इसके जैसा तो यह एक ही है। तब गुरु जी ने जात–पात और ननिहाल आदि की पड़ताल किए बगैर ही बहुत निर्धनता के बावजूद भी बीबी भानी जी की सगाई भाई जेठा जी से कर दी और 1553 ई. को बीबी भानी का विवाह भाई जेठा जी से हो गया। उस समय आपकी आयु 19 वर्ष थी। आपके यहां तीन पुत्रों पृथी चंद, महादेव तथा अर्जन देव जी ने जन्म लिया। विवाह के पश्चात् गुरू अमरदास जी ने (गुरू रामदास जी) भाई जेठा जी को अपने बड़े दामाद रामा जी की तरह ही अपने घर में रख लिया। आप निष्ठा से गुरू जी की और संगत की सेवा करते। बेशक रिश्ते में आप गुरू अमरदास जी के दामाद थे किन्तु आप सभी सांसारिक रिश्ते भूल कर गुरू जी का निमाणा सिक्ख बनकर उनकी सेवा करते रहे। गुरू अमरदास जी भाई जेठा जी की सेवा भावना और निष्ठा देखकर बहुत खुश रहते। वे उन्हें रामदास कहकर ही बुलाते थे। इस तरह भाई जेठा जी का नाम ही रामदास हो गया।

गुरूगद्दी के लिए परीक्षाएँ

एक बार गुरू अमरदास जी ने अपने बड़े दामाद भाई रामा जी और छोटे दामाद भाई जेठा जी से कहा कि "मैं चबूतरे पर बैठकर बाऊली साहिब की सेवा देखना चाहता हूँ, आप दोनों अलग अलग स्थानों पर दो चबूतरे बना दो। यह सिक्खी सिदक, सेवा भावना और हुक्म मानने की बहुत बड़ी परीक्षा थी। गुरू साहिब ने दोनों को बार–बार चबूतरे तोड़ने और बनाने का आदेश दिया। यह परीक्षा पांच–छह दिन चलती रही। भाई जेठा जी (रामदास) जी श्रद्धा, गुरू प्रेम, सिदक और आज्ञाकारी व्यक्तित्व के स्वामी होने के कारण इस परीक्षा में पूर्णतः सफल हुए। इस प्रकार गुरूगद्दी की बख्शिश भाई जेठा जी को हुई। बाबा बुड्ढा जी ने भाई जेठा जी को तिलक लगाया।

चक्क रामदास

जैसे गुरू अमरदास जी ने खडूर साहिब छोड़कर गोइंदवाल नगर बसाया था, उसी प्रकार उन्होंने रामदास जी को हुक्म दिया कि वह बाबा बुड्ढा जी के सहयोग से नए नगर की स्थापना करें। गुरू अमरदास जी ने स्थान की निशानदेही करते बताया कि यह स्थान तुंग गांव से पहले गिलवटी से परे, सुलतानपुर से पश्चिम की ओर है। गुरू रामदास जी ने गुरू अमरदास जी द्वारा बताए निशान को ढूंढकर सरोवर बनाने की निशानदेही कर और संतोखसर से कुछ दूरी पर एक गांव की नींव रखी। इस नगर का नाम आपने (गुरू का चक्क) रखा। बाद में इसका नाम (रामदास पुरा या चक्क रामदास) हो गया। इस काम के लिए 52 कारीगरों, जिनमें हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान शामिल थे, को बुलाया गया।

गुरू का महल

आपने अपने निवास के लिए एक मकान बनवाया, जिसका नाम 'गुरू का महल' प्रसिद्ध हुआ। लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बाज़ार बनवाया, जिसका नाम 'गुरू का बाज़ार' प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान में भी यह बाज़ार इसी नाम से प्रसिद्ध है।

अमृतसर साहिब

उसी वर्ष 1577 ई. को गुरू रामदास जी ने दुख भंजनी बेरी वाले स्थान पर एक सरोवर की खुदाई शुरू की, जिसकी शुरूआत बाबा बुड्ढा

जी से करवाई। इस सरोवर को बाद में पांचवें गुरू श्री अर्जुन देव जी ने पूरा किया और इसका नाम 'अमृतसर' रखा। इसी सरोवर के नाम पर अमृतसर शहर का नाम अमृतसर हो गया।

मसंद प्रथा

गुरू अमरदास जी द्वारा स्थापित 22 मंजिआं, जिनकी स्थापना सिक्ख धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु की गई थी, गुरू रामदास जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार प्रसार के लिए दूरस्थ सिक्खों वह पैसे लाने के लिए कहा जो उन्होंने अपनी खुशी से गुरू घर के लिए रखे हुए थे, के लिए मसंद प्रथा स्थापित की।

बाणी रचना

गुरू रामदास जी के 679 शब्द 30 रागों में आदि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज हैं। आप जी की विशेष रचनाएँ आठ वारा और छक्के छंत हैं। गुरू रामदास जी गुरू अमरदास जी के समय में ही (सूही राग) में चार लावां के पाठ की रचना करके सिक्खों में विवाह के समय (अनन्द कारज) की प्रथा प्रचलित की।

अर्जन देव जी को गुरूगद्दी की बख्शिश

गुरूगद्दी गुरू रामदास जी और उनकी सुपत्नी बीबी भानी जी के पुत्रों में से किसी एक को मिलनी थी। पृथी चन्द सबसे बड़ा पुत्र अति लोभी, ईर्ष्यालु, झगड़ालू प्रवृत्ति का तो दूसरा पुत्र महादेव मस्त, संन्यासी और साधु स्वभाव का मालिक था। अतः गुरूगद्दी के सही और योग्य उत्तराधिकारी गुरू अर्जन देव जी ही थे। एक बार लाहौर से गुरू रामदास जी के कुछ रिश्तेदार आए और विवाह का निमंत्रण देते हुए लाहौर जाने के लिए कहा। गुरू रामदास जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र अर्जन देव को लाहौर भेजते हुए कहा कि जब मैं बुलाऊँ तभी वापस आना। विवाह के बाद लगभग एक, दो महीने बीत गए, गुरू रामदास जी ने नहीं बुलाया तब अर्जन देव जी ने गुरू पिता को गुरू प्रेम भाव भरी तीन चिट्ठियां लिखीं, जो पृथी चन्द के कारण गुरू साहिब को बाद में मिली थीं। जिन्हें पढ़कर गुरू साहिब बहुत प्रसन्न हुए और फैसला किया कि गुरूगद्दी पर अर्जन देव का ही अधिकार है। इस प्रकार गुरू रामदास जी ने गुरू अर्जन देव जी को गुरूगद्दी की बख्शिश की।

ज्योति–जोत समाए

अपना अंतिम समय समीप अनुभव कर गुरू रामदास जी परिवार सहित गोइंदवाल चले गए और 1 सितम्बर 1581 ई. को 47 वर्ष की आयु में ज्योति जोत समा गए।

विशेश कार्य:

1. गुरू का चक्क भाव रामदास नगर बसाया।
2. गुरू के महल का निर्माण करवाया।
3. एक बाज़ार बनवाया, जो 'गुरू का बाज़ार' नाम से प्रसिद्ध है।
4. मसंद प्रथा चलाई।
5. रामसर सरोवर की खुदाई शुरू करवाई।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू रामदास जी सिक्खों के कौन से गुरू थे?

(क) दूसरे (ख) चौथे
(ग) पांचवें (घ) तीसरे

प्रश्न 2. गुरू रामदास जी का मूल नाम क्या था?

(क) भाई रामा जी (ख) भाई जेठा जी
(ग) भाई दिआला जी (घ) भाई लहणा जी

प्रश्न 3. अल्पायु में गुरू रामदास जी क्या बेचकर घर का गुज़ारा करते थे ?

(क) गुड़ (ख) फल
(ग) घुंगणीआ (घ) मिठाई

प्रश्न 4. गुरू रामदास जी का जन्म कहां हुआ?

(क) लाहौर (ख) अमृतसर
(ग) मुलतान (घ) करतारपुर साहिब

प्रश्न 5. गुरू रामदास जी का विवाह किस के साथ हुआ?

(क)	बीबी दानी जी	(ख)	बीबी भानी जी
(ग)	बीबी सुलखणी जी	(घ)	बीबी लक्ष्मी जी

प्रश्न 6. गुरू रामदास जी के कितने पुत्र थे?

(क)	दो	(ख)	चार
(ग)	एक	(घ)	तीन

प्रश्न 7. गुरू रामदास जी ने कौन सा नगर बसाया?

(क)	तरनतारन	(ख)	गुरू का चक्क
(ग)	कीरतपुर	(घ)	आनन्दपुर साहिब

प्रश्न 8. गुरू रामदास जी जी किस वर्ष सरोवर की खुदाई शुरू करवाई थी ?

(क)	1577 ई.	(ख)	1539 ई.
(ग)	1576 ई.	(घ)	1546 ई.

प्रश्न 9. गुरू रामदास जी ने सिक्खों की कौन सी संस्था स्थापित की?

(क)	मंजी	(ख)	संगत
(ग)	मसंद	(घ)	गुरूद्वारा

प्रश्न 10.लावां किस गुरू साहिब जी की बाणी है?

(क)	गुरू रामदास जी	(ख)	गुरू अर्जन देव जी
(ग)	गुरू नानक देव जी	(घ)	गुरू अमरदास जी

प्रश्न 11.गुरू रामदास जी के पिता जी का क्या नाम था?

(क)	श्री रविदास जी	(ख)	श्री हरिदास जी
(ग)	श्री अमरदास जी	(घ)	श्री नानकदास जी

प्रश्न 12.गुरू रामदास जी को गुरूगद्दी का तिलक किसने लगाया था?

(क) बाबा बुड्ढा जी (ख) बाबा अमरदास जी

(ग) बाबा नानक जी (घ) बाबा मेहता जी

प्रश्न 13.श्री गुरू अमरदास जी ने 'गुरू का चक्क' की जिम्मेवारी किसी गुरू को सौंपी थी?

(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) श्री गुरू हरिरराय जी

(ग) गुरू रामदास देव जी (घ) गुरू अंगद देव जी

प्रश्न 14.गुरू रामदास जी की बाणी कितने रागों में है?

(क) 20 (ख) 15

(ग) 40 (घ) 30

प्रश्न 15. गुरू रामदास जी का पालन–पोषण किसने किया?

(क) माता जी (ख) दादी जी

(ग) नानी जी (घ) मासी जी

प्रश्न 16. गुरू रामदास जी की माता का क्या नाम था?

(क) दया कौर जी (ख) चरण कौर जी

(ग) निहाल कौर जी (घ) कृष्ण कौर जी

प्रश्न 17.गुरूगद्दी पर सुशोभित होते समय गुरू रामदास जी की आयु कितनी थी?

(क) 45 वर्ष (ख) 50 वर्ष

(ग) 40 वर्ष (घ) 20 वर्ष

प्रश्न 18.ज्योति–जोत समाते समय गुरू रामदास जी की आयु कितनी थी?

(क) 47 वर्ष (ख) 50 वर्ष

(ग) 60 वर्ष (घ) 35 वर्ष

प्रश्न 19. गुरू रामदास जी कब ज्योति–जोत समाए?

(क) 1539 ई. (ख) 1581 ई.

(ग) 1574 ई. (घ) 1520 ई.

प्रश्न 20. गुरू रामदास जी किस स्थान पर ज्योति जोत समाए?

(क) गोइंदवाल (ख) तरनतारन

(ग) अमृतसर (घ) करतारपुर

उत्तरमाला

उत्तरः– 1.(ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख) 6. (घ) 7. (ख) 8. (क) 9. (ग) 10. (क) 11.(ख) 12. (क) 13. (ग) 14. (घ) 15. (ग) 16. (क) 17.(ग) 18. (क) 19. (ख) 20. (क)

श्री गुरू अर्जन देव जी

जन्म

गुरू अर्जन देव जी सिक्खों के पांचवे गुरू हैं। आपका प्रकाश 15 अप्रैल, 1563 ई. को गोइंदवाल साहिब में हुआ।

माता–पिता

आपके पिता सिक्खों के चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी थे। आपकी माता जी का नाम बीबी भानी था। आपके दो बड़े भाई पृथी चन्द और महादेव थे। आपका पालन–पोषण गुरू अमरदास जी की देखरेख में हुआ।

विद्या

उस समय गोइंदवाल के समीपस्थ इलाकों में कई विद्वान् व्यक्ति रहते थे, जो अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। गुरू अमरदास जी ने गुरू अर्जुन देव जी को गुरमुखी के अतिरिक्त फारसी, संस्कृत और हिन्दी भाषा पढ़ाने के लिए विद्वान् नियुक्त किए। गुरू अर्जुन देव जी की बाणी में तीनों भाषाओं का प्रयोग मिलता है। गुरमुखी की शिक्षा आपने बाबा बुड्ढा जी की देख–रेख में प्राप्त की।

विवाह

गुरू अर्जुन देव जी का विवाह 16 वर्ष की आयु में गांव मउ, तहसील फिल्लौर, जिला जालन्धर के निवासी कृष्ण चन्द खत्री की सुपुत्री

गंगा जी के साथ हुआ। आपके घर एक पुत्र गुरू हरिगोबिन्द साहिब का जन्म हुआ।

गुरूगद्दी की प्राप्ति

गुरू अर्जुन देव जी गुरू रामदास जी के हुक्म अनुसार ही अपनी दिनचर्या निभाते थे। गुरू रामदास जी द्वारा किए परीक्षण के आधार पर ही गुरू अर्जन देव जी को गुरूगद्दी प्राप्त हुई।

मसंद प्रथा

मंजी प्रथा के रूप में गुरू रामदास जी द्वारा जारी मसंद प्रथा को गुरू अमरदास जी ने जारी रखते हुए इस प्रथा को दसवंध रूप में संस्थागत रूप प्रदान किया। गुरू घर के प्रचार तथा गुरू घर के लिए संगतों द्वारा दी जाने वाली रकम, रसद आदि एकत्रित करना मसंदों का कार्य था। अप्रैल महीने में वैसाखी के दिन सभी मसंद गुरू दरबार में हाजिर होते। मसंद के मित्रों आदि में से यदि कोई गुरू जी के पास पहुँचने में समर्थ होता तो वह अपने साथी मसंद के साथ आ जाता। विदाई के समय गुरू जी हरेक मसंद को सरोपा देते थे।

श्री अमृतसर साहिब में श्री हरिमन्दिर साहिब की स्थापना

गुरूगद्दी प्राप्ति के पश्चात् गुरू जी सिक्खी का प्रचार करने लगे और चक्क रामदासपुर, वर्तमान में श्री अमृतसर शहर में श्री हरमन्दिर साहिब का निर्माण करवाया। यह नगर गुरू रामदास जी ने बसाया था। गुरू अर्जन देव जी ने पवित्र सरोवर को पक्का करवाया और सरोवर के बीचो बीच श्री हरिमन्दिर साहिब बनवाया। गुरू जी ने चारों दिशाओं में चार दरवाज़े रखे, जिसका अर्थ है कि हरि का यह दर सभी के लिए खुला है। गुरू जी ने श्री हरिमन्दिर साहिब की नींव साईं मिआं मीर जी से रखवाकर समाज को यह संदेश दिया कि सच्चा मानव किसी भी धर्म या सम्प्रदाय से हो, वह कबूल है।

तरनतारन नगर बसाया

गुरू साहिब जी ने अन्य इलाकों में सिक्खी का प्रचार करने और गुरबाणी से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के उद्देश्य से श्री अमृतसर साहिब से 25 किलोमीटर की दूरी पर तरनतारन नगर बसाया। इसी स्थान पर सरोवर के किनारे एक गुरूद्वारा साहिब का निर्माण करवाया और शारीरिक रोगों से छुटकारा पाने के लिए एक दवाखाना भी खोला।

करतारपुर नगर बसाया

तरनतारन शहर बसाने के पश्चात् गुरू जी ब्यास दरिया से आगे दुआबा क्षेत्र की ओर गए सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए जालन्धर के समीप करतारपुर नामक नगर बसाया और गुरूद्वारा साहिब स्थापित किया।

हरिगोबिन्दपुर नगर बसाया

जब गुरू अर्जन देव जी धर्म को प्रचार–प्रसार का दायित्व निभा रहे थे तो उन्हें पुत्र जन्म का शुभ समाचार मिला। पुत्र गुरू हरिगोबिन्द जी के जन्म की खुशी में आपने एक नए नगर की स्थापना की, जिसका नाम श्री हरिगोबिन्दपुर रखा।

अकबर से टैक्स माफ करवाना

पंजाब में 1595 ई. से 1598 ई. तक अकाल पड़ा रहा। तीन वर्ष तक थोड़ी –सी भी बारिश नहीं हुई और अन्न की कमी ने जीना मुश्किल कर दिया। उस समय अकबर बादशाह ने लाहौर को अपनी राजधानी बना लिया था। अकबर जब पंजाब आया तो ब्यास दरिया पार करके गुरू साहिब जी से मिला। गुरू जी के साथ संवाद रचा कर बहुत प्रसन्न हुआ। गुरू साहिब जी ने बादशाह को बताया कि टैक्स बहुत अधिक है और कीमतें कम होने के कारण किसानों के लिए इतना अधिक टैक्स देना सम्भव नहीं है। गुरू जी कहने पर बादशाह ने अफसरों को आदेश दिया कि 10–12 प्रतिशत टैक्स वसूल करने की बजाय पहले जितना ही अर्थात् 1 से 6 प्रतिशत टैक्स वसूल किया जाए। इस घोषणा ने कृषक समाज को बहुत राहत दी और गुरू जी के साथ अधिक से अधिक लोग जुड़ने लगे।

कुंए लगवाए

अकाल के कारण पानी की भी कमी महसूस होने लगी। इस कमी को दूर करने के लिए गुरू अर्जन देव जी ने कुंए खुदवाये। गुरू जी ने प्रचार यात्रा दौरान दो हरटे, चार हरटे कुंए लगवाए। गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के जन्म की खुशी में गुरू अर्जन देव जी ने वडाली के पास छह–हरटों वाला कुंआ लगवाया। इसके अतिरिक्त लाहौर में एक बाऊली का भी निर्माण करवाया।

बाणी रचना

गुरू अर्जन देव जी की कुल बाणी 2218 शब्द हैं, जो 30 रागों में है और श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज है।

आदि ग्रन्थ का सम्पादन

गुरू अर्जन देव जी के समय में सिक्खों की बढ़ती संख्या देख कर गुरू साहिब को यह आवश्यकता अनुभव हुई कि समस्त बाणी को एकत्रित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए ताकि सिक्ख किसी अन्य की रचना को गुरू रचित न मान लें। तत्कालीन समय में ऐसी परिस्थितियाँ पैदा भी हो रही थीं। उस समय पृथी चन्द अपनी रचना पर 'नानक' नाम की मोहर लगाने लगा था। कुछ भोले सिक्ख उसकी रचना को ही पढ़ने लगे थे। गुरू जी ने इस घटना को गम्भीर रूप में लेते हुए समस्त बाणी को एकत्रित करने का निर्णय लिया ताकि सिक्ख सच्ची बाणी ही पढ़ें। दूसरी ओर अन्य धर्मों के धर्म ग्रन्थ उनके पैगम्बरों के बहुत समय बाद लिखे जाने के कारण उनमें बहुत बदलाव हो गया था। गुरू साहिब जी ने कहा हस्तलिखित रचना ही शाश्वत है, जो रचना केवल मौखिक होती है वह हवा में गुम हो जाती है–लिखे बाझहु सूरति नाही बोलि बोलि गवाइऐ। इसी कारण गुरू अर्जन देव जी ने अपने से पहले चार गुरू साहिबान की बाणी और अपनी बाणी, भक्ति परम्परा से सम्बन्धित 15 भक्त, जिनकी रचनाएँ गुरमति कसौटी पर पूरी उतरती थी, 11 भट्ट साहिबान तथा 4 गुरू घर के निकटवर्ती सिक्ख आदि महापुरुषों की रचनाओं को एकत्रित करने का कार्य 1601 ई. में शुरू किया। भाई गुरदास जी ने लिखने की सेवा निभाई और 1604 ई. में यह कार्य सम्पूर्ण हुआ। इस बृहदाकार ग्रन्थ का प्रकाश श्री हरिमन्दिर साहिब में किया गया। गुरू अर्जन देव जी स्वयं इस ग्रन्थ के समक्ष नतमस्तक हुए।

शहादत और कारण

गुरू अर्जन देव जी पहले गुरू थे, जो धर्म के लिए शहीद हुए। गुरू अर्जन देव जी के समय में सिक्खों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। बादशाह जहांगीर यह सहन न कर सका। गुरू जी के प्रति ईर्ष्या भाव रखता हुआ वह गुरू जी को शहीद करने के अवसर तलाश करता रहता।

खुसरो की सहायता

तभी बादशाह को सूचना मिलती है कि खुसरो, जिसने बादशाह के विरुद्ध बगावत की थी, गुरू जी से मुलाकात करके गया है। गुरु अर्जन देव जी ने उसके लिए अरदास की है, तिलक लगाया और सहायता कि लिए रकम भी दी है। खुसरो लाहौर को जीतने के लिए आगे बढ़ा। जहांगीर ने भी दुर्ग में कड़ा प्रबन्ध कर रखा था। खुसरो ने नौ दिन तक किले को घेरे रखा किन्तु वह जीत नहीं पाया। फिर वह वापिस ब्यास की ओर मुड़ गया ताकि फरीद खान के साथ आ रही सेना को रोक सके।

किन्तु जब तक खुसरो वहां पहुंचा तब तक फरीद खान की सेना दरिया पार करके गोइंदवाल से गुज़रती हुई भरोवाल पहुंच चुकी थी। यहां दोनों में युद्ध हुआ, स्वयं को हारता देखकर खुसरो वहां से भाग या। अब खुसरो बादशाह के लिए भगौड़ा था और फौज उसे पकड़ना चाहती थी। खुसरो गुरू जी के पास आया और अपनी स्थिति बयान की। खुसरो का गुरू साहिब को मिलना बादशाह के लिए ऐसा अवसर था जिस आधार बनाकर वह गुरू जी के विरुद्ध कोई आदेश जारी कर सके। बादशाह ने तुरंत ही गुरू अर्जन देव साहिब का घर–बार और सारे सामान आदि को कब्ज़े में लेने का हुक्म दिया।

ज्योति जोत समा जाना

जहांगीर बादशाह के हुक्म के बारे में पता लगते ही चंदू बादशाह के पास जाकर गुरू जी की चुगली करता है कि इनके पास बहुत पैसा है, इसलिए इन्हें जुर्माना लगाना चाहिए। चंदू द्वारा ऐसा करने के पीछे का कारण यह था कि संगत के कहने पर गुरू ने उसकी पुत्री का रिश्ता लेने से इंकार कर दिया था, इसलिए वह गुरू जी के विरुद्ध हो गया था। बादशाह ने गुरू जी को बन्दी बनाकर कठिन यातनाएं देने का निर्णय लिया। गुरू जी को गर्म तवे पर बिठाया गया और शीश में गर्म रेत डाली गई। इस तरह यातनाएं सहन करते हुए गुरू जी 30 मई, 1606 ई. को ज्योति जोत समा गए।

विशेश कार्य:

1. रामदास सरोवर पूरा करवाया।
2. मसंद प्रथा को संस्थागत रूप दिया।
3. गुरू रामदास जी द्वारा बनवाए 'गुरू का महल' को पक्का करवाया।
4. हरिमन्दिर साहिब की नींव रखवाई।
5. तरनतारन नगर की स्थापना की।
6. करतारपुर नगर बसाया।
7. हरिगोबिन्दपुर शहर बसाया।
8. अकबर से टैक्स माफ करवाया।
9. दो हरटे, चार हरटे और छह हरटे कुंए लगवाए।
10. लाहौर में बाऊली का निर्माण करवाया।
11. आदि ग्रन्थ का सम्पादन किया।
12. दसवंध की प्रथा लागू की।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू अर्जन देव जी का जन्म कब हुआ?
(क) 1539 ई. (ख) 1563 ई.
(ग) 1567 ई. (घ) 1560 ई.

प्रश्न 2. गुरू अर्जन देव जी के पिता का क्या नाम था?
(क) गुरू अमरदास जी (ख) गुरू अंगद देव जी
(ग) गुरू रामदास जी (घ) गुरू नानक देव जी

प्रश्न 3. गुरू अर्जन देव जी की सुपत्नी का क्या नाम था?
(क) माता गंगा जी (ख) माता नानकी जी
(ग) माता सुलखणी जी (घ) माता तृप्ता जी

प्रश्न 4. गुरू अर्जन देव जी ने किस सरोवर को पक्का करवाया?
(क) तरनतारन सरोवर (ख) रामदास सरोवर
(ग) संतोखसर सरोवर (घ) रामसर सरोवर

प्रश्न 5. श्री गुरू अर्जन देव जी ने रामदास सरोवर के बीचो–बीच किस गुरूद्वारा साहिब का निर्माण करवाया?
(क) दुरगिआना मन्दिर (ख) विष्णु मन्दिर
(ग) राममन्दिर (घ) हरिमन्दिर साहिब

प्रश्न 6. हरिमन्दिर साहिब का नींव पत्थर गुरू अर्जन देव जी ने किस से रखवाया था ?
(क) भाई बिधी चन्द (ख) भाई गुरदास जी
(ग) सांई मिआं मीर (घ) बाबा बुड्ढा जी

प्रश्न 7. गुरू अर्जन देव जी के सुपुत्र का क्या नाम था?
(क) गुरू हरिकृष्ण जी (ख) गुरू हरिराय साहिब
(ग) गुरू हरिगोबिन्द साहिब (घ) गुरू तेग बहादुर साहिब

प्रश्न 8. गुरू अर्जन देव जी ने जालन्धर के समीप किस नगर की स्थापना की?

(क) फगवाड़ा (ख) फलौर

(ग) करतारपुर (घ) अमृतसर

प्रश्न 9. गुरू अर्जन देव जी ने किस बादशाह से किसानों का टैक्स माफ करवाया ?

(क) जहांगीर (ख) अकबर

(ग) औरंगज़ेब (घ) खुसरो

प्रश्न 10.गुरू अर्जन देव जी ने किस ग्रन्थ का संकलन किया?

(क) श्री गुरू पंथ प्रकाश (ख) आदि ग्रन्थ

(ग) गुरप्रताप सूरज ग्रन्थ (घ) श्री दसम ग्रन्थ

प्रश्न 11.आदि ग्रन्थ किसने लिखा था?

(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) भाई गुरदास जी

(ग) बाबा बुड्ढा जी (घ) भाई मनी सिंह

प्रश्न 12.गुरू अर्जन देव जी को किस मुगल बादशाह ने शहीद करवाया?

(क) शाहजहां (ख) बाबर

(ग) अकबर (घ) जहांगीर

प्रश्न 13. गुरू अर्जन देव जी सिक्खों के कौन से गुरू थे?

(क) तीसरे (ख) चौथे

(ग) दूसरे (घ) पांचवें

प्रश्न 14.गुरू अर्जन देव जी का जन्म कहां हुआ?

(क) अमृतसर (ख) गोइंदवाल

(ग) नानकसर (घ) तरनतारन

प्रश्न 15.गुरू अर्जन देव जी के नाना जी का क्या नाम था?

(क) गुरू अमरदास जी (ख) गुरू नानक देव जी

(ग) गुरू तेग बहादर जी (घ) गुरू अंगद देव जी

प्रश्न 16.श्री हरिमन्दिर साहिब किस शहर में स्थित है?

(क) हज़ूर साहिब (ख) आनन्दपुर साहिब

(ग) अमृतसर (घ) तलवण्डी साबो

प्रश्न 17.श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का सम्पादन कार्य किस वर्ष में पूरा हुआ?

(क) 1599 ई. (ख) 1604 ई.

(ग) 1469 ई. (घ) 1620 ई.

प्रश्न 18.श्री हरिमन्दिर साहिब में पहला ग्रन्थी किसे नियुक्त किया गया?

(क) बाबा बुड्ढा जी (ख) बाबा नानक जी

(ग) बाबा अमर जी (घ) बाबा राम जी

प्रश्न 19.गुरू अर्जन देव जी ने कितने रागों में बाणी की रचना की?

(क) 20 (ख) 30

(ग) 40 (घ) 10

प्रश्न 20.गुरू अर्जन देव जी कब ज्योति–जोत समाए?

(क) 15 जनवरी 1606 ई. (ख) 20 फरवरी 1606 ई.

(ग) 30 मई 1606 ई. (घ) 26 दिसम्बर 1606 ई.

उत्तरमाला

उत्तरः– 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ) 6. (ग) 7.(ग) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ख) 11. (ख) 12. (घ)13. (घ) 14. (ख) 15. (क) 16. (ग) 17. (ख) 18. (क) 19. (ख) 20. (ग)

श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी

जन्म

श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी सिक्ख धर्म के छठे गुरू हैं। आपका जन्म 19 जून 1559 ई. को वडाली ज़िला अमृतसर में हुआ। वर्तमान समय में यह स्थान गुरू की वडाली नाम से प्रसिद्ध है।

माता–पिता

आपके पिता पांचवें गुरू, श्री गुरू अर्जन देव जी और माता गंगा जी थे। आपके जन्म से सम्पूर्ण सिक्ख जगत् में खुशी की लहर दौड़ गई किन्तु गुरू अर्जन देव जी का बड़ा भाई पृथी चन्द खुश नहीं हुआ क्योंकि वह सोचता था कि गुरू जी के घर पुत्र न होने के कारण गुरू जी के बाद गुरूगद्दी उसके पुत्र मेहरबान को मिल जाएगी।

बचपन

बाल्यावस्था में ही गुरू पिता जी ने गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी को बाबा बुड्ढा जी को सौंप दिया। बाबा बुड्ढा जी ने आपके व्यक्तित्व में संत और सिपाही दोनों गुण भर दिए। 1606 ई. में जब गुरू अर्जन देव जी को शहीद किया गया तब आपकी आयु 11 वर्ष थी।

गुरूगद्दी की प्राप्ति

11 वर्ष की आयु में आप गुरूगद्दी पर विराजमान हुए। गुरू अर्जन देव जी का हुक्म था कि गुरू हरिगोबिन्द जी से कहा जाए कि वह

शस्त्रधारी होकर ही गुरूगद्दी पर बैठे। गुरूगद्दी पर विराजमान होकर आपने सिक्ख संगतों के नाम आपने हुक्मनामा भेजा कि आगे से संगत भेंट में घोड़े और शस्त्र आदि भी लेकर आएं।

विवाह के लिए रिश्ता

ब्राह्मणों ने चंदू से कहा कि हम तेरी बेटी का रिश्ता गुरू अर्जन देव जी के पुत्र से तय कर आए हैं। यह सुनकर चंदू ने कहा कि चौबारे की ईंट मोरी (नाली) में लगा दी है। सिक्ख संगत को जब यह बात पता चली तो उन्होंने गुरू जी के समक्ष प्रार्थना करते हुए कहा कि चंदू ने सिक्खी का अपमान किया है। गुरू जी ने संगत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए चंदू की बेटी का रिश्ता लेने से मना कर दिया। चंदू को यह सहन नहीं हुआ वह गुरू घर का दुश्मन बन गया। गुरू अर्जन देव जी ने संगत से कहा कि वे गुरू हरिगोबिन्द जी के लिए किसी गरीब परिवार की लड़की का रिश्ता लेंगे। यह सुनकर नारायण दास ने अपनी पुत्री के रिश्ते की गुरू जी से प्रार्थना की गुरू जी ने रिश्ता स्वीकार कर लिया। इसके बाद एक अन्य सिक्ख हरिचन्द जी ने भी गुरू जी से अपनी सुपुत्री नानकी जी का रिश्ता लेने के लिए प्रार्थना की, गुरू जी ने संगत कहने पर यह रिश्ता भी स्वीकार कर लिया। एक बार प्रचार के लिए जब गुरू जी पाकिस्तान के इलाके मडियाल, ज़िला गुज्जरावालां गए तो वहां गांव का मरवाहा, अपनी पुत्री के लिए रिश्ता खोज रहा था। गुरू जी के साथ भाई जेठा जी थे, जिनसे पूछ कर उसने संगत के पास गुरू जी द्वारा अपनी पुत्री का रिश्ता लेने की बात की। संगत के कहने पर गुरू जी ने यह रिश्ता भी स्वीकार कर लिया।

गुरू हरिगोबिन्द जी के विवाह सम्बन्धी उक्त घटनाओं से सिद्ध होता है कि उन्होंने अन्य धार्मिक नेताओं, बादशाहों आदि की प्रचलित परम्परा अनुसार एक से अधिक विवाह नहीं करवाए थे अपितु उन्होंने यह विवाह सिक्ख संगत की भावनाओं को सम्मान देते हुए करवाए।

आपके बाबा गुरदित्ता जी, बाबा सूरज मल्ल जी, बाबा अनी राय जी, बाबा अटल राय जी और गुरू तेग बहादर जी पांच पुत्र और एक पुत्री बीबी वीरो थी।

मीरी–पीरी धारण करना

गुरूगद्दी की प्राप्ति के समय गुरू हरिगोबिन्द जी ने 'मीर' को

अभिव्यंजित करती 'मीरी' तलवार और 'पीर' के स्वरूप को प्रकट करती 'पीरी' की तलवार धारण की। आत्मिक पक्ष से संत होना ही 'पीरी' है और जुल्म और अत्याचार के विरुद्ध सिपाही बनना 'मीरी' है। गुरू जी को 'मीरी–पीरी' ये दोनों तलवारें बाबा बुड्ढा जी ने धारण करवाई थीं।

श्री अकाल तख़्त की स्थापना

गुरूगद्दी की प्राप्ति के बाद अगला सबसे महत्त्वपूर्ण जो कार्य था, वो था, श्री अकाल तख़्त की स्थापना। गुरू जी ने 1609 ई. में अकाल तख़्त की स्थापना की। इस तख़्त के पूर्ण निर्माण तक की सेवा बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी ने अपने हाथों से की। एक उच्च चबूतरे का निर्माण कर उसे 'श्री अकाल तख़्त' कहकर नवाजा गया। गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी यहां बैठकर संगतों को उपदेश देते। सिक्खों के कई मामलों, झगड़ों आदि का निपटारा भी गुरू जी यहीं बैठकर करते। धीरे–धीरे अकाल तख़्त सिक्खों के लिए सुप्रीम हो गया और भी आज भी सिक्ख जगत अकाल तख़्त के समक्ष नतमस्तक होते हुए तख़्त के हुक्म को स्वीकार करता है।

ग्वालियर का किला और 52 राजाओं की मुक्ति

गुरू जी सदैव अपने साथ तैयार–बर–तैयार अंगरक्षक रखते थे। गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी की चढ़दी कला देखकर बादशाह जहांगीर ने गुरू जी को दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा और यहां आने पर गुरू जी को बन्दी बनाकर ग्वालियर किले में भेज दिया। ग्वालियर किले में गुरू साहिब के साथ 52 पहाड़ी राजा भी कैद थे। साईं मीआं मीर आदि दरवेशी रूहों ने बादशाह को समझाया कि कि सच्ची रूहों को कैद नहीं करते। बादशाह ने गुरू साहिब को छोड़ने की घोषणा की। गुरू साहिब ने 52 कलियों वाला चोला पहना और एक–एक कली बादशाह के हाथ में पकड़ाकर 52 राजाओं को भी कैद से छुड़वाया। इसी कारण गुरू साहिब को 'बंदी छोड़' के नाम से भी जाना जाता है।

धर्म प्रचार

गुरू नानक साहिब जी के बाद गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ही ऐसे गुरू थे जिन्होंने यात्राओं द्वारा धर्म प्रचार किया। मालवा और कश्मीर क्षेत्र में गुरू जी ने सिक्खी प्रचार को बुलंदियों पर पहुंचा दिया।

गुरू हरिगोबिन्द जी द्वारा किए गए युद्ध

अपने जीवनकाल में गुरू जी अनेक युद्ध किए—

अमृतसर का युद्ध

यह युद्ध 1634 ई. में शाहजहाँ के सेनापति गुलाम रसूल खान और मुखलिस खान तथा सिक्खों के बीच 'बाज़' के कारण हुआ। इस युद्ध में गुरू जी विजयी रहे। शाहजहाँ के साथ गुरू जी का यह पहला युद्ध था।

करतारपुर का युद्ध

दूसरा युद्ध 1635 ई. में हुआ। पैंदे खान ने जालन्धर के सूबेदार को अपने साथ मिला लिया और लाहौर के नवाब काले खान के निर्देशन में सेना भेज दी। 'करतारपुर' के इस युद्ध में शहर को घेर लिया गया। अन्य सिक्ख योद्धाओं के साथ 14 वर्षीय तेग बहादर (पहला नाम तिआग मल्ल) जी भी रणभूमि में लड़े। अंत में जब पैंदे खान गुरू जी के सामने आया और गुरू जी पर कई प्रहार किए किन्तु गुरू जी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सका किन्तु गुरू जी के एक प्रहार से पैंदे खान घायल होकर ज़मीन पर गिर गया। पैंदे खान के दामाद काले खान ने भी गुरू जी को युद्ध के लिए ललकारा और तलवार से प्रहार किया। प्रतिकर्म रूप में गुरू जी ने प्रहार करते हुए काले खान से कहा कि प्रहार ऐसे नहीं ऐसे करते हैं और काले खान के कंधे को ऐसे चीर दिया जैसे कि जनेऊ पहना हुआ हो। 1635 ई. में हुए इस युद्ध में मुसलमान सेना ने भागकर अपनी जान बचाई थी।

फगवाड़ा का युद्ध

तीसरा युद्ध फगवाड़ा के समीप हुआ। बादशाह का हुक्म था कि गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी को बन्दी बनाकर लाया जाए। फगवाड़ा के पास से मुगल सेनाएँ पीछा करती हुई गुरू जी पास पहुंचीं। युद्ध दौरान गुरू जी ने मुगल सेना को हरा दिया। मुगल सेना मैदान छोड़कर भाग गई और गुरू जी करतारपुर लौट आए।

महिराज का युद्ध

चौथा युद्ध मालवा के महिराज इलाके में हुआ। काबुल की संगत गुरू घर की श्रद्धालु बन गई थी। गुरू जी ने काबुल की संगत को आदेश दिया था कि घोड़े आदि भेंट में लेकर आएं। काबुल से दो सिक्ख आपके

लिए घोड़े लेकर आ रहे थे। रास्ते में मीर बख़्शी को वे घोड़े पसंद आ गए, उसने सिक्खों से घोड़े छीन लिए। सिक्खों ने आकर सारा वृतान्त गुरू जी को सुनाया। गुरू जी ने बिधी चन्द से घोड़े वापिस लाने के लिए कहा। बिधी चन्द चालाकी से एक एक करके दोनों घोड़े वापिस ले आया। मुग़ल सरकार ने इसे अपना अपमान समझा और उन्होंने गुरू जी पर हमला कर दिया। मालवा के सिक्खों ने गुरू जी का पूरा साथ दिया। इलाके के बारे में पूरी जानकारी होने के कारण गुरू साहिब जी ने मुग़ल सेना के पांव ही न लगने दिए और सेना को हरा दिया। इस प्रकार गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने कुल चार युद्ध किए।

कीरतपुर निवास

गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने जीवन का अंतिम समय कीरतपुर में व्यतीत किया।

हरिराय जी को गुरूगद्दी

गुरू साहिब जी के सबसे बड़े पुत्र बाबा गुरदित्ता जो संत भी थे और सिपाही भी। बाबा श्री चन्द जी ने बाबा गुरदित्ता जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। बाबा गुरदित्ता जी का देहान्त गुरू साहिब से पहले 1638 ई. में हो गया था। ऐसी परिस्थितियों में गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी सिक्ख पंथ की बागडोर ऐसे हाथों में सौंपना चाहते थे, जिससे पंथ को उत्साह मिले। इसी भावना के अधीन गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र गुरू हरिराय जी को परखते हुए गुरूगद्दी उन्हें सौंप दी।

ज्योति–जोत समा जाना

3 मार्च 1644 ई. को आप ज्योति–जोत समा गए। जहां गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी का अंतिम संस्कार किया गया था, वर्तमान में उस स्थान पर गुरूद्वारा 'पतालपुरी' बना हुआ है।

विशेश कार्यः

1. श्री अकाल तख़्त की स्थापना की।
2. 52 राजाओं को कैद से मुक्त करवाया।
3. यात्राओं द्वारा धर्म प्रचार किया।
4. कीरतपुर नगर का निर्माण करवाया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सिक्खों के छठे गुरू कौन थे?
(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी
(ग) गुरू हरिराय जी (घ) गुरू अमरदास जी

प्रश्न 2. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी की माता का क्या नाम था?
(क) माता नानकी जी (ख) माता सुलखणी जी
(ग) माता गंगा जी (घ) माता तृप्ता जी

प्रश्न 3. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने कितनी तलवारें धारण कीं?
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) कोई नहीं

प्रश्न 4. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने किस तख़्त की स्थापना की?
(क) बादशाही तख़्त (ख) बड़ा तख़्त
(ग) सुन्दर तख़्त (घ) अकाल तख़्त

प्रश्न 5. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने किन से विद्या प्राप्त की थी?
(क) भाई गुरदास जी (ख) गुरू अर्जन देव जी
(ग) बाबा बुड्ढा जी (घ) भाई नंद लाल जी

प्रश्न 6. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी को किस किले में कैद किया गया?
(क) लाहौर के किले में (ख) दिल्ली के किले में
(ग) ग्वालियर के किले में (घ) रामगढ़ के किले में

प्रश्न 7. बन्दी दौरान गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के साथ कौन थें?
(क) सूफी फकीर (ख) ब्राह्मण
(ग) पहाड़ी राजा (घ) संगत

प्रश्न 8. रिहा होने के पश्चात् गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने कितनी कलिओं वाला चोला धारण किया?

(क) 53 (ख) 52
(ग) 54 (घ) 59

प्रश्न 9. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी की सुपुत्री का क्या नाम था?

(क) बीबी वीरो (ख) बीबी अमरो
(ग) बीबी अनोखी (घ) बीबी भानी

प्रश्न 10.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने अपने जीवन का अंतिम समय कहां व्यतीत किया?

(क) अमृतसर (ख) करतारपुर
(ग) कीरतपुर (घ) तरनतारन

प्रश्न 11.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी कब ज्योति–जोत समाए?

(क) 1644 ई. (ख) 1544 ई.
(ग) 1744 ई. (घ) 1725 ई.

प्रश्न 12.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1559 ई. (ख) 1575 ई.
(ग) 1558 ई. (घ) 1560 ई.

प्रश्न 13. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के पिता का क्या नाम था?

(क) श्री गुरू रामदास जी (ख) श्री गुरू अर्जन देव जी
(ग) श्री गुरू अंगद देव जी (घ) श्री गुरू नानक देव जी

प्रश्न 14.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी कितनी आयु में गुरूगद्दी पर विराजमान हुए?

(क) 10 वर्ष (ख) 9 वर्ष
(ग) 15 वर्ष (घ) 11 वर्ष

प्रश्न 15.श्री गुरू हरि गोबिन्द जी का मुगलों के साथ अमृत्सर में युद्ध कब हुआ ?

(क) 1640 ई. (ख) 1630 ई.
(ग) 1635 ई. (घ) 1634 ई.

प्रश्न 16. गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने शाहजहां के साथ पहला युद्ध कहां किया?

(क) करतारपुर (ख) महिराज
(ग) अमृतसर (घ) फगवाड़ा

प्रश्न 17.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी का करतारपुर का युद्ध कब हुआ ?

(क) 1635 ई. (ख) 1634 ई.
(ग) 1640 ई. (घ) 1630 ई.

प्रश्न 18.मीरी–पीरी ये दोनों तलवारें गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी को किसने धारण करवाई थीं?

(क) भाई गुरदास जी (ख) गुरू अर्जन देव जी
(ग) बाबा बुड्ढा जी (घ) भाई नंद लाल जी

प्रश्न 19.गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी को अन्य किस नाम से याद किया जाता है?

(क) बंदी छोड़ (ख) सुन्दर तख़्त
(ग) बादशाह (घ) अकाल तख़्त

प्रश्न 20.श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी का जहां संस्कार किया गया था, वहां आजकल कौन सा गुरूद्वारा सुशोभित है?

(क) बंगला साहिब (ख) पतालपुरी साहिब
(ग) सीस गंज साहिब (घ) रकाबगंज साहिब

उत्तरमाला

उत्तरः–1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ग) 7. (ग) 8. (ख) 9. (क) 10. (ग) 11. (क) 12. (क) 13. (ख) 14. (घ) 15. (घ) 16. (ग) 17 (क) 18. (ग) 19. (क) 20. (ख)

श्री गुरू हरिराय साहिब जी

जन्म

सिक्ख धर्म के सातवें गुरू, गुरू हरिराय जी हैं। आपका प्रकाश 26 फरवरी, 1630 ई. को कीरतपुर साहिब में हुआ।

माता–पिता

श्री गुरू हरिराय जी, श्री गुरू हरिगोबिन्द सिंह जी के पौत्र थे। आपके पिता बाबा गुरदित्ता जी और माता निहाल कौर (अनंती देवी) जी थे।

विद्या और प्रशिक्षण

1638 ई. में बाबा गुरदित्ता जी का देहान्त हो गया। श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने सांसारिक कर्त्तव्य निभाते हुए गुरू हरिराय जी को पगड़ी (दसतार सजाई) बांधी और अपनी देखरेख में गुरबाणी के साथ–साथ शस्त्र विद्या का भी प्रशिक्षण दिया।

विवाह

श्री गुरू हरिराय जी का विवाह 1640 ई. में भाई दया राम जी की सुपुत्री बीबी कृष्ण कौर जी को साथ अरूप गाँव में हुआ। वर्तमान समय में यह गाँव ज़िला गुज्जरावाला (पाकिस्तान) में स्थित है। आपके घर दो पुत्रों श्री रामराय जी और श्री गुरू हरिकृष्ण जी ने जन्म लिया।

गुरूगद्दी

श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने अपने सुपुत्र बाबा सूरजमल्ल जी, श्री गुरू तेग बहादर जी और अपने बड़े पौत्र धीरमल्ल को छोड़कर अपने छोटे पौत्र श्री हरिराय जी को गुरूगद्दी सौंपने का निर्णय लिया और 1644 ई. में गुरूगद्दी की रस्म निभाई गई। सारी संगत आपके समक्ष नतमस्तक हुई।

कीरतपुर में किले का निर्माण करवाया

गुरू जी ने कीरतपुर में एक छोटे से किले का निर्माण करवाया। इस किले में गुरू घर के लिए 2200 घुड़सवार हमेशा तैयार–बर–तैयार रहते थे। किले निर्माण के पश्चात् गुरू जी ने अस्तबल, कुओं और सेना के ठहरने के लिए धर्मशालाएं बनवाईं। आपने हुक्म दिया कि सुबह और शाम के गुरबाणी पाठ और लंगर से पहले नगारा बजाया जाएगा ताकि सभी लोग नाम सिमरन करें और लंगर छक सकें। आपने कीरतपुर में अनेक अलग अलग वृक्ष लगाकर इसे बागों का शहर नाम से प्रसिद्ध किया। श्री गुरू हरिराय जी ने संगत के स्वास्थ्य के लिए एक दवाखाना खोला जिसमें जरूरतमंद लोगों को दवाई दी जाती थी। एक बार शाहजहां का बड़ा पुत्र दारा शिकोह बहुत बीमार हो गया। शाही वैद्य भी उसके रोग को जब ठीक न कर पाए तब गुरू घर के इस दवाखाने की दवाई से वह पूरी तरह ठीक और स्वस्थ हो गया। गुरू हरिराय साहिब जी ने छठे पातशाह हज़ूर साहिब के कार्यों को आगे जारी रखा।

श्री कीरतपुर साहिब से नाहन जाना

निजाबत खान को शाहजहां ने अलीगढ़, मुलतान और कांगड़ा का सेनापति नियुक्त किया था। 1645 ई. में निजाबत खान ने कहिलूर पर हमला किया। उस समय कहिलूर का राजा तारा चंद था। कहिलूर में स्थित कीरतपुर साहिब में गुरू हरिराय जी रहते थे। जब निजाबत खान ने कहिलूर के राजा को बंदी बनाने के लिए कहिलूर पर हमला किया तो उस समय गुरू हरिराय जी गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी का यह आदेश मानते हुए कि आपने युद्ध नहीं करना, कीरतपुर छोड़कर नाहन चले गए। कुछ समय नाहन में रहने के पश्चात् वापिस श्री कीरतपुर आ गए।

गुरू जी द्वारा माझा, मालवा और दुआबा क्षेत्र की यात्रा

श्री गुरू हरिराय जी सिक्खी के प्रचार के लिए पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) से कश्मीर, मालवा से होते हुए कीरतपुर साहिब गए। फिर आप लहरी कलां, बजरूड़, भुंगरानी, बंबेली, सुखचैनआना, पलाही और नूरमहल आदि गांवों में गए। यहां गुरू साहिब जी ने सिक्ख संगत को नाम जपने और वंड छकने का उपदेश दिया। मालवा यात्रा के दौरान गुरू जी गांव भोखड़ी भी गए और सिआलकोट से मक्खन शाह लुबाणा के काफिले के साथ श्रीनगर गए। श्रीनगर और मटन तीर्थ की यात्रा के पश्चात् कश्मीर से आते हुए गुरू जी अखनूर, जम्मू, रामगढ़, सांबा इन नगरों से होते हुए पठानकोट पहुंचे और संगत को दर्शन दिए और उन्हें नाम बाणी से जोड़ते हुए 1660 ई. के अंत में श्री कीरतपुर साहिब पहुंच गए।

प्रचार केन्द्र / बख्शिशों की स्थापना

यात्रा दौरान श्री गुरू हरिराय जी ने सिक्खी–प्रचार के लिए तीन विशेष कार्य किए, जिन्हें बख्शिशें कहा जाता है। ये तीन बख्शिशें इस प्रकार हैं–

भगत भगवानी–ए

श्री भगत भगवान ने उदासी सम्प्रदाय के अध्यक्ष मेहरचंद जी से उपदेश ग्रहण कर उदासी वेष धारण किया किन्तु मन शान्त न हुआ। अतः वे कुछ दिनों के पश्चात् गुरू हरिराय जी के पास चले गए। गुरू जी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उसके मन नाम–सिमरन के प्रति दृढ़ आस्था उत्पन्न कर उसे पूर्व की ओर लोगों को उपदेश देने के लिए भेज दिया। पूर्वीय भारत के उत्तर प्रदेश तथा बिहार आदि में भगत भगवान जी ने गुरू जी की बख्शिशों के स्वरूप 360 सिक्खी के प्रचार केन्द्र स्थापित किए।

संगत साहिबी–ए

जब श्री गुरू हरिराय जी मालवा यात्रा पर गए हुए थे तब भाई संगत जी ने गुरू जी की महिमा सुनी तो वह गुरू जी के पास श्री कीरतपुर आ गया और गुरू जी से नामदान लेकर फेरी लगाने के काम के साथ–साथ लंगर की सेवा करता रहा। फेरी लगाने के कारण उनका नाम

फेरू प्रसिद्ध हो गया। उसकी सेवा भावना से प्रसन्न होकर गुरू जी ने उसे गुरबाणी–सैंची, माला और चोले की बख्शिश की और मसंद नियुक्त किया। भाई फेरू जी लाहौर में डेरा बनाकर लोगों की नाम और लंगर द्वारा सेवा करने लगे। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भाई फेरू जी सेवा के प्रति निष्ठा देखकर 'संगत साहिब' का खिताब दिया।

सुथरे शाही–ए

1625 ई. में जब श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी कश्मीर यात्रा पर गए हुए थे तब वे एक गाँव के समीप से गुज़रे तो उन्हें एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी, गुरू जी ने देखा एक नवजात बच्चा रो रहा था, जिसके मुंह में जन्म के समय ही दांत थे। उसके माता–पिता ने उसे अमंगलकारी समझकर कूड़े में फेंक दिया था। गुरू जी ने उसे देखते ही कहा, कितना सुथरा बच्चा है यह। इसे उठा कर ले आओ और इसके पालन–पोषण का प्रबन्ध करो। गुरू जी के मुख से सुथरा शब्द सुनकर सिक्खों ने उसका नाम ही सुथरा रख दिया। गुरू हरिराय जी ने भाई सुथरा को धर्म प्रचार की सेवा सौंपी।

गुरूगद्दी सौंपना

गुरू जी के श्री कीरतपुर पहुँचते ही औरंगजेब ने उन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा। गुरू जी तो नहीं गए, परन्तु उन्होंने अपने पुत्र रामराय को भेजा। बादशाह ने रामराय को पूछा कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में मुसलमान की निन्दा क्यों की गई है? रामराय ने गुरबाणी की एक पंक्ति में एक शब्द बदल कर मौका बचा लिया। उसने मिट्टी मुसलमान की– इसकी अपेक्षा – मिट्टी बेईमान की– है, इस पंक्ति का उच्चारण किया। जब श्री गुरू हरिराय जी को इस बात का पता लगा कि रामराय ने बादशाह को खुश करने के लिए गुरबाणी की पंक्ति का गलत उच्चारण किया है तो वे बहुत दुःखी हुए। गुरू जी ने हुक्म जारी किया कि इस अल्पमति को कह दो कि मेरे सामने न आए आज से कोई भी सिक्ख इससे बात नहीं करेगा। गुरू जी ने गुरूगद्दी के लिए रामराय को अयोग्य करार देकर गुरूगद्दी श्री (गुरू) हरिकृष्ण जी को देने का निर्णय लिया।

ज्योति जोत समा जाना

श्री गुरू हरिराय जी ने अपना अंतिम समय समीप अनुभव कर श्री

गुरू हरिकृष्ण जी को मर्यादा अनुसार गुरूगद्दी सौंप दी और 6 अक्तूबर 1661 ई. को आप ज्योति जोत समा गए।

विशेष कार्य

1. लोक हित के लिए दवाखाना खोला।
2. लंगर प्रथा को जारी रखा।
3. कीरतपुर में किले का निर्माण करवाया।
4. पानी की सुविधा के लिए कुआं बनवाया।
5. श्री कीरतपुर साहिब के वातावरण को हरा–भरा बनाए रखने के लिए वृक्ष लगवाए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू हरिराय जी सिक्खों के कौन से गुरू थे?

(क) छठे (ख) आठवें
(ग) सातवें (घ) दसवें

प्रश्न 2. गुरू हरिराय जी साहिब जी का जन्म किन के घर हुआ?

(क) बाबा गुरदित्ता जी (ख) बाबा अणी राय जी
(ग) बाबा सूरज मल्ल जी (घ) बाबा श्री चन्द जी

प्रश्न 3. गुरू हरिराय साहिब जी की कितनी बख्शिशें सर्वप्रमाणित हैं ?

(क) तीन (ख) दो
(ग) चार (घ) पांच

प्रश्न 4. गुरू हरिराय जी ने अपने जीवनकाल में कितने युद्ध किए?

(क) दो (ख) चार
(ग) कोई भी नहीं (घ) पांच

प्रश्न 5. श्री गुरू हरिराय जी की सुपत्नी का क्या नाम था?

(क) दया कौर जी (ख) नानकी जी
(ग) कृष्ण कौर जी (घ) सुन्दरी जी

प्रश्न 6. गुरू हरिराय जी को गुरूगद्दी कब मिली ?

(क) 1622 ई. (ख) 1644 ई.

(ग) 1640ई (घ) 1660 ई.

प्रश्न 7. गुरू हरिराय जी आक्रमण रोकने के लिए कितने घुड़सवार रखे हुए थे?

(क) 1200 (ख) 2200

(ग) 2300 (घ) 2500

प्रश्न 8. गुरू हरिराय साहिब जी ने संगत के स्वास्थ्य के लिए क्या खोला ?

(क) मोदीखाना (ख) दवाखाना

(ग) अनाथालय (घ) नानक हट्टी

प्रश्न 10.श्री गुरू हरिराय जी का प्रकाश कब हुआ?

(क) 1640 ई. (ख) 1620 ई.

(ग) 1630 ई. (घ) 1610 ई.

प्रश्न 9. गुरू हरिराय जी कब ज्योति जोत समाए?

(क) 1622 ई. (ख) 1661 ई.

(ग) 1663 ई. (घ) 1660 ई.

प्रश्न 11. गुरू हरिराय जी का जन्म स्थान कहां है?

(क) अमृतसर साहिब (ख) कीरतपुर साहिब

(ग) करतारपुर साहिब (घ) आनन्दपुर साहिब

प्रश्न 12.गुरू हरिराय जी का गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी से क्या रिश्ता था ?

(क) नाती (ख) भानजा

(ग) पुत्र (घ) पौत्र

प्रश्न 13. गुरू हरिराय जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता तृप्ता देवी जी (ख) माता अनन्ती देवी जी

(ग) माता सुलखणी जी (घ) माता नानकी जी

प्रश्न 14.गुरू हरिराय जी के बड़े भाई का क्या नाम था?

(क) बाबा धीर मल्ल जी (ख) बाबा श्री चन्द जी

(ग) बाबा सूरज मल्ल जी (घ) बाबा अणी राय जी

प्रश्न 15. गुरू हरिराय जी ने किस शहर में किले का निर्माण करवाया?

(क) माखोवाल (ख) अलीगढ़

(ग) कीरतपुर (घ) मुलतान

प्रश्न 16 निजाबत खान ने कहिलूर पर कब आक्रमण किया?

(क) 1640 ई. (ख) 1641 ई.

(ग) 1650 ई. (घ) 1645 ई.

प्रश्न 17. शाहजहां के बड़े सुपुत्र का क्या नाम था?

(क) दारा शिकोह (ख) धीर मल्ल

(ग) सूरजमल्ल (घ) निज़ाबत खान

प्रश्न 18.श्री गुरू हरिराय जी ने गुरूगद्दी का तिलक किस गुरू साहिबान को लगाया ?

(क) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (ख) श्री गुरू तेग बहादर जी

(ग) श्री गुरू हरि कृष्ण जी (घ) श्री गुरू अर्जन देव जी

प्रश्न 19. गुरू हरिराय जी के समय जिस नवजात बच्चे के मुंह में दांत थे, उस बच्चे का क्या नाम रखा गया ?

(क) भाई सुथरा (ख) भाई रामराय

(ग) भाई दया सिंह (घ) भाई फेरू

प्रश्न 20. गुरू हरिराय जी को दिल्ली आने का निमंत्रण किसने भेजा?

(क)	अकबर	(ख)	बाबर
(ग)	औरंगज़ेब	(घ)	निज़ाबत खान

उत्तरमाला

उत्तरः— 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (ग) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ख) 9. (ग) 10. (ख) 11. (ख) 12. (घ) 13. (ख) 14. (क) 15. (ग) 16 (घ) 17. (क) 18. (ग) 19. (क) 20. (ग)

श्री गुरू हरिकृष्ण जी

जन्म

सिक्खों के आठवें गुरू श्री गुरू हरिकृष्ण जी का प्रकाश 7 जुलाई, 1656 ई. को कीरतपुर साहिब में हुआ।

माता–पिता

आपके पिता गुरू हरिराय जी और माता कृष्ण कौर जी थे। माता कृष्ण कौर जी को कोट कल्याणी और सुलखणी नाम से भी याद किया जाता है। गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी ने अपना अंतिम समय कीरतपुर साहिब में व्यतीत किया था। इस स्थान पर आजकल गुरूद्वारा शीश महल सुशोभित है। इसी महल में गुरू हरिकृष्ण जी का प्रकाश हुआ था। आपके पिता गुरू हरिराय जी का प्रकाश भी इसी महल में हुआ था। गुरू हरिकृष्ण जी गुरू हरिराय जी के छोटे पुत्र थे। आपका बड़ा भाई रामराय आपसे आयु में दस वर्ष बड़ा था।

बचपन

आप के जन्म के समय ही गुरू हरिराय जी कहा था कि जो कार्य यह बालक करेगा अन्य कोई नहीं कर सकेगा। शारीरिक पक्ष से आप बहुत ही सुन्दर थे और संवेदनशीलता, धैर्य और विनम्रता आपके स्वभाव के विशेष गुण रहे। आपके व्यक्तित्व में आपके पिता गुरू हरिराय जी का प्रभाव प्रत्यक्ष था। आप उनकी तरह ही गुरू घर में आने वाली संगत की

सेवा करते, प्रसादा छकाते। गुरू जी ने बहुत ही कम आयु में शाब्दिक शिक्षा गुरू पिता जी की देखरेख में प्राप्त कर ली थी।

दवाखाना

गुरू हरिराय जी के दवाखाने में मज़दूर से लेकर बादशाह तक सभी के साथ समान व्यवहार करते हुए उनकी सहायता की जाती थी। गुरू हरिकृष्ण जी ने भी यह कार्य उसी तरह जारी रखा। गुरू साहिब प्रतिदिन दवाखाने जाते और रोगियों को दवाई और आशीर्वाद देकर रोग दूर करते। इस प्रकार आप रोगियों का दर्द बांटते, जरूरतमंदों की सहायता करते और मुफ्त दवाइयाँ भी देते।

धीर मल्ल

राजनीतिक परिस्थितियों को आधार बनाकर गुरू हरिराय जी के बड़े भाई धीर मल्ल ने गुरू हरिराय जी द्वारा दारा शिकोह की सहायता करने सम्बन्धी औरंगज़ेब के पास चुगली की और गुरूगद्दी पर अपना अधिकार जताते हुए उससे सहायता मांगी। औरंगज़ेब ने गुरू हरिराय जी को दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा। गुरू साहिब जी ने संगत के साथ विचार–विमर्श उपरान्त मिलने से इंकार कर दिया। इस बात पर औरंगज़ेब नाराज़ हो गया। औरंगज़ेब ने अपने अति समीपी राजा जै सिंह के कहने पर विनम्रतापूर्वक पत्र लिखा। पत्र मिलने पर गुरू साहिब जी ने फिर संगत के साथ सलाह की और अपने बड़े पुत्र बाबा रामराय, जो उस समय 11 वर्ष के थे, को 14 घुड़सवारों के साथ दिल्ली भेजा।

गुरूगद्दी और जिम्मेवारियाँ

अपना अंतिम समय समीप अनुभव कर गुरू हरिराय जी संगत के विशाल समूह में सिंहासन से उठे और गुरू हरिकृष्ण जी को सिंहासन पर बिठाया और संगत को हुक्म दिया कि आज से अगले गुरू, गुरू हरिकृष्ण साहिब होंगे। 6 अक्तूबर 1661 ई. को गुरू हरिराय जी ज्योति जोत समा गए और गुरू हरिकृष्ण जी ने गुरूगद्दी की जिम्मेवारियों को संभाला। उस समय आप लगभग सवा पांच वर्ष के थे। सिक्खों के लिए यह बहुत ही कठिन परीक्षा का समय था। गुरू हरिकृष्ण जी की आयु छोटी थी, किन्तु सामने चुनौतियां बहुत थीं। धीरमल्ल और रामराय आदि दुश्मन बन चुके थे। स्वार्थी मसंद पैसे के लोभी हो गए थे। कम आयु और बड़ी बुद्धि कथन अनुसार गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने पहले गुरू साहिबान की तरह ही

सिक्ख समाज की अगवाई करते हुए गुरूगद्दी की जिम्मेवारियों को बखूबी निभाया। पहले की तरह ही झालर वाला चंदोआ सजाया जाता, दीवान लगाए जाते, कीर्तन की ध्वनि गूंजती, गुरबाणी की कथा होती, लंगर छकाया जाता। गुरू हरिराय जी के दरबार के 2200 घुड़सवार पहले की तरह ही गुरू दरबार में जगह जगह पहरा देते। अपने गुरू पिता की तरह ही आप मधुर भाषी और कोमल हृदय थे। आप पशु—पक्षियों से बहुत प्रेम करते, दीन—दुखियों का दर्द बांटते, समदृष्टि रखते हुए सभी के साथ समान व्यवहार और प्रेम करते।

दिल्ली जाना

औरंगज़ेब के निमंत्रण पर राजा जै सिंह का पत्र मिलते ही अगले ही दिन दिल्ली जाने की तैयारी शुरू हो गई। माता कृष्ण कौर जी, भाई मनी सिंह, भाई दयाला, भाई सती दास, भाई दरगाह मल्ल आदि शिरोमणि सिक्ख और बहु संख्या में संगत भी साथ जाने के लिए तैयार हो गई। रोपड़, कुराली, खरड़, बनूड़ आदि स्थानों पर ठहरते हुए सारा कारवाँ अम्बाला के गाँव पंजोखरा में पहुँचा। कश्मीर से संगत के आने की खबर सुनकर गुरू साहिब दो दिन के लिए वही रूक गए।

ब्राह्मण लाल चन्द का अहंकार दूर करना

पंजोखरा में गुरू जी पण्डित लाल चंद नामक एक अभिमानी विद्वान् का अहंकार एक भोले—भाले व्यक्ति छज्जू से तुड़वाया। पण्डित ने श्रीमद्भगवदगीता के जिन कठिन से कठिन श्लोकों का अर्थ पूछा छज्जू ने तुरंत ही उनका अर्थ बताया। लाल चन्द का अहंकार टूट गया। गुरू जी के चरणों में नतमस्तक हो क्षमा मांगने लगा। वर्तमान समय में इस स्थान पर गुरूद्वारा पंजोखरा साहिब सुशोभित है।

राजा जै सिंह के पास जाना

गुरू साहिब पंजोखरा से अंबाला, शाहबाद, कुरूक्षेत्र, पानीपत और सोनीपत से होते हुए दिल्ली पहुंचे। दिल्ली पहुँचने पर संगत ने गुरू जी का स्वागत किया। राजा जै सिंह आगे बढ़कर गुरू जी को लेने पहुंचा और उनके ठहरने की व्यवस्था अपने बंगले में की। गुरू उन सभी महिलाओं को जो रानी की तरह तैयार होकर बैठी थीं, को छोड़कर रानी की गोद में बैठ गए। रानी की आंखों से श्रद्धा अश्रु बहने लगे। आजकल इस स्थान पर गुरूद्वारा बंगला साहिब सुशोभित है।

गुरू जी का औरंगज़ेब को मिलने से इंकार करना

औरंगज़ेब गुरू जी से मिलने का इच्छुक था। परन्तु गुरू जी ने दर्शन देने से साफ मना कर दिया। बादशाह ने अपने पुत्र मुअज्जम को अनेक प्रकार के उपहार देकर गुरू जी के पास भेजा।

गुरू तेग बहादर जी के साथ मिलाप

जब गुरू तेग बहादर जी यात्रा पर थे तब गुरू हरिकृष्ण जी के दिल्ली में होने का पता चलते ही वे दिल्ली आ गए और तीन दिन तक गुरू हरिकृष्ण जी के पास राजा जै सिंह की हवेली में रहे। गुरू हरिकृष्ण जी के साथ गुरू तेग बहादर जी का यह पहला और आखिरी मिलाप था।

सेवा

जब गुरू हरिकृष्ण जी दिल्ली पहुंचे, उस समय दिल्ली में चेचक का रोग महामारी का रूप ले चुका था। चेचक छूत का रोग है। गुरू हरिकृष्ण जी ने इस महामारी से लोगों को बचाने के लिए दसवंध का अधिकांश हिस्सा लोगों की सेवा में लगा दिया। जरूरतमंदों को दवाइयाँ, कपड़े और खाने–पीने का समान देते। महामारी के कारण अधिक मौतें हो रही थीं गुरू जी ने उनके संस्कार का भी प्रबन्ध करवाया। महामारी प्रकोप से व्याकुल लोगों को सांत्वना देने के लिए गुरू जी उन इलाकों में भी जाते, जहां चेचक का प्रभाव ज्यादा था। गुरू जी घर–घर में जाकर रोगियों को सांत्वना देते और उनका उपचार करते।

अंतिम समय

महामारी के दौरान निरन्तर रोगियों के सम्पर्क में रहने, और उनकी सेवा करते रहने के कारण लगभग आठ वर्ष की आयु गुरू जी को चेचक के असाध्य रोग ने घेर लिया क्योंकि चेचक का रोग अधिकतर बच्चों को ही होता है।

गुरूगद्दी की घोषणा और ज्योति–जोत समा जाना

अपना अंतिम समय समीप देखकर गुरू हरिकृष्ण जी ने संगतों को हुक्म दिया 'बाबा बकाला' इसका अभिप्राय यह था कि उनके बाद गुरूगद्दी संभालने वाला महापुरुष बकाला में है और रिश्ते में हमारा बाबा है। मार्च 1664 ई. में आप ज्योति जोत समा गए। यमुना किनारे जिस स्थान पर आपका अंतिम संस्कार किया गया, वहां गुरूद्वारा बाला साहिब सुशोभित है।

उपदेश / सन्देश

गुरू हरिकृष्ण साहिब के जीवन–दर्शन में महान सेवा का संकल्प हमारे सामने आता है। गुरू जी ने बहुत ही छोटी आयु में रोगियों, दुखियों की सेवा करके एक अतुल्य दृष्टान्त पैदा किया। रोगियों का दुःख–दर्द बांटते और सेवा करते समय गुरू जी ने अपनी जान की परवाह नहीं की। इस प्रकार सेवा और समर्पण की मूर्ति श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब ने समस्त मानवता को लोक कल्याण और निस्वार्थ सेवा भावना का उपदेश दिया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी के पिता कौन थे ?

(क) गुरू हरिगोबिन्द जी (ख) गुरू हरिराय जी
(ग) बाबा गुरदित्ता जी (घ) बाबा राम राय जी

प्रश्न 2. किस राजा के कहने पर श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी दिल्ली गए ?

(क) राजा राम सिंह (ख) राजा जै सिंह
(ग) राजा शिवनाभ (घ) राजा बीरबल

प्रश्न 3. औरंगज़ेब के दरबार में कौन गया था ?

(क) राम राय (ख) गुरू हरिकृष्ण जी
(ग) धीर मल्ल (घ) अणी राय

प्रश्न 4. गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने गुरूगद्दी किस वर्ष में संभाली थी ?

(क) 1662 ई. (ख) 1661 ई.
(ग) 1663 ई. (घ) 1660 ई.

प्रश्न 5. गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने किस अभिमानी ब्राह्मण का अहंकार तोड़ा ?

(क) दूनी चन्द (ख) लाल चन्द
(ग) मोहकम चन्द (घ) हरि चन्द

प्रश्न 6. दिल्ली में गुरू हरिकृष्ण साहिब जी का कौन सा गुरूद्वारा सुशोभित है ?

(क)	सीस गंज	(ख)	बंगला साहिब
(ग)	मजनूं का टीला	(घ)	रकाब गंज साहिब

प्रश्न 7. श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने किन रोगियों की सेवा की?

(क)	कुष्ठ रोगी	(ख)	तपेदिक रोगी
(ग)	चेचक रोगी	(घ)	अपंग लोगों की

प्रश्न 8. अंतिम समय में गुरू हरिकृष्ण जी को कौन सा रोग हुआ था ?

(क)	चेचक	(ख)	तपेदिक
(ग)	बुखार	(घ)	कोई नहीं

प्रश्न 9. श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी का प्रकाश कब हुआ?

(क)	1652 ई.	(ख)	1660 ई.
(ग)	1656 ई.	(घ)	1650 ई.

प्रश्न 10. श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने किसे विद्वान् बनाया?

(क)	भाई दयाला जी	(ख)	दरगाह मल्ल
(ग)	छज्जू राम	(घ)	सूरज मल्ल

प्रश्न 11.आठवें गुरू साहिब जी कब ज्योति जोत समाए ?

(क)	1664 ई.	(ख)	1665 ई.
(ग)	1666 ई.	(घ)	1660 ई.

प्रश्न 12.गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने जहां ब्राह्मण लाल चन्द का अहंकार तोड़ा, वहां कौन सा गुरूद्वारा सुशोभित है?

(क)	बंगला साहिब	(ख)	सीस गंज साहिब
(ग)	पंजखोरा साहिब	(घ)	रकाब गंज साहिब

प्रश्न 13.श्री गुरू हरिकृष्ण जी का अंतिम संस्कार किस नदी के किनारे किया गया ?

(क) गंगा नदी (ख) सरस्वती नदी
(ग) यमुना नदी (घ) रावी नदी

प्रश्न 14.श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी का गुरू तेग बहादर जी के साथ मिलाप किस की हवेली में हुआ?

(क) लाल चन्द (ख) सूरज मल्ल
(ग) छज्जू राम (घ) जै सिंह

प्रश्न 15.गुरूगद्दी संभालते समय श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी की आयु कितनी थी ?

(क) चार (ख) दस
(ग) पांच (घ) सात

प्रश्न 16. श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता कृष्ण कौर (ख) माता साहिब कौर
(ग) माता गंगा जी (घ) माता दया कौर

प्रश्न 17. गुरू हरिकृष्ण साहिब जी के बड़े भाई का क्या नाम था?

(क) रविदास (ख) हरिराय
(ग) रामराय (घ) बाबा गुरदित्ता जी

प्रश्न 18. गुरू हरिकृष्ण साहिब जी ने किसे मिलने से इंकार किया था?

(क) छज्जू राम (ख) अकबर
(ग) औरंगज़ेब (घ) जै सिंह

प्रश्न 19. गुरू हरिकृष्ण साहिब जी जब ज्योति जोत समाए तब उनकी आयु कितनी थी ?

(क) पांच वर्ष (ख) चार वर्ष
(ग) तीन वर्ष (घ) आठ वर्ष

प्रश्न 20.श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी जहां ज्योति–जोत समाए वहां कौन सा गुरूद्वारा सुशोभित है?

(क) बाला साहिब (ख) सीस गंज

(ग) बंगला साहिब (घ) रकाब गंज साहिब

उत्तरमाला

उत्तरः—1.(ख) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख) 6. (ख) 7. (ग) 8 (क) 9. (ग) 10. (ग) 11. (क) 12. (ग) 13. (ग) 14. (घ) 15. (ग) 16. (क) 17. (ग) 18. (ग) 19. (घ) 20. (क)

श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी

जन्म

सिक्खों के नौंवे गुरू श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी का प्रकाश 1621 ई. को गुरू के महल, अमृतसर में हुआ।

माता–पिता

आपके पिता गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी और माता नानकी जी थे। आप गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के सबसे छोटे पुत्र थे।

विद्या प्राप्ति

पिता गुरू जी ने गुरू तेग बहादर जी की शिक्षा हेतु दो महान सिक्ख बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को नियुक्त किया। भाई गुरदास जी ने आपको धर्म के दार्शनिक पक्ष का अध्ययन करवाते हुए अन्य भाषाओं –फारसी, संस्कृत, ब्रज आदि में भी निपुण बनाया। आपके व्यक्तित्व में युद्ध और सैन्य कौशलों का विकास बाबा बुड्ढा जी ने किया।

त्याग मल्ल से तेग बहादर

करतारपुर में हुए युद्ध में आपने मात्र 14 वर्ष की आयु में मुग़लों का डट कर मुकाबला किया। सिक्ख परम्परा के अनुसार इस युद्ध के पश्चात् ही आपका नाम तेग बहादर रखा गया। इससे पहले आप का नाम त्याग मल्ल था।

विवाह

लखनौर के लाल चन्द ने अपनी पुत्री के रिश्ते के लिए गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के समक्ष प्रार्थना की तो गुरू जी ने रिश्ता स्वीकार कर लिया और 1633 ई. में गुरू तेग बहादर जी का विवाह माता गुजरी के साथ करतारपुर में सम्पन्न हुआ।

बाबा बकाला

1664 ई. में आठवें गुरू साहिब जी ने ज्योति जोत समाने से पहले गुरूगद्दी के उत्तराधिकारी का संकेत 'बाबा बकाला' कहकर दिया भाव अग्रिम गुरू बाबा बकाला में है। उन्होंने अपने एक सिक्ख प्रेमी दुर्गा मल्ल जी को एक नारियल और पांच पैसे देकर बकाला भेजा। श्री गुरू हरिकृष्ण जी के वचन 'बाबा बकाला' कहने से नौवें गुरू का चुनाव हो गया और सिक्ख संगत ने जैसे ही इस दिव्य वचन को सुना तो वह 'बकाला' की ओर चल पड़ी। किन्तु साथ ही साथ गुरूगद्दी के दावेदार बनकर सोढी परिवारों ने बकाला में डेरा लगा लिया और स्वयं को नानक गुरूगद्दी के वारिस कहने लगे। इनमें सबसे अधिक दावेदारी करना वाला व्यक्ति धीरमल्ल था। उसके दावे के मज़बूत होने कारण एक कारण यह भी था कि उसके पास 'आदि बीड़' का स्वरूप था। संगत के सामने संकट खड़ा हो गया कि गुरूगद्दी के असली उत्तराधिकारी का निर्णय कैसे किया जाए। इन सबसे से निर्लेप गुरू तेग बहादर जी एक भोरे में नाम–सिमरन में लीन रहते।

मक्खण शाह लबाणा

मक्खन शाह लबाणा एक अमीर व्यापारी था। उसका व्यापार देश–विदेश में फैला हुआ था। एक समुद्रीय जहाज़ उसकी निजी सम्पत्ति था। एक बार जब वह व्यापार करके वापिस हिन्दुस्तान जा रहा था तब उसका जहाज़ समुद्रीय तूफान में फंस गया। जब बचाव की कोई उम्मीद न रही तो उसने गुरू साहिब का ध्यान करते हुए अरदास की कि यदि जहाज़ पार उतर गया तो वह नानक घर को पांच सौ मौहरे भेंट करेगा। बख्शिश हुई जहाज़ किनारे जा लगा। मक्खन शाह सीधा 'बकाला' पहुंचा, किन्तु वहां का माहौल देखकर बहुत हैरान हुआ। एक के बाद एक 22 मंजीआं लगाकर अपनी पूजा करवा रहे थे। उसने सोचा कि प्रत्येक के समक्ष पांच मोहरे रखकर माथा टेकेगा जो असली गुरू होगा वह स्वयं ही

पांच सौ मोहरे मांग लेगा किन्तु किसी ने भी पांच सौ मोहरे न मांगी। बेबसी के माहौल में उसने अन्य गुरू के बारे में पूछा, भोरे की ओर संकेत मिला। वहां पहुंच कर वही प्रक्रिया दोहराई, पांच मोहरे रखकर आशा भरे मन से 'तेग बहादर' जी की ओर देखा। किन्तु न तो सामने से आँख खुली और न कोई शब्द कानों ने सुना। उदास मन से वापिस जाने के लिए जैसे ही मुड़ा, उसी समय ये वचन कानों में पड़े ''शाह जी पांच या पांच सौ।'' कानों में मिश्री घुल गई, आखों से नीर बहने लगा। वह खुशी से उछल कर 'भोरे' की छत पर चढ़ गया और 'गुरू लाधो रे', 'गुरू लाधो रे' बोलने लगा। संगतें भोरे की ओर दौड़ चली, भोरे के सामने तिल फेंकने जितनी भी जगह खाली नहीं थी।

गुरूगद्दी

दीवान दुर्गा मल्ल जी, भाई गुरदित्ता जी, माता नानक जी, गुजरी जी और सारी संगत खुशी में झूम रही थी और मक्खनशाह अभी भी 'गुरू लाधो रे' इन वचनों द्वारा सबके मन को सुख दे रहा था। पातशाह बाहर आए, मुख मक्खन शाह की ओर करके कहा, शाह जी आ जाओ आपकी सेवा सम्पूर्ण हुई। माता नानकी जी का संकेत मिलते ही दीवान दुर्गा मल्ल जी उठे और हाथ में नारियल, पांच पैसे लेकर भाई गुरदित्ता जी की ओर देखते हुए कहा, सेवा निभाओ। गुरूगद्दी का तिलक लगाकर भाई गुरदित्ता जी बहुत खुश हुए और अब नौवें पातशाह थे, 'श्री गुरू तेग बहादर जी'।

गुरू तेग बहादर जी की प्रचार यात्राओं का प्रारम्भ

गुरूगद्दी प्राप्ति के उपरान्त गुरू जी ने बाबा बकाला से सिक्खी का प्रचार करने का निर्णय लिया। यहां से आप खडूर साहिब, गोइंदवाल और तरनतारन होते हुए अमृतसर गए जहां हरिमन्दिर साहिब पर पृथी चन्द के घराने के कब्जा किया हुआ था। उन्होंने गुरू जी को गुरूद्वारा साहिब के अन्दर जाने नहीं दिया। यहां से गुरू जी कीरतपुर साहिब की ओर चल दिए और रास्ते में अनेक स्थानों पर सिक्खी का पौधा लगाते गए। कीरतपुर साहिब पहुंच कर गुरू जी ने ठहराव किया।

सिक्ख परम्परा अनुसार गुरू साहिब ने दो गांव माखोवाल और मथौर खरीदे। इन दोनों गांवों को मुसलमान भाइयों ने बसाया था। कहते हैं कि यह ज़मीन श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी ने राजा बिलासपुर से खरीदी थी।

चक्क नानकी / आनन्दपुर नगर बसाना

गुरू जी ने बहुत ही सोच–विचार के बाद इस नगर की स्थापना की थी। एक तो यह कि यह स्थान प्रसिद्ध मन्दिर नैना देवी के समीप था, दूसरे कीरतपुर साहिब से इसकी दूरी 8 किलोमीटर थी जहां गुरू साहिब का परिवार रहता था। सुन्दर रमणीय पर्वतों और सतलुज किनारे होने के कारण गुरू जी यहां नगर की स्थापना की और माता नानकी जी की याद में इस नगर का नाम 'चक्क नानकी' रखा। थोड़े ही समय में चक्क नानकी नगर में रौनकें लग गई। भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं कि एक दिन गुरू साहिब ने चक्क नानकी नगर के दोनों और देखा तो एक ओर पर्वतीय श्रेणी पत्थरों सहित फैली हुई थी और दूसरी ओर सतलुज दरिया को सुन्दर दृश्य देखा। इस स्थान के आनन्दमयी होने के कारण गुरू साहिब जी ने इस नगर का नाम 'आनन्दपुर' रख दिया।

वर्तमान पंजाब, हरियाणा में प्रचार यात्राएँ

आनन्दपुर साहिब में नगर की स्थापना करके गुरू साहिब जी ने सिक्खी प्रचार का दूसरा पड़ाव शुरू किया। गुरू जी की यह प्रचार यात्रा मालवा की तरफ थी। डॉ. किरपाल सिंह अनुसार, पंजाब में आनन्दपुर साहिब से चलकर गुरू जी ने रोपड़, फतहगढ़ साहिब, पटियाला, संगरूर, बरनाला, मानसा, बठिण्डा के गांवों में प्रचार किया। तलवण्डी साबो से गुरू जी धमधान साहिब (जींद) गए। धमधान साहिब से कैथल, कुरूक्षेत्र, थानेसर होते हुए पूर्व की ओर गए।

पूर्व की ओर प्रचार यात्रा

गुरू जी का प्रचार क्षेत्र पूर्व का इलाका था। सबसे पहले गुरू जी कड़ा माणकपुर पहुंचे, जो आज के उत्तर प्रदेश का प्रमुख शहर है। इस इलाके को धन्य करते हुए गुरू जी मथुरा, अयोध्या होते हुए इलाहाबाद पहुंचे। फिर आगे प्रयाग से काशी (बनारस) पहुंचे। काशी से गुरू जी ससराम पहुँचे। ससराम से गंगा तट पर बसे हिन्दुओं के पवित्र स्थान 'गया' में पहुँचे यहां के पण्डितों के साथ गुरू पातशाह का प्रवचन हुआ। गुरू जी ने उनके पाखण्डों सम्बन्धी लोगों को जागरूक करते हुए समझाया कि मुक्ति का एकमात्र मार्ग 'नाम–सिमरन' है। फिर 'गया' से चलकर गुरू जी पटना साहिब पहुंचे। पटना साहिब में गुरू जी दो महीने तक रहे। पटना साहिब से आगे मुंगेर, भागलपुर, मालंदा होते हुए गुरू जी ढाका पहुंचे। औरंगज़ेब ने मीर जुमला को आसाम पर कब्जा करने के लिए भेजा किन्तु मीर जुमला मारा जाता है। औरंगज़ेब द्वारा आसाम न

जीत पाने का प्रमुख कारण आसाम स्त्रियों का जादू–टोने में कुशल होना था। अपनी इस पराजय का बदला लेने के लिए औरंगज़ेब राजा राम सिंह को सेना सहित आसाम जाने के लिए कहता है। राजा राम सिंह बहुत ही सम्मान और प्रेम पूर्वक गुरू जी से साथ चलने के लिए अनुरोध करता है। गुरू जी यह सोचकर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं कि वहां सिक्खी का प्रचार हो जाएगा दूसरे गुरू नानक देव जी के प्रचार क्षेत्र असाम के इलाके धूबड़ी में जाने का मन गुरू साहिब पहले ही बना लिया था। राजा राम सिंह ने औरंगज़ेब से कहा कि वह गुरू तेग बहादर जी को आसाम अभियान पर साथ लेकर जाना चाहता है। इस समय वह पटना में हैं, मैं पटना में ही उन्हें मिल लूंगा। यहां पहुंच कर गुरू जी ने कामरूप के राजा को समझाया और राजा राम सिह को अकेले ही राज्य में बुलाकर समझौता करवा दिया।

आनन्दपुर साहिब वापिस जाना

इस यात्रा के बाद गुरू जी वापिस लखनौर आ गए। यहां से दिल्ली गए और राजा राम सिंह के परिवार को आश्वासन दिया कि राजा ठीक है और विजयी होकर वापिस आ रहा है। औरंगज़ेब ने सोचा कि गुरू तेग बहादर जी में जरूर कोई शक्ति है जो उसने आसाम के राजा के साथ समझौता करवा दिया। वह गुरू जी को मुसलमान बनाना चाहता था। इसी कारण उसने गुरू जी पर निगरानी कड़ी कर दी। इधर गुरू जी आनन्दपुर साहिब आ गए। गुरू जी का परिवार पटना से लखनौर आ गया था। गुरू जी ने संदेश भेजकर उन्हें आनन्दपुर साहिब बुला लिया।

श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी की यात्राएँ (पहला पड़ाव)

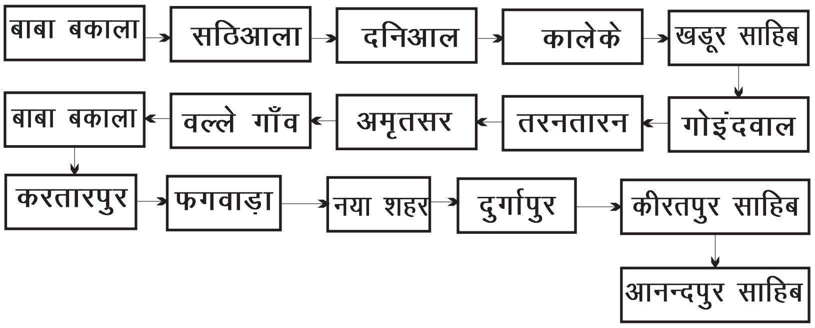

श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी की यात्राएँ (दूसरा पड़ाव)

आनन्दपुर साहिब → भरतगढ → ढूगरी → घडूंआ → रैलो → नौलख्खा → टहिलपुर → उगाणी → बहादरगढ़ → पटियाला → बीबीपुर खुरद → करहाली → लहरा → मकरोड़ साहिब → सेखा (बरनाला) → हडिआईआ → अलीशेरकला (मानसा) → कोट धरमू → तलवण्डी साबो → धमधान साहिब → कैथल → बणी बदरपुर → बारना → कुरूक्षेत्र → थानेसर

श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी की पूर्व की यात्रा

कड़ा माणकपुर → अयोध्या → इलाहाबाद → काशी → ससराम → गया → पटना → मुंगेर → भागलपुर → ढाका → धुबड़ी (आसाम) → लखनौर → आनन्दपुर साहिब

कश्मीरी पण्डितों की फरियाद सुनना

बादशाह औरंगज़ेब हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना रहा था। यदि कोई हिन्दू मुसलमान बनने से मना करता तो उसे मृत्यु दण्ड दिया जाता। कश्मीरी पण्डितों को भी बुलाया गया और कहा कि बादशाह का हुक्म है आप सभी को मुसलमान बनाया जाए। यदि नहीं मानते तो इन पर सख्ती की जाए। कश्मीरी पण्डितों ने सोचा कि अब क्या किया जाए। किसी ने सलाह दी कि इस समय गुरू तेग बहादर जी ही आपकी सहायता कर सकते हैं। कश्मीरी पण्डित गुरू जी के पास गए और निवेदन किया कि औरंगज़ेब उन्हें बलात् मुसलमान बना कर उनका धर्म बदलना चाहता है। हमारी सहायता कीजिए। गुरू तेग बहादर जी ने सोच–विचार और गोबिन्द राय जी से चर्चा के बाद पण्डितों से कहा, जाओ, जाकर औरंगज़ेब से कहो कि यदि गुरू तेग बहादर जी मुसलमान बन जाएं तो कश्मीरी पण्डित स्वयं ही मुसलमान बन जायेंगे।'

गुरूगद्दी और दिल्ली की ओर प्रस्थान

गुरू जी ने गोबिन्द राय को गुरूगद्दी सौंपी और दिल्ली चले गए। उनके साथ तीन सिक्ख भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दिआला जी भी गए। लगभग 4 महीने की यात्रा के पश्चात् गुरू जी दिल्ली पहुंचे।

शहादत

दिल्ली में गुरू जी को इस्लाम कबूल करवाने के लिए औरंगेज़ेब ने हर सम्भव प्रयास किए। गुरू जी के सामने उनके तीन सिक्खों भाई मतीदास जी, भाई सती दास जी, भाई दिआला जी को सख्त यातनाएँ देकर शहीद कर दिया गया। न तो गुरू जी डांवाडोल हुए और न ही उनके सिक्ख। उन्होंने उस अकाल पुरख की रज़ा को स्वीकार किया। गुरू जी द्वारा इस्लाम कबूल न करने पर 1675 ई. को दिल्ली के चांदनी चौंक में गुरू जी का शीश धड़ से अलग कर उन्हें शहीद कर दिया गया। आज पूरा विश्व गुरू जी को 'हिन्द की चादर' कहकर नतमस्तक होता है। गुरू जी के शीश को भाई जैता जी संभाल कर आनन्दपुर ले आए। दिल्ली में ही गुरू जी का सिक्ख भाई लखी शाह बनजारा गुरू जी के धड़ को अपने घर ले गया और पूरे घर को आग लगाकर संस्कार कर दिया।

बाणी रचना और संदेश

गुरू तेग बहादर जी के उच्च रूहानी व्यक्तित्व के दर्शन उनके जीवन में घटित घटनाओं, कर्मों और बाणी में सहज ही होते हैं। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में उनकी बाणी के 59 शब्द, 57 श्लोक 15 रागों में दर्ज हैं। उनकी बाणी के विषय में कह सकते हैं–

1. गुरू जी की सम्पूर्ण बाणी का मुख्य विषय मोह–माया और विकारों में ग्रस्त मनुष्य को सांसारिक पदार्थों तथा सम्बन्धों की नश्वरता का बोध करवाकर अकाल पुरख के नाम के साथ जोड़ना है।
2. गुरू तेग बहादर जी की वाणी वैराग्य और सांसारिक नश्वरता की ओर केन्द्रित है परन्तु उनकी पवित्र वाणी में परमसत्ता, मनुष्य, जगत, नाम, जीवन मुक्ति, माया, मन, विषय विकार, अहम् का त्याग आदि के स्वरूप को भी दर्शाया गया है। इस प्रकार गुरू पातशाह की समस्त वाणी के अध्ययन के पश्चात् जो तथ्य हमारे सामने आता है, वो ये है कि इनकी वाणी मनुष्य को आदर्श मनुष्य बनाने की ओर केन्द्रित है।
3. गुरू जी बताते हैं कि जो मनुष्य लोभ, मोह, माया, विषय विकारों

से मुक्त रहता हुआ, सुख–दुःख को एक समान समझता है, स्वर्ग–नरक, विष–अमृत, प्रशंसा और निन्दा को महत्व नहीं देता और सम भाव रखता है, वही वास्तव में ज्ञानी है। आदर्श मनुष्य का सर्वोत्तम दृष्टान्त यही है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू तेग बहादर जी का जन्म किस पातशाह के घर हुआ?

(क) सातवें (ख) छठे
(ग) पांचवें (घ) दूसरे

प्रश्न 2. गुरू तेग बहादर जी का प्रारम्भिक नाम क्या था?

(क) जेठा जी (ख) त्याग मल्ल जी
(ग) गुरदित्ता (घ) बहादर साहिब

प्रश्न 3. किस युद्ध में आपने मुगलों का साहसपूर्वक मुकाबला किया?

(क) कीरतपुर (ख) अमृतसर
(ग) करतारपुर (घ) आनन्दपुर साहिब

प्रश्न 4. गुरू तेग बहादर जी की सुपत्नी का क्या नाम था?

(क) नानकी जी (ख) गुजरी जी
(ग) भागो जी (घ) दानी जी

प्रश्न 5. किस सिक्ख ने गुरू तेग बहादर जी के आगे अरदास की कि उसका डूबता जहाज़ किनारे लगा दें?

(क) भाई लक्खी शाह (ख) भाई जैता जी
(ग) भाई मक्खण शाह (घ) भाई मती दास

प्रश्न 6. गुरू तेग बहादर जी ने किस नगर की स्थापना की?

(क) कहिलूर (ख) चक्क नानकी
(ग) रोपड़ (घ) तरनतारन

प्रश्न 7. गुरू तेग बहादर जी पूर्व की ओर किस प्रदेश की यात्रा पर गए?

(क)	अरुणाचल प्रदेश	(ख)	आसाम
(ग)	मीआंमार	(घ)	लंका

प्रश्न 8. कश्मीरी पण्डित किस गुरू के पास अपनी फरियाद लेकर गए?

(क)	श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी	(ख)	श्री गुरू अर्जुन देव जी
(ग)	श्री गुरू तेग बहादर जी	(घ)	श्री गुरू नानक देव जी

प्रश्न 9. गुरू तेग बहादर जी को किस मुग़ल बादशाह ने शहीद किया?

(क)	शाहजहां	(ख)	औरंगज़ेब
(ग)	बहादरशाह	(घ)	जहांगीर

प्रश्न 10.श्री गुरू तेग बहादर जी ने कहां शहादत प्राप्त की?

(क)	लाहौर	(ख)	दिल्ली, चांदनी चौंक
(ग)	सरहिन्द	(घ)	फतहगढ़ साहिब

प्रश्न 11.गुरू तेग बहादर जी का जन्म कहां हुआ?

(क)	करतारपुर	(ख)	कीरतपुर
(ग)	अमृतसर	(घ)	तरनतारन

प्रश्न 12. गुरू तेग बहादर जी का प्रकाश कब हुआ?

(क)	1621 ई.	(ख)	1630 ई.
(ग)	1645 ई.	(घ)	1605 ई.

प्रश्न 13.गुरू तेग बहादर जी की माता का क्या नाम था?

(क)	माता गुजरी जी	(ख)	माता नानकी जी
(ग)	माता दानी जी	(घ)	माता भानी जी

प्रश्न 14.गुरू तेग बहादर जी ने सैन्य गुण और युद्ध कौशल किससे प्राप्त किए ?

(क)	भाई गुरदास जी	(ख)	भाई मतीदास जी
(ग)	भाई जैता जी	(घ)	बाबा बुड्ढा जी

प्रश्न 15.किस गुरू साहिबान को हिन्दी की चादर कहते हैं ?

(क) श्री गुरू तेग बहादर जी (ख) श्री गुरू अर्जुन देव जी

(ग) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (घ) श्री गुरू नानक देव जी

प्रश्न 16. श्री गुरू तेग बहादर जी को कब शहीद किया गया ?

(क) 1670 ई. (ख) 1607 ई.

(ग) 1675 ई. (घ) 1672 ई.

प्रश्न 17.गुरू तेग बहादर जी का शीश दिल्ली से आनन्दपुर कौन लेकर आया ?

(क) भाई लक्खी शाह (ख) भाई मती दास

(ग) भाई जैता जी (घ) भाई मक्खण शाह

प्रश्न 18. गुरू तेग बहादर जी के पास फरियाद कौन लेकर गए थे ?

(क) पण्डित (ख) सिक्ख

(ग) मुसलमान (घ) ईसाई

प्रश्न 19. गुरू तेग बहादर जी के सुपुत्र का क्या नाम था ?

(क) श्री गुरू अंगद देव जी (ख) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी

(ग) श्री गुरू अर्जुन देव जी (घ) श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी

प्रश्न 20. श्री गुरू तेग बहादर जी के साथ दिल्ली कितने सिक्ख गए थे ?

(क) एक (ख) तीन

(ग) दो (घ) चार

उत्तरमाला

उत्तरः—1. (ख) 2. (ख) 3.(ग) 4. (ख) 5.(ग) 6.(ख) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ख) 11. (ग) 12. (क) 13. (ख) 14. (घ) 15. (क) 16. (ग) 17 (क) 18. (क) 19. (ख) 20. (ख)

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी

जन्म

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी सिक्ख धर्म के दसवें गुरू हैं। आपका प्रकाश 22 दिसम्बर 1666 ई. को पटना साहिब (बिहार) में हुआ।

माता–पिता

गुरू गोबिन्द सिंह जी के पिता सिक्ख धर्म के नौंवे गुरू श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी और माता गुजरी जी थे। जिस समय गुरू जी का जन्म हुआ उस समय गुरू तेग बहादर साहिब जी ढाका (बंगाल) में थे।

बचपन

गुरू गोबिन्द सिंह जी के बचपन के पहले 5 वर्ष पटना साहिब में व्यतीत हुए। घुड़सवारी, धनुष कला और शस्त्र कौशलों के प्रशिक्षण के साथ–साथ गुरमुखी और गुरबाणी की शिक्षा भी चलती रही। आप अपने मित्रों को दो समूहों में बांट कर परस्पर युद्ध करवाते। उन्हें युद्ध की रणनीतियाँ और योजनाएं सिखाते रहते।

आनन्दपुर साहिब आना

आसाम से आते हुए श्री गुरू तेग बहादर जी ने परिवार को पंजाब आने का संदेश भेजा। माता गुजरी जी परिवार सहित पंजाब की ओर चल पड़ी। दानापुर, बकसर, आरा, छोटा, मिराजपुर, बनारस, पराग, लखनऊ,

मथरा, थानेसर, सहारनपुर आदि स्थानों और तीर्थों से होते हुए 1672 ई. में सारा परिवार लखनौर में कुछ समय रूककर आनन्दपुर साहिब पहुंचा।

विद्या

गोबिन्द राय जी की संस्कृत और फारसी की शिक्षा के लिए आनन्दपुर साहिब में पाठशाला और मदरसे का प्रबन्ध किया गया। पाठशाला का प्रबन्ध मुंशी साहिब चन्द और मदरसे का प्रबन्ध पीर मुहम्मद साहिब किया करते थे। गुरमुखी और बहुत सारी गुरबाणी आप पहले ही माता जी से पढ़ चुके थे। मुंशी साहिब ने भी आपको गुरबाणी सम्बन्धी ज्ञान दिया। संस्कृत के ज्ञान के लिए पण्डित कृपा राम की सहायता ली गई। काज़ी पीर मुहम्मद जी ने आपको कुरान शरीफ पढ़ाया। इसके अतिरिक्त आपने शस्त्र विद्या और घुड़सवारी भी सीखी।

गुरूगद्दी

जब कश्मीरी पण्डित श्री गुरू तेग बहादर जी के पास फरियाद लेकर आए तब गोबिन्द राय जी ने अपने पिता श्री गुरू तेग बहादर जी से कहा कि आपसे बड़ा कौन हो सकता है जो हिन्दू धर्म की रक्षा कर सके। आनन्दपुर से चलने से पहले गुरू तेग बहादर जी ने हुक्म दिया कि मेरे बाद गुरूगद्दी की जिम्मेवारी गोबिन्द राय जी संभालेंगे। इस समय गुरू गोबिन्द सिंह जी की आयु 9 वर्ष थी।

विवाह

गुरू जी का पहला विवाह 1677 ई. में लाहौर निवासी हरिजस की सुपुत्री जीतो जी के साथ आनन्दपुर के उत्तर में स्थित गुरू का लाहौर में हुआ। माता जीतो जी ने बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतह सिंह जी को जन्म दिया। गुरू जी का दूसरा विवाह लाहौर निवासी श्री रामशरण की पुत्री, माता सुन्दरी जी के साथ 1684 ई. में हुआ। इन्होंने बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंह जी को जन्म दिया। गुरू जी का तीसरा विवाह रूहतास ज़िला जेहलम के निवासी रामू बस्सी खत्री की सुपुत्री, माता साहिब देवां के साथ 1700 ई. में हुआ। अमृत छकने के पश्चात् आप माता साहिब कौर बने और गुरू साहिब ने आपको 'खालसा की माता' होने का खिताब दिया।

खालसा पंथ की स्थापना

गुरू गोबिन्द सिंह जी के जीवन का मूल उद्देश्य था सामान्य जन को अत्याचार, अन्याय, कपट और ज़ुल्म का जवाब देने अर्थात् अत्याचारियों का सामना करने में सक्षम बनाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसी बलिदानी कौम के सृजन की आवश्यकता थी, जो अत्याचारी को ललकार सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरू साहिब जी ने केसगढ़ साहिब (श्री आनन्दपुर साहिब) में 1699 ई. को वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की स्थापना की। केसगढ़ साहिब स्थान पर संगतों के विशाल समूह में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने नंगी तलवार लेकर सिक्ख के शीश की मांग की। लाहौर निवासी दया राम (खत्री) ने आपके हुक्म की पूर्ति के लिए स्वयं को पेश किया। गुरू जी उसे अन्दर तम्बू में ले गए। इसके बाद गुरू जी ने बारी–बारी चार और शीश की मांग की। भाई दया राम के बाद हस्तिनापुर के निवासी भाई धर्म दास (जाट), जगन्नाथ पुरी निवासी भाई हिम्मत राय (झिऊर) द्वारका निवासी भाई मोहकम चन्द (छींबा) और बिदर निवासी भाई साहिब चन्द (नाई) ने क्रम से अपने शीश भेंट किए। सभी के साथ वही प्रक्रिया दोहराई गई। कुछ समय पश्चात् गुरू जी इन पांचों सिक्खों जिन्होंने सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे, को साथ लेकर संगत के सामने आए। फिर गुरू जी ने सर्वलोहे के बाटे (बर्तन) में जल लेकर पांच बाणियों (जपु जी, जापु साहिब, त्वप्रसादि सवेयै, चौपई साहिब और आनन्द साहिब) का पाठ करते हुए लोहे के खंडे को इस जल में घुमाते हुए अमृत तैयार किया। इस स्वच्छ जल में मिठास के लिए पताशे डाले और पांचों सिक्खों को एक ही बाटे में अमृत छकाया। फिर उन सभी के नाम के साथ सिंह शब्द लगाकर (भाई दया सिंह, भाई धर्म सिंह, भाई हिम्मत सिंह, भाई मोहकम सिंह, भाई साहिब सिंह) 'पांच प्यारे' की उपाधि बख्शिश करते हुए जाति–पाति का भेदभाव ही मिटा दिया। गुरू साहिब ने खालसा की मर्यादा को दृढ़ रखने के लिए जाति भेदभाव को भूलकर एक अकाल पुरख के साथ जुड़ने, पांच ककार धारण करने और नाम–सिमरन करने रहने का उपदेश दिया। चार वर्जित कुरहतों केशों का अपमान, जूठा खाना, पर स्त्री या पर पुरुष गमन और तम्बाकू या नशा सेवन से दूर रहने का हुक्म दिया। पांच प्यारों को अमृत पान

कराने के बाद गुरू जी ने इनसे अपने लिए अमृत का दान मांग कर 'आपे गुरू आपे चेला' का विलक्षण दृष्टान्त पेश किया और गुरू 'गोबिन्द राय' से गुरू 'गोबिन्द सिंह' बन कर खालसा पंथ का हिस्सा बने। इस प्रकार गुरू गोबिन्द सिंह जी ने गुरू नानक साहिब के उद्देश्य को पूरा करते हुए दैवीय कौतुक द्वारा खालसा पंथ प्रकट करने का कार्य किया।

गुरू गोबिन्द सिंह जी द्वारा किए युद्ध

अपने जीवन काल में गुरू जी कई युद्ध किए और विजय प्राप्त की। यह युद्ध दलित, विवश और दबे–कुचले लोगों को उनका अधिकार दिलवाने और विदेशी राज्य के उन्मूलन हेतु किए गए।

भंगाणी का युद्ध

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने सबसे पहला युद्ध भंगाणी का युद्ध 1688 ई. में किया। इस युद्ध में गुरू जी के शत्रु राजा भीम चन्द कहलूरिआ, कृपाल चन्द कटोचिआ, हरि चन्द जसवालिआ, सुखदिआल जसरोटीआ, केसरी चन्द हंडूरीआ, पृथी चन्द ढडवालिआ और फतह चन्द गढ़वालिआ थे। गुरू जी की बूआ बीबी वीरो जी के पांच पुत्र भी गुरू जी के साथ थे। मामा कृपाल, नन्द चन्द, जो दीवान थे,, साहिब चन्द, पुरोहित दया राम आदि सहित गुरू जी के पास लगभग पांच हज़ार सैनिक थे और पहाड़ी राजाओं की सेना बहुत अधिक थी। यह युद्ध यमुना और गिरी नदी के किनारे तीन दिन तक चला। अंततः गुरू जी ने राजा हरि सिंह को मार दिया और बाकी राजाओं की सेना मैदान छोड़कर भाग गई। इस युद्ध में बीबी वीरो जी के दो पुत्र और पीर बुद्धु शाह के दो पुत्र शहीद हो गए। गुरू जी ने पीर को दसतार, कंघा, किरपान और हुक्मनामा देकर सम्मानित किया। गुरू जी आनन्दपुर वापिस चले गए। रास्ते में कोटला शहर के पठानों ने आपकी बहुत सेवा की। गुरू जी ने इन्हें एक तलवार बख्शिश की। आनन्दपुर साहिब पहुंच कर गुरू जी ने युद्ध की तैयारियां जारी रखी और शहर की सुरक्षा के लिए चार किले आनन्दगढ़, लोहगढ़, फतहगढ़ और केसगढ़ बनवाए।

नदौण का युद्ध

औरंगज़ेब ने पहाड़ी राजाओं से टैक्स वसूल करने के लिए मीआं खान फौजदार को भेजा, आगे उसने अपने भतीजे अलफ़ खान को भेज

दिया। राजाओं ने गुरू जी से सहायता मांगी। गुरू जी ने राजाओं की पिछली गलतियों को क्षमा करते हुए उनकी सहायता की। इस युद्ध में मुगलों की हार हुई।

गुलेर का युद्ध

भीम चन्द कहलूरिआ, कृपाल चन्द कटोचिआ तथा अन्य कई राजाओं ने हुसैनी से हाथ मिला लिया। सबसे पहले उन्होंने गुलेर पर हमला किया। गुलेरी लोगों की गुजारिश पर गुरू जी ने भाई संगतीए जी के निर्देशन में सिक्खों का एक समूह सहायता हेतु भेजा। हुसैनी, किरपाल चन्द कटोचिआ और कुछ पहाड़ी सरदार इस युद्ध में मारे गए। सेना में भगदड़ मच गई। राजा भीम चन्द ने भी भाग कर अपनी जान बचाई। इस युद्ध में भी गुरू साहिब की जीत हुई। इस युद्ध के बाद लगभग पांच वर्ष तक अमन–शांति का माहौल बना रहा। इस समय में गुरू जी खालसा पंथ की स्थापना और सिक्ख धर्म के निर्माण के लिए अनेक कार्य किए और खालसा पंथ की सृजना कर पूरी सिक्ख जाति को शस्त्रधारी बना दिया। जिसके बारे में पहले भी चर्चा की जा चुकी है।

आनन्दपुर साहिब का युद्ध

खालसा स्थापना के बाद पहाड़ी राजा घबरा गए। वे लोग सिक्खों में गुरू साहिब बढ़ती लोकप्रियता और उनकी सैन्य कार्यवाहियों को स्वयं के लिए खतरा समझने लगे थे। खालसा के सिद्धान्त भी पहाड़ी राजाओं के धर्म के विरुद्ध थे। राजा भीम चन्द और कुछ अन्य पहाड़ी सेनाओं ने 1701 ई. में आनन्दपुर साहिब को चारों ओर से घेर लिया और दुर्ग के अन्दर रसद–पानी पहुंचाने के सभी रास्ते बंद कर दिए। गुरू साहिब ने अपने कम सैनिक होते हुए भी किले के अन्दर से ही शत्रुओं का डट कर मुकाबला किया।। साहिबज़ादे अजीत सिंह जी ने जिसकी आयु उस समय लगभग 14–15 वर्ष थी, बहादुरी से मुकाबला किया और शत्रु सेना को बहुत नुकसान पहुंचाया। युद्ध कई दिनों तक चलता रहा। पहाड़ी राजाओं को जब सफलता की कोई उम्मीद न दिखाई दी तो उन्होंने लड़ाई बंद करके गुरू साहिब के साथ समझौता करने का निर्णय लिया। गुरू जी आनन्दपुर साहिब से कीरतपुर से आगे लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर बसे निर्मोह नामक गांव में चले गए।

निर्मोह का युद्ध

गुरू साहिब के निर्मोह पहुंचने पर 1702 ई. के शुरू में ही निर्मोह पर एक ओर से भीम चन्द की सेना और दूसरी तरफ से मुग़ल सेना ने हमला कर दिया। गुरू गोबिन्द सिंह जी और उनके सिक्ख युद्ध के लिए तैयार थे। इस युद्ध में आसपास के गुज्जरों ने भी आक्रमणकारियों का साथ दिया। सिक्खों ने बहुत ही बहादुरी से शत्रुओं का सामना किया। एक दिन और एक रात तक युद्ध होता रहा। अंत में सिक्खों ने दुश्मनों को बुरी तरह हराया और भागने के लिए विवश कर दिया। अब गुरू साहिब ने अपने सिक्खों सहित निर्मोह छोड़कर बसोली जाने का निर्णय लिया।

बसौली का युद्ध

सतलुज नदी को पार करके गुरू साहिब और उनके सिक्ख बसौली चले गए। कहते हैं कि बसौली के राजा ने उन्हें अपने पास आने का निमंत्रण भेजा था। राजा भीम चन्द ने गुरू साहिब का पीछा करने के लिए सेना भेजी किन्तु सिक्खों ने उन्हें हरा दिया। बसौली का युद्ध जीतने के पश्चात् सिक्खों ने भीम चन्द के इलाकों पर आक्रमण शुरू कर दिया। कलमोट किले को जीत कर वे आनन्दपुर के समीप आ गए। यहां अपनी सैन्य शक्ति को ओर अधिक मज़बूत करते हुए आनन्दपुर किले का पुनः निर्माण करवाया।

आनन्दपुर साहिब में दूसरा युद्ध

पहाड़ी राजाओं ने ईर्ष्या वश गुरू साहिब के विरुद्ध एक जुट होकर उन्हें आनन्दपुर साहिब छोड़ने के लिए कहा। गुरू साहिब ने कोई उत्तर नहीं दिया और आनन्दपुर साहिब में रक्षा प्रबन्ध शुरू कर दिए। पहाड़ी राजाओं की सेनाओं ने आनन्दपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। गुरू साहिब ने अपने बहादुर सिक्खों के साथ पहाड़ी राजाओं को एक बार फिर पराजित कर वापिस जाने के लिए मज़बूर कर दिया। अब भीम चन्द और अन्य पहाड़ी राजाओं ने सरकार से सहायता मांगी। सरहिन्द के सेनापति वज़ीर खान के नेतृत्व में विशाल मुग़ल सेना–समूह को पहाड़ी राजाओं की ओर से युद्ध के लिए भेजा गया। पहाड़ी राजाओं ने अपने सैनिकों को तैयार करने के अतिरिक्त गुज्जरों और रंगहरा को भी, अपने साथ मिला लिया, जो सिक्खों के विरुद्ध थे। इस विशाल और शक्तिशाली

सेना ने आनन्दपुर पर आक्रमण कर दिया। सिक्खों ने किले के अन्दर से ही शत्रु को डट कर मुकाबला करते हुए उनके पहले आक्रमण को विफल कर दिया। अब आक्रमणकारियों ने आनन्दपुर को चारों ओर से घेर लिया और किले के अन्दर जाने के सभी रास्तों पर रोक लगा दी। किले में अनाज–पानी की कमी के कारण सिक्खों के लिए लम्बे समय तक युद्ध करते रहना सम्भव नहीं था। विवश होकर माता गुजरी जी के कहने पर गुरू गोबिन्द सिंह जी ने दिसम्बर, 1704 ई. को ठंडी, वर्षा और अंधेरी रात में 1500 सिक्खों और परिवार सहित आनन्दपुर छोड़ दिया।

सरसा का युद्ध

जब गुरू साहिब और उनके साथी सरसा नदी पर पहुँचे तो उन्हें समाचार मिला कि उनके पीछा करती हुई शत्रु–सेना बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही है, तब गुरू साहिब ने रंगरेटे सिक्ख भाई जैता जी को 100 सिक्खों सहित शत्रु–सेना को रोकने का हुक्म दिया। इन 100 सिक्खों ने भाई जैता जी नेतृत्व में शत्रुओं से युद्ध किया। उन्होंने दुश्मन सेना को बहुत क्षति पहुँचाई और इस युद्ध में सभी सिक्ख शहीद हो गए। उस समय सरसा नदी में बाढ़ आई हुई थी। गुरू साहिब और उनके सैकड़ों सिक्ख घोड़ों सहित नदी में कूद गए। सारा सिक्ख साहित्य भी नदी में बह गया। इस भाग–दौड़ में अनेक सिकख और गुरू साहिब के पारिवारिक सदस्य उनसे बिछुड़ गए।

छोटे साहिबज़ादों की शहीदी

सरसा नदी को पार करते समय गुरू साहिब की माता गुजरी जी और उनके दो छोटे साहिबज़ादे, जोरावर सिंह और फतह सिंह उनसे अलग हो गए। तीनों ही सहेड़ी नामक गाँव में चले गए। जहां उनके सेवक गंगू ने विश्वासघात करते हुए उन्हें मोरिंडा के कोतवाल के हवाले कर दिया। कोतवाल ने उन्हें सरहिन्द भेज दिया। सरहिन्द के फौजदार वज़ीर खान ने इन बच्चों को, जो क्रमशः नौ वर्ष और सात वर्ष के थे, इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा और साहिबज़ादों के मना करने पर अति निर्दयता पूर्वक उन्हें जीवित ही दीवार में चिनवा दिया। माता गुजरी जी ने अपने पौत्रों के दुःख में प्राण त्याग दिए।

चमकौर साहिब का युद्ध

सरसा नदी पार करने के पश्चात् गुरू साहिब अपने कुछ सिक्ख और बड़े साहिबज़ादों अजीत सिंह और जुझार सिंह सहित कोटला निहंग खान पहुँचे। वहां अपने श्रद्धालु पठान जमींदार निहंग खान के घर में रहे। कोटला से गुरू जी चमकौर के किले की ओर बढ़े। कुछ समय पश्चात् शत्रु सेना भी चमकौर साहिब पहुंच गई। चमकौर साहिब के युद्ध में गुरू जी के साथ केवल 40 सिक्ख थे। फिर भी उन्होंने अद्‌भुत साहस और बहादुरी से शत्रुओं का, जो हज़ारों की संख्या में थे, मुकाबला किया। गुरू साहिब ने स्वयं भी साहसपूर्वक युद्ध किया और शाही सेना के सेनापति नाहर खान को मार दिया और एक अन्य सेनानायक ख्वाजा मुहम्मद को घायल कर दिया। गुरू साहिब ने दोनों साहिबज़ादों, अजीत सिंह और जुझार सिंह ने भी इस युद्ध में शत्रुओं को मौत के घाट उतारते हुए शहादत प्राप्त की। पांच प्यारों में से तीन प्यारे भी इस युद्ध में शहीद हो गए। अंत गुरू साहिब के 40 सिक्खों में केवल पांच सिक्ख ही बच पाए। उन पांच सिक्खों ने गुरू साहिब को किले से बाहर जाने के लिए कहा।

चमकौर का किला छोड़ना

गुरू जी ने इन पांचों के समक्ष शीश झुकाया और सम्मान सहित ताली बजाकर किले से बाहर निकल गए। भाई दया सिंह, भाई धर्म सिंह और भाई मान सिंह ये तीन प्यारे गुरू जी के साथ गए किन्तु रात के अंधेरे में वह गुरू जी से बिछुड़ गए।

माछीवाड़ा के जंगल

रात के अंधेरे में चलते चलते गुरू जी माछीवाड़ा पहुंच गए। कई दिनों की थकावट के कारण गुरू जी अपनी भुजाओं का तकिया बनाकर माछीवाड़ा के जंगल में आराम करने के लिए लेट गए। इन परिस्थितियों में भी गुरू साहिब परमेश्वर का शुक्रिया अदा कर रहे थे। माछीवाड़ा के जंगल में भाई दया सिंह और भाई धर्म सिंह जी भी गुरू जी के पास पहुंच गए और गुरू जी वहां से आगे के लिए चल पड़े।

उच्च का पीर

माछीवाड़ा के ही दो सगे भाई गनी खान और नबी खान ने कुछ समय गुरू साहिब के यहां नौकरी की थी। दोनों ही गुरू घर के पक्के

श्रद्धालु थे। इन्होंने गुरू जी से उनकी सेवा करने की विनती की। गुरू साहिब ने विनती स्वीकार की और नीला चोला धारण करके एक पीर का वेश बनाया। गनी खान, नबी खान, भाई धर्म सिंह तथा भाई मान सिंह ने गुरू साहिब जी को कंधों पर उठा लिया और भाई दया सिंह के पीछे चल पड़े। यदि कोई पूछता को वे कहते ''उच्च का पीर'' जा रहा है।

मुग़ल शासन की जड़ उखाड़ दी

गुरू साहिब जाटपुरा पहुँचे। यहां मुस्लिम सरदार राय कल्लाह, जो इस इलाके का चौधरी था, आपके दर्शन के लिए आया। उसने गुरू जी का भव्य सत्कार किया और गुरू जी की मुसीबतों को अनुभव करते हुए अत्याचारियों को शाप दिया। राय कल्लाह द्वारा भेजे चरवाहे नूरे के माध्यम से ही छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिनवाए जाने का पता चला। जब गुरू साहिब को यह सूचना मिली तो उन्होंने एक पौधे को जड़ सहित उखाड़ते हुए कहा कि इसी तरह सरहिन्द (मुग़ल शासन) की भी जड़ उखाड़ी जाएगी।

ज़फ़रनामा

यहां से गुरू जी दीना कांगड़ पहुँच गए। बहुसंख्या में सिक्ख गुरू जी से मिलने आने लगे। गुरू जी यहां बहुत समय तक ठहरे, यहीं से आप ने औरंगज़ेब को ''जफ़रनामा'' भेजा। ''जफ़रनामा'' का अर्थ है जीत की चिट्ठी। इस रचना में गुरू जी साफ स्पष्ट लिखा है कि तू दगाबाज़ और झूठा है, तू बादशाह तो जरूर है, किन्तु दीन–ईमान तेरे आसपास भी नहीं है। तूने मेरे चारों पुत्र शहीद करवा दिए, तो क्या हुआ मेरा भुजंगी खालसा तो अभी जीवित है। औरंगेज़ेब के पास ये जफ़रनामा भाई दया सिंह जी लेकर गए थे। जफ़रनामा पढ़कर औरंगज़ेब के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और गुरू गोबिन्द सिंह जी के प्रति उसका व्यवहार थोड़ा विनम्र हो गया।

मुक्तसर का युद्ध

दूसरी ओर वज़ीर खान के बारे में गुरू जी को पता चल गया कि वह सेना सहित गुरू जी पर आक्रमण करने वाला है। तो गुरू जी वहां से चलकर जलाल, भगते और कोटकपुरा से होते हुए खिदराणे के पास पहुंच गए। यहीं से भाई महा सिंह जी का 40 सिक्खों का समूह भी गुरू

जी के साथ मिल गया जो आनन्दपुर में उन्हें छोड़ गए थे। खिदारणे की ऊँची ढाब पर गुरू जी ने मोर्चा लगाया और युद्ध शुरू हो गया। गुरू जी और बहादुर सिक्खों की वीरता और शौर्य प्रदर्शन के परिणामस्वरूप गुरू जी ने मुग़ल सेना को जीत लिया। युद्ध के मैदान में गुरू साहिब ने देखा सहित 40 सिक्खों में कुछ शहीद हो चुके हैं और बहुत घायल हैं। भाई महा सिंह जी ने सिसकते हुए गुरू जी को 'बेदावा' फाड़ने के लिए विनती की। गुरू जी ने 'बेदावा' फाड़ दिया और उन 40 सिक्खों को 40 मुक्तों का वरदान दिया। वर्तमान समय में इस स्थान को 'मुक्तसर' नाम से जाना जाता है। शहीद सिक्खों का अंतिम संस्कार करके गुरू जी आगे चले गए।

दमदमी बीड़

आप तलवण्डी साबो पहुंच गए। यहीं गुरू जी ने गुरू तेग बहादर जी की बाणी को शामिल करके भाई मनी सिंह से आदि ग्रन्थ साहिब की बीड़ लिखवाई जिसे 'दमदमा वाली बीड़' कहा जाता है। इसी स्थान पर गुरू गोबिन्द सिंह जी ने 'दमदमी बीड़' की तीन प्रतिलिपियां बनवाई। जिनमें से बीड़ की एक प्रतिलिपि अकाल तख़्त साहिब, एक तख़्त श्री पटना साहिब में और एक प्रतिलिपि गुरू साहिब जी अपने साथ हज़ूर साहिब (नांदेड़) ले गए। इसी बीड़ को गुरू साहिब ने गुरूगद्दी की बख्शिश की।

औरंगज़ेब की मृत्यु

आगे आप राजपूताना की ओर चल दिए। आपको औरंगज़ेब की मृत्यु की सूचना मिली। औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में दिल्ली के तख़्त पर अधिकार करने के लिए विवाद चल रहा था। शहज़ादा मुअज्जम, जो बाद में बहादर शाह बना, जब वह आगरा के पास गुरू जी से मिला तो उसने गुरू जी से आशीर्वाद और सहायता मांगी। उसने गुरू जी से कहा कि आज़म शाह के विरुद्ध युद्ध में मेरी सहायता कीजिए। गुरू जी सहायता से शहज़ादा मुअज्जम की जीत हुई और वह बादशाह बन गया। जीत के बाद जब आगरा में गुरू जी बहादर शाह से मिले तो बहादर शाह ने गुरू जी को तोहफे भेंट किए।

माधो दास से बंदा सिंह बहादर

इसके पश्चात् गुरू जी दक्षिण की ओर बढ़े। बहादर शाह भी गुरू जी के साथ ही था। रास्ते में सिक्खी का प्रचार करते हुए नांदेड़ पहुंच गए। गुरू जी यही डेरा लगाया। यहीं माधो दास बैरागी को अपने आत्मिक बल द्वारा जीत कर उसे 'नाम' की दात बख्शिश कर माधो दास से बंदा सिंह बहादर बनाकर पांच तीर देकर पंजाब में सिक्ख राज्य की स्थापना के लिए भेज दिया।

रचना / बाणी

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने दसम ग्रन्थ की रचना की। जिसमें इनकी प्रमुख रचनाएं जाप साहिब, वार श्री भगउती जी की, जफ़रनामा, अकाल उसतति, चंडी की वार, वचित्र नाटक, खालसा की महिमा आदि दर्ज हैं।

गुरूगद्दी और ज्योति–जोत समा जाना

वज़ीर खान ने दो पठान गुरू गोबिन्द सिंह जी के सिक्ख बनाकर दक्षिण की ओर भेज दिए। ये दोनों गुरू जी के सेवक बन कर गुरू जी के पास रहने लगे और अवसर मिलते ही गुरू जी की कमर में बायीं तरफ चाकू से वार किया। गहरा घाव हो गया। गुरू जी के इस घाव पर टांके लगाए गए धीरे–धीरे घाव ठीक होने लगा। गुरू दरबार में किसी ने गुरू जी को धनुष भेंट स्वरूप दिया। उस पर डोरी कसते समय घाव खुल गया। गुरू जी को अपने अंतिम समय का अनुभव हो गया। उन्होंने सोचा कि अब सिक्ख समाज को देह रूपी गुरू की आवश्यकता नहीं है। दस गुरू साहिबान के समय में बाहरी तौर पर सिक्खों ने गुरूओं से बहुत कुछ ग्रहण किया है और अब सैद्धान्तिक दिशा इस दैवीय रचना श्री गुरू ग्रन्थ साहिब से लेनी होगी। उन्होंने दमदमी बीड़ को गुरूगद्दी देकर श्री गुरू ग्रन्थ साहिब बना दिया। सिक्ख परम्परा अनुसार पांच पैसे रख कर माथा टेका और 1708 ई. को गुरू गोबिन्द सिंह जी मानवता को सत्य का उपदेश देते हुए ज्योति जोत समा गए।

सिद्धान्त / हुक्म

1. नाम–बाणी को धारण करने का उपदेश दिया।
2. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी को गुरू मानना।

3. धर्म की किरत करना, दसवंध देना।
4. जाति का भेदभाव त्याग कर एक अकाल पुरख से जुड़ना।
5. पांच ककारों की मर्यादा धारण करना।
6. सभी कार्यों के प्रारम्भ में अरदास करनी।
7. जरूरतमंदों की प्रेमभाव से सहायता करनी।
8. मति को उच्च और पवित्र रखना, शुभ कर्म करते रहना।
9. कभी भी किसी की निन्दा, चुगली नहीं करनी न ही किसी के प्रति ईर्ष्या का भाव रखना।
10. कभी भी चोरी, ठगी और धोखा नहीं करना।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गुरू गोबिन्द सिंह जी का प्रकाश कब हुआ?

(क) 1667 ई. (ख) 1666 ई.
(ग) 1668 ई. (घ) 1670 ई.

प्रश्न 2. गुरू गोबिन्द सिंह जी को संस्कृत किस विद्वान् ने पढ़ाई?

(क) पण्डित त्रिलोचन (ख) पण्डित सूरदास
(ग) पण्डित कृपा राम (घ) पण्डित हरदयाल

प्रश्न 3. गुरू गोबिन्द सिंह जी को कुरान शरीफ किसने पढ़ाया?

(क) काज़ी नूर मुहम्मद (ख) काज़ी पीर मुहम्मद
(ग) काज़ी रूकनुद्दीन (घ) काज़ी कमालुदीन

प्रश्न 4. गुरू गोबिन्द सिंह जी का पहला विवाह किससे हुआ?

(क) माता सुन्दरी जी (ख) माता साहिब कौर जी
(ग) माता जीतो जी (घ) माता गंगा जी

प्रश्न 5. गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आनन्दपुर की धरती पर कितने किले बनाए ?

(क) चार (ख) तीन
(ग) पांच (घ) सात

प्रश्न 6. गुरू गोबिन्द सिंह जी का प्रकाश कहां हुआ?

(क) हज़ूर साहिब (ख) पटना साहिब

(ग) आनन्दपुर साहिब (घ) यमुनानगर

प्रश्न 7. कौन सी रचना श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की है?

(क) पंथ प्रकाश (ख) श्री दसम ग्रन्थ

(ग) जपुजी साहिब (घ) आनन्द साहिब

प्रश्न 8. गुरू गोबिन्द सिंह जी ने पहला युद्ध कौन सा था?

(क) भंगाणी (ख) नदौण

(ग) चमकौर (घ) चप्पड़ चिड़ी

प्रश्न 9. गुरू गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना कब की?

(क) 1667 ई. (ख) 1606 ई.

(ग) 1699 ई. (घ) 1666 ई.

प्रश्न 10. आनन्दपुर साहिब में गुरू गोबिन्द सिंह जी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कौन सा था?

(क) खालसा स्थापना (ख) किला निर्माण

(ग) युद्ध की तैयारी करना (घ) प्रचार

प्रश्न 11. गुरू गोबिन्द सिंह जी के छोटे साहिबज़ादों को किस के हुक्म से शहीद किया गया ?

(क) गंगू ब्राह्मण (ख) सुच्चा नंद

(ग) वज़ीर खान (घ) मोती राम

प्रश्न 12.गुरू गोबिन्द सिंह जी के साथ चमकौर युद्ध में कितने सिक्ख थे?

(क) 45 (ख) 41

(ग) 40 (घ) 44

प्रश्न 13. चमकौर युद्ध में पांच प्यारों में से कितने प्यारे शहीद हुए?

(क) चार (ख) तीन

(ग) दो (घ) एक

प्रश्न 14. ''जफ़रनामा'' किस गुरू साहिब जी की रचना है?

(क) गुरू गोबिन्द सिंह जी (ख) गुरू अमरदास जी

(ग) गुरू नानक देव जी (घ) गुरू रामदास जी

प्रश्न 15. गुरू गोबिन्द सिंह जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता भानी जी (ख) माता सुलखणी जी

(ग) माता गुजरी जी (घ) माता दया जी

प्रश्न 16. गुरू गोबिन्द सिंह जी का दूसरा विवाह किस से हुआ?

(क) माता सुन्दरी जी (ख) माता साहिब जी

(ग) माता गंगा जी (घ) माता जीतो जी

प्रश्न 17.दमदमी बीड़ गुरू गोबिन्द सिंह जी ने किससे लिखवाई थी?

(क) भाई मनी सिंह (ख) भाई दया सिंह

(ग) भाई महा सिंह (घ) भाई धर्म सिंह

प्रश्न 18.''उच्च का पीर'' किस गुरू साहिब को कहा जाता है?

(क) श्री गुरू नानक देव जी (ख) श्री गुरू तेग बहादर जी

(ग) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (घ) श्री गुरू अर्जन देव जी

प्रश्न 19. गुरू गोबिन्द सिंह जी ने ''जफ़रनामा'' किसे भेजा था?

(क) बाबर (ख) अकबर

(ग) वज़ीर खान (घ) औरंगज़ेब

प्रश्न 20. गुरू गोबिन्द सिंह जी कब ज्योति–जोत समाए?

(क)	1700 ई.	(ख)	1705 ई.
(ग)	1708 ई.	(घ)	1720 ई.

उत्तरमाला

उत्तर –1.(ख) 2.(ग) 3.(ख) 4.(ग) 5.(क) 6.(ख) 7. (ख) 8.(क) 9. (ग) 10. (क) 11. (ग) 12. (ग) 13. (ख) 14. (क) 15. (ग) 16. (क)17. (क) 18. (ग) 19. (घ) 20. (ग)

वाहिगुरू

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी

किसी भी धर्म का मूल स्रोत उस धर्म का धर्मग्रन्थ होता है। सिक्ख धर्म का पवित्र धर्म ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में 6 गुरू साहिबान की बाणी और अन्य 30 महापुरुषों की बाणी शामिल है। गुरू अर्जन देव जी को इस पवित्र ग्रन्थ का सम्पादन किया। यह कार्य 1604 ई. में सम्पूर्ण हुआ। इस ग्रन्थ को लिखने का सौभाग्य भाई गुरदास जी को मिला और बाबा बुड्ढा जी इसके पहले ग्रन्थी बने। इस धर्म ग्रन्थ के 6 गुरू साहिबान, 15 भगत, 11 भट्ट, 4 गुरसिक्ख, कुल 36 बाणीकार हैं। गुरू अर्जन देव जी द्वारा सम्पादित बीड़ में श्री गुरु तेग बहादर जी के शब्द और सलोक शामिल कर गुरू गोबिन्द सिंह ने नई बीड़ तैयार करवाई। सिक्ख परम्परा अनुसार गुरू गोबिन्द सिंह जी ने तलवण्डी साबो में सम्पूर्ण बाणी का उच्चारण करते हुए इस धर्म ग्रन्थ का लिखित रूप भाई मनी सिंह जी से तैयार करवाया और 1708 ई. में ज्योति–जोत समाने से पूर्व गुरू गोबिन्द सिंह जी ने इस धर्म ग्रन्थ को गुरू होने का सम्मान दिया। 1430 पृष्ठों में समाहित यह बृहदाकार धर्म ग्रन्थ 31 रागों में 'धुर की बाणी' की बात करता है।

सामान्य रूप से इस ग्रन्थ को तीन भागों में विभाजित किया

जाता है। पहले भाग में पृष्ठ 1 से 13 तक नितनेम की बाणियां दर्ज हैं जिनमें जपु, सोदरु, रहिरास और सोहिला बाणियां हैं। सिक्ख मर्यादा अनुसार अलग–अलग समय पर इन बाणियों का पाठ किया जाता है। जपु जी साहिब का अमृत समय, रहिरास साहिब का संध्या समय और कीर्तन सोहिला का रात को सोने से पहले पाठ करना चाहिए।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का दूसरा भाग पृष्ठ 14 से 1352 तक रागबद्ध संकलन है। इसे गुरू अर्जन देव जी ने 30 रागों में विभाजित किया है। बाद में दसम गुरू श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने नौंवे गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी बाणी जैजावंती राग में दर्ज करके रागों की कुल संख्या 31 कर दी। अंतिम या तीसरा भाग मुक्त बाणी का है, यह पृष्ठ 1353 से लेकर 1430 तक दर्ज है। इस भाग में सहस्रक्रिती, कृति, गाथा, फुनहे, सलोक शेख फरीद और कबीर, सवेयै, सलोक, वारां ते वधीक, चउबोले, सलोक, महला नौंवा, मुंदावणी और अन्त में रागमाला बाणी वर्णित है।

बाणी संकलन में बाणी की छोटी से छोटी इकाई शब्द को देखे तो शब्द बाणी के शीर्षक का आरम्भ मूल मन्त्र के रूप में होता है, जिसके भिन्न–भिन्न रूप गुरू ग्रन्थ साहिब में मिलते हैं। जैसे–सतिगुर प्रसादि या सतिनामु गुर प्रसादि या सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि या पूरा मूल–मन्त्र है। इसके बाद रागों को अंकित किया गया है जिसे महला क्रम से दर्ज किया गया है। उदाहरणतः महला 1 गुरू नानक देव जी, महला 2 गुरू अंगद देव जी और महला 9 गुरू तेग बहादर जी की ओर संकेतित है। गुरू साहिबान की बाणी विशेष सम्बन्धित राग में खत्म होने के बाद भक्तों की बाणी उनके नाम सहित शीर्षक रूप में दर्ज है। उदाहरणतः 'बाणी भक्त कबीर जी' आदि। इससे आगे क्रमानुसार काव्य–रूप या गायन रूप दर्ज हैं। काव्य–रूपों के अन्तर्गत पद, दोपद, त्रिपद, चउपद, पंचपद आदि हैं। पदों के बाद अष्टपदिआं हैं। फिर लम्बी रचनाओं या वारों को क्रम से दर्ज किया गया है। इसके साथ ही सम्बन्धित बाणी रचनाओं में सलोक और पउड़ियाँ काव्य रूपों को भी शामिल किया गया है। काव्य–रूपों को दर्ज करते समय भी गुरू साहिबान और भगतों के क्रम को ध्यान में रखा गया है। पदों के काव्य–रूप को अंकों द्वारा अंकित

किया गया है।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के 36 बाणीकार

6 गुरू साहिबान

1. गुरू नानक साहिब, 2. गुरू अंगद साहिब, 3. गुरू अमरदास साहिब, 4. गुरू रामदास साहिब, 5. गुरू अर्जन साहिब, 6. गुरू तेग बहादर साहिब

15 भक्तों के नाम

1. कबीर जी, 2. फरीद जी, 3. नामदेव जी, 4. रविदास जी 5. सधना जी, 6. त्रिलोचन जी, 7. भीखण जी, 8. परमानंद जी, 9. जैदेव जी, 10. पीपा जी, 11. धन्ना जी, 12. बेणी जी, 13. सूरदास जी, 14. सैण जी, 15. रामानंद जी

11. भट्टों के नाम

1. कल्ल जी, 2. जालप जी, 3. कीरत जी, 4. भिखा जी, 5. सल्ल जी, 6. भल्ल जी, 7. नल्ल जी, 8. गंयद जी, 9. मुथरा जी, 10. बल्ल जी, 11. हरिबंस जी

4 गुरूसिक्खों के नाम

1.	बाबा सुन्दर जी,	2.	बाबा सत्ता जी,
3.	बाबा बलवंड जी,	4.	भाई मरदाना जी

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज 31 राग

1. सिरीरागु, 2. माझ, 3. गउड़ी, 4. आसा, 5. गूजरी, 6. देवगंधारी, 7. बिहागड़ा, 8. वडहंस, 9. सोरठि, 10. धनासरी, 11. जैतसरी, 12. टोडी, 13. बैराड़ी, 14. तिलंग, 15. सूही, 16. बिलावलु, 17. गोड 18. रामकली, 19. नट, 20. माली गऊड़ा, 21. मारू, 22. तुखारी, 23. केदारा, 24. भैरउ, 25. बसंतु, 26. सारंग, 27. कानड़ा, 28. मलार, 29. कलिआण, 30. प्रभाती, 31. जैजावंती

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में वर्णित 22 वारें

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में 22 वारें दर्ज हैं। इन वारों के शीर्षक गुरू साहिब के रागों के नाम पर दिए गए है, जिसका अभिप्राय है कि इस वार का गायन इस राग में करना है।

1. वार माझ की महला 1

2. आसा की वार महला 1
3. मलार की वार महला 1
4. गूजरी की वार महला 3
5. सूही की वार महला 3
6. रामकली की वार महला 3
7. मारू की वार महला 3
8. सिरीरागु की वार महला 4
9. गउड़ी की वार महला 4
10. बिहागड़े की वार महला 4
11. वडहंस की वार महला 4
12. सोरठि की वार महला 4
13. बिलावल की वार महला 4
14. सारंग की वार महला 4
15. कानड़ा की वार महला 4
16. गउड़ी की वार महला 5
17. गूजरी की वार महला 5
18. जैतसरी की वार महला 5
19. रामकली की वार महला 5
20. मारू की वार महला 5
21. बसंत की वार महला 5
22. रामकली की वार भाई सत्ता और भाई बलवंड

9 ध्वनियाँ

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज उक्त वारों को 9 ध्वनियों में गायन का हुक्म दिया गया है। इनका विवरण इस प्रकार है–

1. वार माझ की तथा सलोक महला 1 – मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा धुनि का गायन
2. गउड़ी की वार महला 5 – राय कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी
3. आसा महला 1 – वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी

4. गूजरी की वार महला 3 – सिकंदर बिराहिम की धुनि गाउणी
5. वडहंस की वार महला 4 – ललां बहलीमा की धुनि गावणी
6. रामकली की वार महला 3 – जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी
7. सारंग की वार महला 4 – राइ महमे हसने की धुनि
8. वार मलार की महला 1 – राणे कैलास तथा मालदे की धुनि
9. कानड़े की वार महला 4 – मूसे की वार की धुनी

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में किसकी बाणी नहीं है?

(क) गुरू साहिबान (ख) कबीर जी
(ग) पीलू (घ) शेख फ़रीद जी

प्रश्न 2. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बाणी को किस ने एकत्रित किया?

(क) श्री गुरू नानक देव जी (ख) श्री गुरू अर्जन देव जी
(ग) भाई गुरदास जी (घ) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी

प्रश्न 3. बाणी संकलन का आधार क्या था?

(क) लोक विश्वास (ख) वर्ग विभाजन
(ग) गुरू साहिबान की विचारधारा (घ) भिन्न–भिन्न धर्म

प्रश्न 4. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कितने गुरू साहिबान की बाणी दर्ज है?

(क) 5 (ख) 10
(ग) 6 (घ) 4

प्रश्न 5. जैजावंती राग में किस गुरू साहिबान की बाणी दर्ज है?

(क) गुरू तेग बहादर जी (ख) गुरू अंगद देव जी
(ग) गुरू नानक देव जी (घ) गुरू अर्जन देव जी

प्रश्न 6. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के पहले लेखक कौन थे ?

(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) गुरू नानक देव जी

(ग) भाई गुरदास जी (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 7. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का सम्पादन किसने किया?

(क) पहले गुरू ने (ख) दूसरे गुरू ने

(ग) पांचवें गुरू ने (घ) नौवें गुरू ने

प्रश्न 8. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कुल कितने बाणीकार हैं?

(क) 6 (ख) 12

(ग) 15 (घ) 36

प्रश्न 10.श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 1 से 13 तक की बाणियों को किस रूप में जाना जाता है?

(क) नितनेम की बाणियां (ख) राग मुक्त बाणियां

(ग) राग युक्त बाणियां (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 11.अमृत समय में पढ़ी जाने वाली बाणी कौन सी है?

(क) जपुजी साहिब (ख) रहिरास साहिब

(ग) कीर्तन सोहिला (घ) मूल मन्त्र

प्रश्न 12.श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बाणी कितने रागों में है?

(क) 30 (ख) 31

(ग) 20 (घ) 25

प्रश्न 13. श्री गुरू तेग बहादर जी की बाणी किस राग में है?

(क) सिरी (ख) जैजावंती

(ग) आसा (घ) माझ

प्रश्न 14.श्री गुरू तेग बहादर द्वारा रचित बाणी का क्या नाम है?

(क) वार (ख) कविता

(ग) शब्द और सलोक (घ) सवैये

प्रश्न 15. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कितने भट्टों की बाणी दर्ज है?

(क) 11 (ख) 22

(ग) 15 (घ) 10

प्रश्न 16. महला शब्द किस ओर संकेतित है?

(क) अंकण की ओर (ख) सम्बन्धित गुरू की ओर

(ग) भगत की ओर (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 17. श्री गुरू तेग बहादर जी की बाणी को किस अंक द्वारा दर्शाया जाता है ?

(क) महला 1 (ख) महला 9

(ग) महला 5 (घ) महला 2

प्रश्न 18. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कितने सिक्खों की बाणी दर्ज है?

(क) 11 (ख) 10

(ग) 6 (घ) 4

प्रश्न 19. शब्द बाणी के शीर्षक का प्रारम्भ किससे होता है?

(क) पदों से (ख) मूल मन्त्र से

(ग) काव्य–रूपों से (घ) रहाउ

प्रश्न 20. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कितनी वारें दर्ज हैं?

(क) 21 (ख) 22

(ग) 31 (घ) 9

उत्तरमाला

उत्तरः—1.(ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (क) 6. (ग) 7. (ग) 8. (घ) 9. (ख) 10. (क) 11. (क) 12. (ख) 13. (ख) 14. (ग) 15. (क) 16.(ख) 17. (ख) 18. (घ) 19. (ख) 20. (ख)

दूसरा–अध्याय

पांच प्यारे, चार साहिबज़ादे और चालीस मुक्ते

वाहिगुरू

पांच प्यारे

गुरूगद्दी पर सुशोभित होने के पश्चात् गुरू गोबिन्द सिंह जी ने सिक्ख पंथ के विकास में बहुत योगदान दिया। 1699 ई. को वैसाखी वाले दिन गुरू पातशाह ने खालसा की सृजना की। विश्व के इस बड़े समारोह में गुरू साहिब ने बारी–बारी पांच शीश की मांग की। इस शौर्यपूर्ण घटना की कसौटी पर पूरे उतरने वाले सिक्खों को पांच प्यारों का नाम दिया गया। इन पांचों को गुरू पातशाह ने अपने हाथों से अमृत पान करवाया, तदुपरान्त गुरू गोबिन्द सिंह पातशाह जी ने स्वयं इनके हाथों से अमृत ग्रहण कर 'आपे गुरू आपे चेला' की परम्परा को जन्म दिया। इन पांच प्यारों का नाम और विवरण इस प्रकार है–

पांच प्यारे

1. **भाई दया सिंह जी**
2. **भाई धर्म सिंह जी**
3. **भाई हिम्मत सिंह जी**
4. **भाई मोहकम सिंह जी**
5. **भाई साहिब सिंह जी**

भाई दया सिंह जी

1699 ई. को वैसाखी वाले दिन पांच प्यारों में एक, जिसने सबसे

पहले गुरू गोबिन्द सिंह साहिब के समक्ष अपना शीश भेंट किया था, वे भाई दया सिंह जी थे। आपका जन्म 1661 ई. को लाहौर में हुआ। आपके माता जी का नाम दिआली था। आपके पिता सुधा जी सोबती खत्री और गुरू साहिब के श्रद्धालु सिक्ख थे। आपका मूल नाम दया राम जी था। किन्तु अमृत छकने के बाद दयाराम से दया सिंह हो गए। आप युद्धों, लड़ाईयों में गुरू साहिब के साथ रहे। इन्हीं के हाथ गुरू साहिब ने दीना कांगड़ स्थान से औरंगज़ेब को जफरनामा भेजा था। गुरू गोबिन्द सिंह जी के नांदेड़ में ज्योति जोत समा जाने के बाद जल्दी ही आप ने भी देह त्याग दी।

भाई धर्म सिंह जी

गुरू गोबिन्द जी द्वारा बनाए पांच प्यारों में से भाई धर्म सिंह जी का जन्म 1666 ई. में एक जाट परिवार में, हस्तिनापुर, दिल्ली में हुआ। आपके पिता जी का नाम भाई संत राम और माता का नाम माई साभो (नामांतर जस्सी था)। भाई धर्म सिंह जी मूल नाम धर्मदास था। 1699 ई. को वैसाखी वाले दिन इन्होंने दसम पातशाह को अपना शीश भेंट करके अमृत पान किया और धर्म सिंह का नाम धारण कर पांच प्यारों में शामिल हुए। भाई धर्म सिह जी भी नांदेड़ (हजूर साहिब) में गुरू साहिब के ज्योति जोत समा जाने के बाद स्वर्ग चले गए।

भाई हिम्मत सिंह जी

भाई हिम्मत सिंह जी का जन्म जगन्नाथपुरी, उड़ीसा में 1663 ई. में हुआ। आपके पिता का नाम गुलज़ारी था, जो जाति से झिऊर थे। आपके माता जी का नाम धन्नो था। आपका पहला नाम हिम्मत राय था बाद में आप हिम्मत सिंह हो गए। 1704 ई. को चमकौर साहिब में हुए युद्ध में आप ने शहीदी प्राप्त की।

भाई मोहकम सिंह जी

भाई मोहकम सिंह जी का जन्म 1663 ई. में द्वारका, गुजरात में हुआ। आपके पिता तीर्थ चंद जी छींबा जाति से सम्बन्ध रखते थे। आपके माता जी का नाम देवा बाई था। अमृतपान से पहले आपका नाम मोहकम चंद था। 1704 ई. के चमकौर युद्ध में आप शहीद हो गए।

भाई साहिब सिंह जी

भाई साहिब सिंह जी का जन्म 1662 ई. में बिदर, कर्नाटक में हुआ। आपके पिता का नाम चमन और माता का नाम सोनबाई था। आप जाति से नाई थे। आपका मूल नाम साहिब चंद था। अमृतपान के बाद आपका नाम साहिब सिंह हो गया। 1704 ई. में चमकौर साहिब में युद्ध दौरान आपने शहीदी प्राप्त की।

चार साहिबज़ादे

1. **साहिबज़ादा अजीत सिंह जी**
2. **साहिबज़ादा जुझार सिंह जी**
3. **साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंह जी**
4. **साहिबज़ादा फतह सिंह जी**

साहिबज़ादा अजीत सिंह जी

बाबा अजीत सिंह जी, गुरू गोबिन्द साहिब के सबसे बड़े पुत्र थे। इनका जन्म माता सुन्दरी के पवित्र गर्भ से 1686 ई. में आनन्दपुर साहिब में हुआ। बचपन से ही आप तीव्र बुद्धि और शारीरिक रूप से अति शक्तिशाली थे। आपका पहला शौंक तलवारबाज़ी था। गुरू पिता जी आपके इन गुणों को बहुत पसन्द करते थे क्योंकि आप इस बात के लिए सजग थे कि भविष्य में होने वाले संघर्ष हेतु व्यक्तित्व में शूरता और वीरता के गुण होने जरूरी हैं।

खालसा स्थापना के अवसर पर साहिबज़ादा अजीत सिंह की

आयु लगभग 13 वर्ष थी। खालसा सृजना का सम्पूर्ण दृश्य आपने देखा था और खालसा स्थापना के बाद आनन्दपुर की धरती पर हुए युद्धों के भी आप द्रष्टा रहे। स्वाभिमानी जीवन जीने की अभिलाषा सहित अपना सर्वस्व कुर्बान करने वाले सिंह योद्धा आपकी प्रेरणा रहे। इन परिस्थितियों में आपके व्यक्तित्व में उन दैवीय गुणों का प्रवेश स्वाभाविक था, जिन गुणों को गुरू नानक चिन्तन में व्यक्त किया गया है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने गुरूगद्दी पर विराजमान होते ही पंथ के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आनन्दपुर साहिब सिक्ख जगत् का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन चुका था। गुरू घर के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही थी। यह सब देखकर पहाड़ी राजा बहुत घबरा गए। उन्होंने एक–दो आक्रमण भी किए, किन्तु सिक्खों ने उन्हें हरा दिया। हार के पश्चात् पहाड़ी राजा ये तो सोचते रहे कि ऐसे तो यह हमें राज्य से बाहर निकाल देगा किन्तु गुरू साहिब जी का मुकाबला करने का उनमें साहस नहीं था। इसलिए उन्होंने मुग़ल साम्राज्य से गुरू जी के विरुद्ध शिकायत की और गुरू जी को आनन्दपुर से निकालने के लिए सहायता मांगी। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि पंथक स्तर पर गुरू जी शक्तिशाली बने। वे चाहते थे कि गुरू जी आनन्दपुर छोड़ कर चले जाएं। इसीलिए उन्होंने आनन्दपुर के किले को घेर लिया और किले में राशन–पानी पहुंचना बंद कर दिया। राशन–पानी न मिलने पर भी जब गुरू जी ने किला नहीं छोड़ा तब मुग़लों और पहाड़ी राजाओं ने एक योजना बनाई। उन्होंने एक साथ गाय और कुरान की सौगन्ध उठाई कि यदि गुरू गोबिन्द सिंह जी किला छोड़ देंगे तो वे उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगे। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने सिक्खों के साथ विचार–विमर्श किया अधिकतर सिक्ख किला छोड़ने के पक्ष में थे क्योंकि राशन आदि सब खत्म हो चुका था। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने सिक्खों की मांग को स्वीकार किया और वे किला छोड़ने के लिए तैयार हो गए। गुरू साहिब ने परिवार और सिक्खों सहित रात को आनन्दपुर साहिब का किला छोड़ दिया। किला छोड़ने के बाद जब गुरू जी सरसा नदी के किनारे पहुंचे तो मुग़लों और पहाड़ी राजाओं ने सौगन्ध तोड़ते हुए गुरू गोबिन्द सिंह जी पातशाह पर हमला कर

दिया।

यहां सरसा नदी के किनारे गुरू जी का परिवार अलग हो गया। बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह जी गुरू जी के साथ रह गए और छोटे साहिबज़ादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतह सिंह जी अपनी दादी (गुरू जी की माता) गुजरी के साथ रह गए। यहां से गुरू जी चमकौर के किले में चले गए। मुग़ल सेना गुरू जी का पीछा कर रही थी। गुरू जी के साथ बड़े साहिबज़ादों सहित 40 सिक्ख भी थे। यहां वज़ीर खान ने किले को घेर लिया। एक और लाखों की संख्या में सेना तो दूसरी तरफ गुरू जी के प्यारे 40 सिक्ख। किले में से पांच–पांच सिक्खों का समूह मुग़लों के साथ लड़ने के लिए जाता। बारी–बारी से कई सिक्ख शहीद हो गए। गुरू जी के बड़े साहिबज़ादे अजीत सिंह ने शस्त्रधारी होकर युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। गुरू साहिब ने हँसते हुए पुत्र को गले से लगाया, माथा चूमा, अपने हाथों से हथियार पहनाए और पांच सिक्खों ईश्र सिंह, मोहकम सिंह, देवा सिंह, कीरती सिंह और नंद सिंह को थपकी देकर युद्ध के मैदान में भेजा। साहिबज़ादा अजीत सिंह के नेतृत्व में सिक्खों ने मुग़लों के साथ जोरदार संघर्ष किया। गुरू साहिब स्वयं युद्ध के मैदान का हाल अपनी आंखों से देख रहे थे।

बाबा अजीत सिंह जी गुरू साहिब द्वारा बताए इस सिद्धान्त पर दृढ़ थे कि असली योद्धा वही है जो धर्म की खातिर अपने प्राण तो न्यौछावर कर देता है, किन्तु युद्ध के मैदान से भागता नहीं।

सुरा सो पहिचानीअै जु लरै दीन के हेत।।
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु।।2।।
(श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, अंग, 1105)

इस प्रकार बाबा अजीत सिंह जी मुग़लों के साथ लड़ते हुए युद्ध के मैदान में दिसम्बर 1704 ई. को शहीद हो गए। जब गुरू पिता जी ने बाबा अजीत सिंह जी की शहादत को देखा तो परमेश्वर का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि परमेश्वर तेरी ही दात थी, तुम ही ले गए, तुम्हारा शुक्रिया मालिक।

साहिबज़ादा जुझार सिंह जी

बाबा जुझार सिंह जी गुरू गोबिन्द सिंह जी के दूसरे साहिबज़ादे

थे। आपका जन्म 1690 ई. को आनन्दपुर में माता जीतो जी के गर्भ से हुआ। आपका बचपन भी युद्ध और लड़ाईयां देखते हुए व्यतीत हुआ। अतः निडरता और विनम्रता ये दोनों आपके व्यक्तित्व के विशेष गुण थे। अपने बड़े भाई की संगति में रहते हुए आपने वे सभी गुण ग्रहण किए जो एक शूरवीर योद्धा की विलक्षण पहचान होते हैं।

साहिबज़ादा जुझार सिंह के बचपन से अनेक रोचक घटनाएं जुड़ी हुई हैं। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण घटना एक घोड़े से सम्बन्धित है, यह घोड़ा बहुत ही सुन्दर और शेर जितना ताकतवर था। गुरू जी को यह घोड़ा उनके एक श्रद्धालु सिक्ख ने भेंट किया था। घोड़ा बहुत ही अड़ियल था, अनेक योद्धाओं ने उसे काबू में करने की कोशिश की किन्तु वह अपनी पीठ पर किसी को हाथ भी नहीं रखने देता था। एक दिन साहिबज़ादा अपनी मस्ती में घोड़े की पीठ पर बैठ गए, घोड़ा हवा से बाते करने लगा। सिक्ख संगतें यह देखकर बहुत हैरान हुईं। उन्होंने यह घटना गुरू जी को बताई ताकि घोड़े को रोका जा सके। कहते हैं संगत की बात सुनकर गुरू जी मुस्कुराए और उन्होंने एक ओर इशारा किया। जब सारी संगत ने उस तरफ तो हैरान रह गए देखा कि साहिबज़ादा चढ़दी कला में गुरू के महल में वापिस आ रहे हैं। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि निर्भीकता, हौंसला, साहस आदि गुण साहिबज़ादा जुझार सिंह के अंग–अंग में समाए हुए थे।

चमकौर युद्ध दौरान साहिबज़ादा जुझार सिंह ने जब अपने बड़े भाई अजीत सिंह को शहादत का जाम पीते हुए देखा तो वे गुरू पिता के समक्ष पेश हुए और हाथ जोड़कर युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी।

गुरू जी ने साहिबज़ादे को गले से लगाया, माथा चूमा और हथियारों से सुसज्जित कर युद्ध में भेज दिया। युद्ध दौरान मुग़ल सेना का सामना करते हुए दिसम्बर 1704 ई. में साहिबज़ादे ने देश के सम्मान–मर्यादा के लिए स्वयं को न्यौछावर कर दिया।

साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंह, साहिबज़ादा फतह सिंह

साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंह और बाबा फतह सिंह जी दसम पातशाह के छोटे साहिबज़ादे थे। इनका जन्म भी माता जीतो जी के गर्भ

से आनन्दपुर साहिब की धरती पर हुआ। इनका जन्म क्रमानुसार 1696 ई. और 1699 ई. में हुआ।

सरसा नदी पर जब गुरू जी का परिवार बिछुड़ गया तब छोटे साहिबज़ादों और माता गुजरी जी को गुरू जी का रसोईया गंगू अपने साथ, अपने गांव खेड़ी ले गया। माता गुजरी जी के पास सोने की मोहरों से भरी थैली थी। थैली देखकर गंगू लोभी हो गया, माता गुजरी जी और साहिबज़ादों के सोने के बाद उसने थैली चुरा ली। गंगू को थैली चुराते समय माता गुजरी जी ने देख लिया था। सुबह जब माता गुजरी जी ने थैली के बारे में पूछा तो गंगू समझ गया कि माता जी को चोरी का पता लग गया है। उसने मोरिंडा कोतवाली में जाकर यह शिकायत कर दी कि माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे उसके घर में छिपे हुए हैं। माता जी और बच्चों से बन्दी बना कर सरहिन्द लाया गया। वज़ीर खान को लगा कि इन छोटे बच्चों को इस्लाम कबूल करवाना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि यदि इन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया तो वह लोगों से कहेगा कि देखो गुरू गोबिन्द सिंह जी उन के पुत्रों को तो मरवा रहा है किन्तु गुरू पुत्रों ने तो भयभीत होकर इस्लाम कबूल कर लिया है। किन्तु उसे यह बोध ही नहीं था गुरू गोबिन्द सिंह जी के पुत्र उम्र में छोटे है किन्तु आदर्श रूप में बहुत ऊँचे हैं। अपना सिदक कभी नहीं हारेंगे। दूसरे वह इस बात से भी अनजान था कि छोटे साहिबज़ादे अपनी दादी, माता गुजरी की संगति में रहे हैं। माता गुजरी बच्चों को गोद में खिलाने के साथ–साथ धर्म में दृढ़ रहने की प्रेरणा भी देते रहे। गुरू गोबिन्द सिंह जी की सुपत्नी भी बच्चों को दादी की शिक्षाओं पर चलने के लिए प्रेरित करते रहे। उसका यह भ्रम टूट गया कि साहिबज़ादे इस्लाम कबूल कर लेंगे।

पौष मास जो कि कड़ाके की ठंड का महीना होता है। इस ठंड में माता गुजरी जी और साहिबज़ादों को वज़ीर खान ने ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। किन्तु वे एक क्षण के लिए भी व्याकुल नहीं हुए। अगले दिन सूबेदार की कचहरी में गुरू जी के साहिबज़ादों को पेश किया गया।

परम्परा अनुसार हम सुनते आ रहे हैं कि जैसे ही साहिबज़ादे कचहरी में पहुंचे तो उन्होंने गर्जते हुए फतह बुलाई–

वाहिगुरू जी का खालसा।
वाहिगुरू जी की फतहि।।

सूबेदार ने बच्चों से कहा कि इस्लाम कबूल करने पर तुम्हें सभी सुख–सुविधाएं दी जायेंगी। साहिबज़ादों ने उत्तर दिया कि हम गुरू गोबिन्द सिंह जी के पुत्र और सिक्ख हैं, तब तक प्राण है सिक्ख ही रहेंगे। वज़ीर खान ने धमकाया कि यदि इस्लाम कबूल नहीं किया तो मार दिए जाओगे। साहिबज़ादों का उत्तर था, ''हम अत्याचारी का धर्म कबूल क्यों करें? धर्म बदलने से कुछ भी हासिल नहीं होता। एक परमेश्वर के बिना बाकी सभी बातें निरर्थक हैं। सभी पैगम्बर एक परमेश्वर से मिलाने के लिए ही इस संसार में आए हैं। जब से अमृत पान किया है, परमेश्वर के रंग में मस्त हैं।'' इस तरह यह दिन बीत गया और साहिबज़ादों को फिर से माता गुजरी के पास ठंडे बुर्ज में भेज दिया। बच्चों ने सारा वृत्तान्त विस्तार सहित दादी को सुनाया। दादी ने पौत्रों को गले से लगाया और 'सिर जाए तो जाए किन्तु सिक्खी सिदक नहीं जाना चाहिए' का उपदेश देते हुए अपने दादा जी के मार्ग का अनुसरण करने का आशीर्वाद दिया।

अगले दिन फिर वही सब घटित हुआ। गुरू विद्रोहियों ने अपनी भूमिका निभाई और साहिबज़ादों की तुलना सांप के बच्चों से करते हुए उन्हें कांटे कहा। ऐसा किरदार निभाने वालों में सुच्चा नंद प्रमुख था। जो बाद में बन्दा सिंह बहादर जी के हाथों मारा गया था। दूसरे बच्चों के हक में आवाज़ उठाने वाला मलेरकोटला का नवाब शेर मुहम्मद खान था, जिसने साहिबज़ादों पर किए जा रहे अत्याचारों को पवित्र कुरान आयतों के विरुद्ध बताया और बाद में शेर मुहम्मद खान गुरू साहिब के आशीष का पात्र बना। उसकी उठाई आवाज़ सिक्खों के मन में सदा के लिए समा चुकी है। आज भी सिक्ख जाति सम्मानपूर्वक उसका नाम लेते हुए उसके समक्ष शीश झुकाती है।

ऐसे कई वार्त्तालाप साहिबज़ादों और नवाब के बीच हुए, परन्तु साहिबज़ादे अपनी प्रतिज्ञा पर अड़े रहे। अंततः वज़ीर खान ने उन्हें दीवार में चिनवाने का आदेश दिया। गुरू साहिब के दोनों पुत्रों ने एक–दूसरे को देखा और एक–दूसरे का हाथ थाम जयकारा बुलाते हुए शहीद होने के

लिए चल पड़े। मुख पर रंचमात्र भी मृत्यु का भय नहीं था। इतिहास में वर्णित है कि छोटे साहिबज़ादों को नींव में चिनवाने से पहले बहुत यातनाएं दी गईं। डॉ. गंडा सिंह अनुसार, छोटे साहिबज़ादों के हाथों के पोरों को जलाया गया। इतना ही नहीं उन्हें पीपल के वृक्ष से बांधकर गुलेल से मारा गया। इस तरह यातनाएं देते हुए अंत में बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतह सिंह जी को लगभग 9 वर्ष और 6 वर्ष की आयु में दीवार में चिनवाकर शहीद कर दिया।

दूसरी तरफ साहिबज़ादों की शहादत सुनते ही माता गुजरी जी ने बुर्ज में ही प्राण त्याग दिए। छोटे साहिबज़ादों की शहादत इतिहास में नया मोड़ लाई। अल्पायु में ही दृढ़ संकल्प का ऐसा विलक्षण दृष्टान्त संसार के इतिहास में कहीं भी देखने को नहीं मिलता। गुरू साहिब के पास यह समाचार माछीवाड़ा के जंगलों में भी पहुंच गया। गुरू साहिब ने उसी समय एक पौधा जड़ से उखाड़ा और कहा कि अब मुग़ल साम्राज्य की जड़ उखाड़ दी गई है। इस प्रकार मासूम बच्चों ने अपने प्राण देकर पंथ के तेज और गौरव के लिए नए मार्ग खोले जो इस बात का प्रतीक हैं कि शहादत के लिए आयु के कम या अधिक होने का कोई महत्त्व नहीं रखता।

वाहिगुरू

चालीस मुक्ते

'चालीस मुक्ते' शब्द सिक्ख इतिहास के उन महान गुरसिक्खों को सम्बोधित है जिन्होंने अपनी शहादत द्वारा न केवल अपनी गलतियों की क्षमा मांगी अपितु दसम गुरू पातशाह की कृपा के असीम पात्र बनकर इतिहास में सदा के लिए अमर हो गए। प्रत्येक सिक्ख प्रतिदिन अरदास में इन लासानी सिक्खों को याद करते हुए अपने श्रद्धा–पुष्प भेंट करता है। इन 40 सिक्खों के साथ सम्बन्धित 'मुक्ते' विशेषण इस पक्ष को प्रकट करता है कि ये गुरसिक्ख गुरू साहिब की लासानी बख्शिश द्वारा जन्म–मरण के बंधन से मुक्त होने वाली रूहानी रूहे हैं। ऐतिहासिक पक्ष से 40 मुक्तों की पृष्ठभूमि गुरू गोबिन्द सिंह जी के समय में आनन्दपुर साहिब में होने वाले युद्ध से सम्बन्धित है। 1704 ई. में मुग़ल और पहाड़ी राजाओं की संयुक्त सेना ने हक और सत्य की आवाज़ को दबाने के लिए आनन्दपुर साहिब के किले को कई महीनों तक घेरे रखा, किन्तु गुरू साहिब के सिक्खों को झुकाने में असमर्थ रहे। इस लम्बे घेरे दौरान 40 सिक्ख भूख और प्यास को सहन न करने के कारण गुरू साहिब को बेदावा देकर घर लौट गए। किन्तु गुरू साहिब के प्रति प्रेम और अपने ईमान की आवाज़ के कारण ज्यादा समय उनसे दूर नहीं रह पाए। जब 1705 ई. में खिदराणे की ढाब पर गुरू साहिब और मुग़लों के बीच युद्ध हुआ तब इन 40 सिक्खों ने झबाल निवासी बीबी भागो की अगवाई में मुग़ल सेना का सामना करते हुए अपनी बहादुरी और गुरू प्रेम का प्रमाण देते हुए मुग़ल सेना को वापिस लौटने के लिए मज़बूर कर दिया। जब गुरू जी युद्ध के मैदान में पहुंचे तो उन्होंने 40 सिक्खों के नेता भाई महा सिंह को घायल अवस्था में देखा। गुरू जी बहुत ही प्रेम से उनके सिर को अपनी गोद में रखा और उनके घाव साफ किए। तब गुरू जी ने भाई महा

सिंह जी की इच्छा अनुसार 40 गुरू सिक्खों द्वारा लिखा बेदावा फाड़ कर उन्हें सदा के लिए मुक्त करते हुए उन्हें 'मुक्ते' विशेषण से सम्मानित किया। इन 40 मुक्तों के नाम से ही खिदारणे की ढाब का नाम उस दिन के बाद श्री मुक्तसर साहिब हो गया। यहां इनकी याद में पवित्र गुरूद्वारा टूटी गंडी साहिब सुशोभित है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पांच प्यारों में से सबसे पहले शीश भेंट करने वाले प्यारे कौन थे?

(क) भाई साहिब सिंह (ख) भाई हिम्मत सिंह
(ग) भाई दया सिंह (घ) भाई धर्म सिंह

प्रश्न 2. भाई दया सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1665 ई. (ख) 1661 ई.
(ग) 1670 ई. (घ) 1660 ई.

प्रश्न 3. भाई दया सिंह जी कहां के निवासी थे?

(क) उड़ीसा (ख) दिल्ली
(ग) कर्नाटक (घ) लाहौर

प्रश्न 4. भाई धर्म सिंह जी कहां रहते थे?

(क) पंजाब (ख) दिल्ली
(ग) कर्नाटक (घ) अमृतसर

प्रश्न 5. भाई हिम्मत सिंह जी का निवास स्थान कौन सा था?

(क) उड़ीसा (ख) गुजरात
(ग) पंजाब (घ) लाहौर

प्रश्न 6. भाई मोहकम सिंह जी कहां के रहने वाले थे?

(क) उड़ीसा (ख) पंजाब
(ग) लाहौर (घ) गुजरात

प्रश्न 7. भाई साहिब सिंह जी कहां के निवासी थे?

(क) उड़ीसा (ख) दिल्ली
(ग) कर्नाटक (घ) लाहौर

प्रश्न 8. भाई दया सिंह जी के माता का क्या नाम था?

(क) माता दिआली जी (ख) माता देई जी
(ग) माता धन्नो जी (घ) माता अनकम्पा जी

प्रश्न 9. भाई हिम्मत सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1665 ई. (ख) 1661 ई.
(ग) 1663 ई. (घ) 1660 ई.

प्रश्न 10. भाई हिम्मत सिंह जी के पिता का क्या नाम था?

(क) गुरू नारायण जी (ख) जगजीवन राय जी
(ग) गुलज़ारी जी (घ) भाई सुच्चा जी

प्रश्न 11. भाई हिम्मत सिंह जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता संभली जी (ख) माता देई जी
(ग) माता धन्नो जी (घ) माता अनकम्पा जी

प्रश्न 12. भाई मोहकम सिंह जी किस युद्ध में शहीद हुए?

(क) चमकौर के युद्ध में (ख) सभराऊ के युद्ध में
(ग) आनन्दपुर के युद्ध में (घ) खिदराणे के युद्ध में

प्रश्न 13. भाई मोहकम सिंह जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता संभली जी (ख) माता देवा बाई जी
(ग) माता धन्नो जी (घ) माता अनकम्पा जी

प्रश्न 14. भाई साहिब सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1672 ई. (ख) 1662 ई.
(ग) 1673 ई. (घ) 1675 ई.

प्रश्न 15. भाई साहिब सिंह जी के पिता का क्या नाम था?

(क) माल देऊ जी (ख) जगजीवन जी

(ग) गुरू नरैण जी (घ) चमन जी

प्रश्न 16. भाई साहिब सिंह जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता संभाली जी (ख) अनकम्पा जी

(ग) माता देई जी (घ) माता सोनबाई जी

प्रश्न 17. साहिबज़ादा अजीत सिंह जी की माता जी का क्या नाम था?

(क) माता जीतो जी (ख) माता गुजरी जी

(ग) माता सुन्दरी जी (घ) माता सुलखणी जी

प्रश्न 18. साहिबज़ादा अजीत सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1682 ई. (ख) 1685 ई.

(ग) 1687 ई. (घ) 1686 ई.

प्रश्न 19. साहिबज़ादा अजीत सिंह जी का जन्म कहां हुआ?

(क) अमृतसर साहिब (ख) करतारपरु साहिब

(ग) आनन्दपुर साहिब (घ) कीरतपुर साहिब

प्रश्न 20.बाबा जुझार सिंह जी गुरू गोबिन्द सिंह जी के कौन से साहिबज़ादे थे?

(क) तीसरे (ख) पहले

(ग) चौथे (घ) दूसरे

प्रश्न 21. बाबा जुझार सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क) 1691 ई. (ख) 1690 ई.

(ग) 1695 ई. (घ) 1692 ई.

प्रश्न 22. साहिबज़ादा जुझार सिंह जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता साहिब कौर जी (ख) माता सुन्दरी जी

(ग) माता जीतो जी (घ) माता मनसा देवी जी

प्रश्न 23. साहिबज़ादा जोरावर सिंह और फतह सिंह जी की दादी जी का क्या नाम था?

(क) माता जीतो जी (ख) माता साहिब जी
(ग) माता सुन्दरी जी (घ) माता गुजरी जी

प्रश्न 24. छोटे साहिबज़ादों को किस दिन शहीद किया गया?

(क) 25 दिसम्बर, 1704 ई. (ख) 20 दिसम्बर, 1704 ई.
(ग) 26 दिसम्बर, 1704 ई. (घ) 23 दिसम्बर, 1704 ई.

प्रश्न 25.गुरू गोबिन्द सिंह जी चारों साहिबज़ादों में से सबसे छोटे साहिबज़ादे कौन थे?

(क) बाबा जोरावर सिंह जी (ख) बाबा फतह सिंह जी
(ग) बाबा अजीत सिंह जी (घ) बाबा जुझार सिंह जी

प्रश्न 26. गुरू गोबिन्द सिंह जी छोटे साहिबज़ादों को वज़ीर खान के पास किसने भेजा?

(क) चंदू शाह ने (ख) सुच्चा नंद ने
(ग) गंगू रसोइए ने (घ) टोडर मल्ल ने

प्रश्न 27. बाबा फतह सिंह जी शहादत के समय कितने वर्ष के थे?

(क) 18 वर्ष (ख) 16 वर्ष
(ग) 8 वर्ष (घ) 6 वर्ष

प्रश्न 28. सरहिन्द के सूबेदार का क्या नाम था?

(क) चंदू शाह (ख) शेर मुहम्मद
(ग) गंगू (घ) वज़ीर खान

प्रश्न 29. सिक्ख इतिहास में 40 गुरू सिक्खों को किस नाम से जाना जाता है ?

(क) मुक्ते (ख) शस्त्रधारी
(ग) तलवारधारी (घ) योद्धा

प्रश्न 30. मुग़ल सेना आनन्पुर साहिब को कब घेरा था?

(क)	1706 ई.	(ख)	1709 ई.
(ग)	1704 ई.	(घ)	1710 ई.

प्रश्न 31. गुरू गोबिन्द सिंह जी और मुगलों के बीच युद्ध कहां हुआ था?

(क)	भंगाणी में	(ख)	खिदरणे की ढाब में
(ग)	मुक्तसर में	(घ)	बंसौली में

प्रश्न 32. मुक्तसर में 40 मुक्तों की याद में कौन सा गुरूद्वारा सुशोभित है?

(क)	पतालपुरी	(ख)	टूटी गंढी
(ग)	रकाब गंज	(घ)	थड़ा साहिब

प्रश्न 33. बीबी भागो कहां की निवासी थी?

(क)	मुक्तसर	(ख)	आनन्दपुर
(ग)	चमकौर साहिब	(घ)	झबाल

उत्तरमाला

उत्तरः—1.(ग) 2.(ख) 3.(घ) 4.(ख) 5.(क) 6.(घ) 7. (ग) 8. (क) 9. (ग) 10. (ग) 11. (ग) 12. (क) 13. (ख) 14. (ख) 15. (घ) 16. (घ) 17. (ग) 18. (घ) 19. (ग) 20. (घ) 21. (ख) 22. (ग) 23. (घ) 24. (ग) 25. (ख) 26. (ग) 27. (घ) 28. (घ) 29. (क) 30. (ग) 31. (ख) 32. (ख) 33. (घ)

तीसरा अध्याय

प्रमुख सिक्ख शहीद

वाहिगुरू

भाई मती दास जी

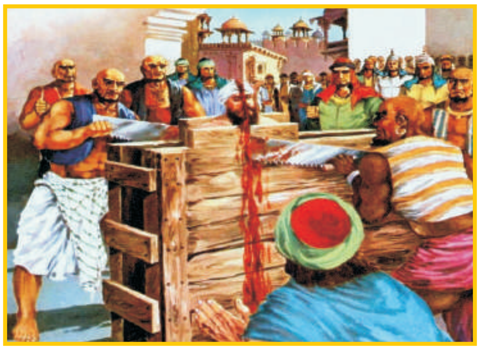

गुरू तेग बहादर जी के साथ चांदनी चौंक में शहादत प्राप्त करने वाले पहले सिक्ख भाई मती दास जी थे। आप जेहलम ज़िला के करिआला गाँव (वर्तमान पाकिस्तान) के रहने वाले थे। भाई मती दास जी गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के प्रमुख सिक्खों में से एक सिक्ख भाई परागा जी के परपौत्र थे। इससे पता चलता है कि भाई मतीदास जी के परिवार का गुरू घर से बहुत पुराना सम्बन्ध था। भाई परागा जी के पुत्र लखमी दास और भाई लखीदास के पुत्र भाई हीरा नन्द भी गुरू घर के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। भाई हीरानन्द जी ने अपने दोनों पुत्रों भाई मतीदास और भाई सतीदास जी को बाल्यावस्था में ही गुरू घर की सेवा हेतु सौंप दिया। छठे पातशाह दोनों से अपने पुत्रों की तरह स्नेह करते थे।

गुरू तेग बहादर के जी समय में भाई मतीदास जी को गुरू घर का दीवान नियुक्त किया गया। गुरू तेग बहादर जी के पूर्व यात्रा पर जाते समय भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाई गवाल और भाई दिआला जी भी उनके साथ गए। इससे पता चलता है कि ये सिक्ख लगभग गुरू जी के साथ ही रहते थे। कश्मीरी पण्डितों की घटना उपरान्त गुरू साहिब के साथ बंदी बनाए गए गुरूसिक्खों में भाई मतीदास भी थे।

दिल्ली में कैद दौरान यातनाओं को सहर्ष सहते हुए आपने गुरू जी के अनन्य सिक्ख होने का प्रमाण दिया। सिक्ख परम्परा में माना जाता है कि जब दिल्ली के शासक और काज़ी ने दुर्व्यवहार किया तब आपने गुरू तेग बहादर जी से आज्ञा मांगी कि आप हुक्म दीजिए मैं दिल्ली और लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूंगा। गुरू साहिब ने समझाया कि हमें हंसते

हुए अत्याचारों का मुकाबला करना चाहिए। इससे भारतीय समाज में साहस के बीज पैदा होंगे। गुरू पातशाह के हुक्म को स्वीकार कर आप ने स्वयं को शहादत के लिए तैयार कर लिया। जब भाई मतीदास के सिर पर आरी चलाई गई तो वे जपुजी साहिब का पाठ करने लगे। इतिहास साक्ष्य है कि जब तक शरीर पर आरी चलती रही आप गुरबाणी का पाठ करते रहे। अंततः नवम्बर 1675 ई. को गुरू पातशाह के सामने इन्हें आरी से चीर कर शहीद कर दिया गया।

भाई दिआला जी

श्री गुरू तेग बहादर जी के साथ दिल्ली के चांदनी चौंक में शहादत का जाम पीने वाले दूसरे गुरू सिक्ख को इतिहास में भाई दिआला जी के नाम से याद किया जाता है। 'भट्टवही' अनुसार भाई दिआला जी के पिता का नाम माधी दास था। इनका वंशानुक्रम इस प्रकार है– भाई मूला जी – भाई बलू जी – भाई माधी दास जी – भाई दिआला जी।

इनके प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी इतिहास में भी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों का मानना है कि गांव करिआला जेहलम निवासी ही भाई दिआला जी थे और भाई मतीदास जी के रिश्तेदार थे। एक अन्य आम धारणा प्रचलित है कि भाई दिआला जी मालवा के रहने वाले थे और भाई मनी सिंह शहीद इनके परिवारिक सदस्य थे।

भाई दिआला जी के परिवार का सम्बन्ध गुरू अर्जन देव जी के साथ उस समय जुड़ा, जब गुरू साहिब के दर्शन करने गए भाई मूला जी ने स्वयं को गुरू घर को ही समर्पित कर दिया। गुरू हरिगोबिन्द सिंह जी के समय में वे बहुत वृद्ध हो गए थे। उन्होंने अपना पुत्र बलू गुरू घर को

सौंप दिया। भाई बलू ही बहुत ही शूरवीर योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हुए। गुरू साहिब जी के मुगलों के साथ हुए युद्ध में आपने शहादत प्राप्त की। आपके पश्चात् आपका पुत्र भाई माधो दास गुरू घर का श्रद्धालु रहा। तदुपरान्त भाई दिआला जी ने गुरू घर के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। गुरू तेग बहादर आपको अपना भाई मानते और बहुत स्नेह करते थे। पूर्व यात्रा दौरान गुरू जी ने भाई दिआला जी को पटना–संगत का मुखिया नियुक्त किया। आप ने वहां सिक्ख धर्म का बहुत प्रचार किया। औरंगज़ेब के हुक्म से जब गुरू पातशाह को दिल्ली लेकर आए तब भाई दिआला जी भी उनके साथ ही थे।

भाई दिआला जी को शहीद करने के लिए शासन ने उन्हें देग में उबालने का हुक्म जारी किया। पानी से भरी देग आग पर रख दी गई। सारे शहर में यह समाचार फैल गया। बहुसंख्या में लोग एकत्रित हो गए। कोई सोच भी नहीं सकता था कि कोई जीवित मनुष्य उबलते पानी में बैठकर कुछ क्षण जीवित रह सकता है। किन्तु जिन्होंने भाई दिआला जी की शहादत को देखा था, वह मानने लगे थे कि बेशक संसार का कोई भी व्यक्ति ऐसा न कर सके किन्तु सिक्ख ऐसा कर सकते हैं। देग में जब पानी उबलने लगा तो भाई दिआला जी को उसके पास खड़ा कर दिया। भाई दिआला जी ने नज़र उठाकर देग को देखा फिर सच्चे पातशाह की ओर देखते हुए पैर उठाया और उबलते पानी की देग में बैठ गए। भाई साहिब के गले तक पानी पहुंच गया। भाई साहिब समाधिस्थ अवस्था में बैठ गए। मुख से पाठ शुरू किया। लोग यह देख कर बहुत हैरान हुए क्योंकि देग में पानी उबलता हुआ साफ दिखाई दे रहा था किन्तु भाई दिआला जी की सूरति स्थिर हो चुकी थी। चेहरे पर लालिमा उसी तरह झलक रही थी और रसना निरन्तर पाठ कर रही थी। कुछ समय पश्चात् शरीर गल गया और धीरे–धीरे अंग अलग होने लगे। भाई दिआला जी के श्वास खत्म हो गए।

ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर एक बार तो शासक का मन भी कांप उठा। उबलते पानी में आह तक न करना और अपना चित्त गुरू चरणों में लगाए रखना, यातनाओं को सहर्ष स्वीकार करना और स्वयं को पूर्णतः समर्पित करने का भाव सिक्ख शहीदों के कारनामें हैं जिनके कारण सिक्ख कौम अनेक प्रकार के कष्ट, दुःख, तूफान और मुश्किलों में भी चढ़दी कला में रहते हुए आगे निकलती रही है, और निकलती रहेगी।

भाई सती दास जी

सिक्ख इतिहास में सिक्खी को समर्पित ऐसे सिक्ख हुए हैं जिन्होंने सिक्खी के लिए अपने प्राणों तक कि भी परवाह नहीं की। ऐसे गुरू सिक्खों को गुरू परम्परा में सिक्ख शहीद कहा जाता है। इन सिक्ख शहीदों में भाई मतीदास जी, भाई दिआला जी और भाई सतीदास जी का विशेष स्थान है। इन तीनों सिक्खों को नौवें गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी के साथ ही शहीद किया गया था। अपने सत्गुरू के प्रति पूर्णतः समर्पण, का भाव उनकी सेवा, उनके लिए स्वयं को कुर्बान करने की कसौटी पर ये तीनों गुरू सिक्ख पूरे उतरे। तीनों ने अंतिम सांस तक सिक्खी सिदक निभाया और ''जीवत साहिब सेविओ आपणा'' इस गुरू वाक्य को व्यावहारिक रूप देते हुए अपना समस्त जीवन गुरू साहिब की सेवा में समर्पित कर दिया और 'मुरदा होइ मुरीद' बनकर समस्त आयु बिताई और अंत में गुरू हित ही शहीदी प्राप्त की।

भाई मतीदास और भाई सतीदास जी दोनों सगे भाई और दीवान दरघाह मल्ल जी के भतीजे थे। दीवान दरघाह मल्ल जी आठवें गुरू, श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी के दीवान और उनके प्रति पूर्णतः समर्पित सेवक थे। गुरू हरिकृष्ण जी के दिल्ली जाने पर वे उनके साथ ही गए थे। गुरू साहिब ने ज्योति जोत समाने से पहले दरघाह मल्ल जी द्वारा ही 'बाबा बकाला' जाने का संदेश दिया। दरघाह मल्ल जी संगतों को 'बकाला' लेकर आए थे।

भाई सती दास जी गुरू दरबार के प्रमुख सिक्ख, कई भाषाओं के ज्ञाता और प्रख्यात विद्वान् थे। आप फारसी भाषा के विशेषज्ञ थे। गुरू

साहिब जिस शब्द का भी उच्चारण करते उसका फारसी अनुवाद साथ ही करते जाते। जब कोई मुसलमान फकीर गुरू साहिब के पास आता तो भाई सतीदास जी ही गुरू साहिब की रचना का फारसी अनुवाद सुनाते। मुसलमान फकीर गुरू साहिब की शख़्सीयत से बहुत ही प्रभावित होते।

आपके बड़े भाई मतीदास गुरू घर के दीवान थे और आप गुरू घर में लिखने का काम करते थे। भाई केसर सिंह वंशावलीनामा में लिखते हैं कि, जेल में गुरू पातशाह द्वारा उच्चरित शब्दों का अनुवाद भाई सतीदास जी ने फारसी में किया किन्तु हकुमत ने उसे अपने कब्ज़े में ले लिया।

गुरू तेग बहादर जी को भयभीत करने के लिए मुग़लों ने जो मार्ग चुना वो मार्ग था उनके सामने उनके सिक्खों का यातनाएँ देकर मार देना। भाई सतीदास ने जब मुग़लों दिए लोभ को नकार दिया तब उन्हें जीवित रूई में लपेट कर आग लगाने का आदेश जारी किया। शहादत से पहले भाई साहिब ने ये शब्द कहे 'मुझे न तो अपने शरीर की परवाह है न ही मौत की।' उस मृत्यु को मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ जो सत्य मार्ग पर चलने से मिलती है। भाई सतीदास शहादत का जाम पीकर भावी पीढ़ियों के लिए सिक्खी के 'शाहद' बन गए।

बाबा बंदा सिंह बहादुर जी

बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की शहादत लासानी शहादत है। सर्वविदित है कि बाबा बंदा सिंह बहादुर ने गुरू के हुक्म में रहते हुए उपलब्धियां प्राप्त की और उनके हुक्म में रहते हुए ही अपनी शहादत दी किन्तु अत्याचार के सम्मुख कभी नहीं झुके। सिक्ख शहीदों की शृंखला में

बंदा सिंह बहादुर जी का विलक्षण स्थान है। बाबा बंदा सिंह बहादुर जी शहादत सम्बन्धी लिखने से पूर्व हमें उन परिस्थितियों को भी समझना होगा जिन स्थितियों में बाबा बंदा सिंह बहादुर जी शहीद हुए।

27 अक्तूबर 1670 ई. को पुन्छ गाँव राजोरी में रामदेव राजपूत के घर बाबा बंदा सिंह बहादुर जी का जन्म हुआ। आपका बचपन का नाम लक्ष्मण देव था। बचपन से दी आप उदासीन प्रवृत्ति के थे। 1708 ई. साहिब–ए–कमाल गुरू गोबिन्द सिंह से अमृत की दात लेकर आप बंदा सिंह बहादुर बन गए। इसी शूरवीर योद्धा ने गुरू पातशाह के दैवीय आदेश ''मुग़लों की जड़ उखड़ गई'' को सत्य सिद्ध किया।

आपकी उदासीन प्रवृत्ति आपके लिए अब महत्त्वहीन हो चुकी थी। मुग़लों का अत्याचार देखकर सुनकर आपके मन में ज़ुल्म और अत्याचार के विरोध की भावना प्रबल हो उठतीं। गुरू साहिब के हुक्म से भाई बाज सिंह, विनोद सिंह, काह्न सिंह, दया सिंह और रण सिंह ने गुरू साहिब द्वारा बख्शिश किए बाणों सहित पंजाब की ओर प्रस्थान किया जहां हज़ारों की संख्या में सिंह योद्धा उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नानक चिन्तन से सरोबार हुए इन रूहों ने जिन अत्याचारियों को सज़ा देते हुए शहादत का जाम पिया, उनका ज़ालिमों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

26 नवम्बर 1709 ई. को सूर्य उदय से पूर्व समाना शहर को घेर लिया गया और शाम तक यह शहर खण्डहर बन गया। गुरू तेग बहादर साहिब जी को शहीद करने वाला जल्लाद जलालुद्दीन और छोटे साहिबज़ादों के हत्यारों जल्लाद शाशल बेग तथा बागल बेग को समान शहर के बीचोंबीच मौत के घाट उतार दिया।

दूसरा आक्रमण भादम–दीन पर किया जो कपूरी का हाकिम और दुराचार के लिए बदनाम था। हिन्दू परिवारों की लड़कियों की बेइज्जत करना उसका रोज़ का काम बन गया था। भादम–दीन को उसकी धन–दौलत के साथ उसी दिन मार दिया।

अत्याचार का तीसरा स्थान सढोरा था, जिसके शासक ने पीर बुद्धु शाह को दसम पातशाह का सिक्ख होने के कारण यातनाएं दे देकर मार दिया था। अपने कर्मों का फल भोगते हुए उसे सढोरा की गलियों में घसीटते हुए मार दिया।

12 मई, 1710 ई. को घोर अत्याचारी शहर, जो सिक्खों की

नफरत का केन्द्र था, उस सरहिन्द शहर को मिट्टी में मिला दिया गया। फतह सिंह ने वज़ीर खान के शरीर के दो हिस्सों में चीर दिया। सुच्चा नंद को खींच कर घर से बाहर निकाला और इतनी बुरी तरह मारा कि कौवों और कुत्तों के खाने के लिए भी कुछ नहीं बचा।

सरहिन्द विजय के पश्चात् खालसा राज्य की स्थापना से पूर्व सिक्का जारी किया गया। गंग दुआब के शासकों को मैदान–ए–जंग में मौत के घाट उतार दिया गया। इन अत्याचारियों में जलालाबाद का जलाल खान था।

बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब में सिक्खी का नया इतिहास रच दिया। अत्याचार और ज़ुल्म को मिट्टी में मिला दिया। तत्कालीन समय में फरुखसीअर गद्दी पर बैठा, उसका एकमात्र मिशन बाबा बंदा सिंह बहादुर जी को बंदी बनाना था। अंत गुरदास नंगल में बंदा सिंह बहादुर को घेर लिया गया, किन्तु जिस दृढ़ता से सिक्खों ने मुग़लों का मुकाबला किया, उसका स्पष्ट उल्लेख मुहम्मद कासिम अपनी पुस्तक ''इबारतनामा'' में करते हैं–

सिक्खों के हौंसलें पर हैरानी होती है, प्रतिदिन दो या तीन बार सिक्खों का एक समूह निकलता, सरकारी खाद्य–पदार्थों को लूटता और वापस लौट जाता। मुकाबला करने जो भी सरकारी व्यक्ति जाते उनमें से कोई भी जीवित नहीं लौटता था। शाही सेना के कमांडर हाथ जोड़ने लगे कि बंदा सिंह बहादर किला छोड़ दे। किन्तु घेरा लम्बा होता गया। कुछ सिक्ख बंदा सिंह बहादुर जी का साथ छोड़ कर चले गए। भूख प्यास के सताए निहत्थे सिक्ख कितनी देर मुकाबला कर सकते थे। दिसम्बर 1715 ई. को शाही सेना किले में दाखिल हो गई और बाबा बंदा सिंह बहादुर तथा उसके साथियों को बंदी बना लिया गया। अबदुल समुंद खान की अगवाई में बहुत से सिक्खों का शहीद कर दिया गया। 27 फरवरी 1716 ई. को ज़करीआ खान के निर्देशन में बंदी सिक्खों को दिल्ली पहुंचाया गया। बंदा सिंह बहादुर जी से शासक इतने भयभीत थे कि उन्हें चार जंजीरों से बांधकर पिंजरे में कैद किया गया। बाहर चार तलवारधारी व्यक्ति खड़े किए गए ताकि यदि बंदा सिंह बहादुर भागने की कोशिश करे तो वे उन्हें मार सकें।

बाबा बंदा सिंह बहादुर जी के सामने प्रतिदिन सिक्खों का कत्ल

किया जाता किन्तु एक भी सिक्ख ऐसा नहीं था जो धर्म छोड़ने के लिए मान गया हो क्योंकि जिस मार्ग पर गुरू चले हों उस मार्ग पर चलने से सिक्ख कैसे भयभीत हो सकता था। शहीद होने वाले सिक्ख और बाबा जी मुग़लों की मूर्खता पर हंसते हुए उन्हें मुक्तिदाता कहते और शहादत देने के लिए एक–दूसरे से आगे रहते। अंत जब कोई मार्ग नहीं बचा तो 9 जून 1716 ई. को बाबा बंदा सिंह बहादुर जी के पुत्र को मार कर उसका कलेजा बाबा जी के मुख में डाल दिया। बाबा जी ने इसे परमेश्वर का हुक्म स्वीकार किया और मस्त रहे। फिर मुग़ल जल्लाद उन पर टूट पड़े और बाबा बंदा सिंह के शरीर से मांस उतारा गया, हाथ पैर काट दिए और अंत में सिर काट कर उन्हें शहीद कर दिया। यह ''सीस दीआ हर सिररु न दीआ'' के महावाक्य की सत्य अभिव्यक्ति थी।

भाई मनी सिंह जी

भाई मनी सिंह सिक्ख जाति के महान शहीद सिक्ख हैं। आपका जन्म 1662 ई. में पिता माई दास के घर में हुआ। भाई साहिब के जन्म और वंश सम्बन्धी विद्वानों में असहमति पाई जाती है।

भाई साहिब के बचपन का नाम मनीआ था। ऐतिहासिक विवरण अनुसार आपका परिवार आपको साथ लेकर गुरू तेग बहादर जी के दर्शनों हेतु गया और वहां कई दिनों तक रहे। बालक मनीआ बाल गोबिन्द राय के साथ घुलमिल गया। जब आपका परिवार अपने गांव वापिस जाने लगा तो बालक मनीआ वहीं रहने का हठ करने लगे। नौंवे पातशाह ने आपके पिता जी को कहा कि इस बालक को यहीं रहने दें।

आपके पिता ने आपको गुरू जी को सौंप दिया। आपका पालन–पोषण गुरू साहिब की देखरेख में हुआ। ज्ञानी ज्ञान सिंह अनुसार, बालक मनीआ और गोबिन्द राय साथ ही खेलते, साथ रहते और इकट्ठे ही पढ़ते थे। धीरे–धीरे भाई मनी सिंह जी प्रसिद्ध विद्वान् बन गए।

भाई मनी सिंह जी बहुत ही समझदार व्यक्ति थे। वे जानते थे कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की विचारधारा को लोगों तक पहुंचाने के लिए बाणी की व्याख्या सिखाना अति जरूरी है। इसी कारण भाई मनी सिंह के पश्चात् व्याख्या का एक सम्प्रदाय तैयार हुआ, जिसे 'ज्ञानी सम्प्रदाय' कहा जाता है। भाई मनी सिंह इस सम्प्रदाय के शिरोमणि हैं। भाई मनी सिंह की विद्वता को देखते हुए गुरू जी ने उन्हें अमृत पान करवाकर, श्री हरिमन्दिर साहिब का ग्रन्थी नियुक्त किया। आप श्री हरिमन्दिर साहिब के तीसरे ग्रन्थी थे। पहले ग्रन्थी बाबा बुड्ढा जी, दूसरे भाई गुरदास जी और तीसरे ग्रन्थी भाई मनी सिंह जी थे। गुरू हुक्म का पालन करते हुए आप श्री हरिमन्दिर साहिब चले गए।

गुरू जी के आनन्दपुर छोड़ते समय भाई मनी सिंह जी गुरू जी के पास आनन्दपुर आ गए थे। गुरू जी ने अपनी सुपत्नियों के साथ भाई मनी सिंह को भेज दिया। सरसा नदी पर जब परिवार बिछुड़ गया तब भाई मनी सिंह जी माता साहिब देवां और माता सुन्दरी जी के साथ दिल्ली चले गए।

दूसरी ओर गुरू गोबिन्द सिंह जी माछीवाड़ा, मुक्तसर से आगे दमदमा साहिब स्थान पर पहुंच गए। गुरू जी के माता जी और चारों पुत्र शहीद हो चुके थे। गुरू जी के दमदमा साहिब में होने का पता लगते ही भाई मनी सिंह जी माता साहिब देवां और माता सुन्दरी जी के साथ दमदमा पहुंच गए। यहीं गुरू जी ने आपसे श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बीड़ लिखवाई। इसी बीड़ में गुरू तेग बहादर जी की वाणी शामिल की गई। बाबा दीप सिंह जी ने इसी बीड़ की प्रतिलिपि तैयार की और गुरू गोबिन्द सिंह जी ने इसी बीड़ को गुरूगद्दी की उपाधि दी।

बीड़ लिखने के अतिरिक्त आपने अनेक साहित्यिक रचनाएँ लिखीं। भाई साहिब द्वारा रचित 'ज्ञान रत्नावली' भाई गुरदास जी की पहली वार की टीका/व्याख्या है और 'भगत रत्नावली' ग्याहरवीं वार की टीका है।

शहादत

भाई मनी सिंह जी कौम में नयी चेतना, नया आन्दोलन पैदा करने के लिए एक विशाल सभा करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने जकरिआ खान से दिवाली पर विशाल सभा आयोजित करने की आज्ञा मांगी। जकरिआ खान ने दस हज़ार रूपये जमा करवाने की शर्त रखी। भाई मनी सिंह जी ने हर तरफ पत्र भेजे कि दिवाली के दिन सभी सिक्ख अमृतसर में उपस्थित रहें। भाई मनी सिंह को विश्वास था कि बहुगिनती में लोग आयेंगे और विशाल सभा होगी।

दूसरी ओर जकरीआ खान को पता लगा कि बहुसंख्या में सिक्ख इकट्ठे हो रहे हैं तो उसकी नीयत बदल गई और उसने इकट्ठे हुए सिक्खों पर आक्रमण करने की योजना बनाई। भाई मनी सिंह को इस षड्यन्त्र की खबर मिल गई थी जब जकरीआ खान वहां पहुंचा तो वहां एक भी सिक्ख नहीं था। गुस्से में आए जकरीआ खान ने भाई मनी सिंह को बंदी बना लिया और दस हज़ार रूपये मांगे। भाई मनी सिंह ने कहा कि चढ़ावा तो इकट्ठा होने ही नहीं दिया। फिर भाई साहिब से कहा कि यदि आप मुस्लिम धर्म स्वीकार करते हो तो आपको क्षमा कर दिया जाएगा। भाई साहिब ने उत्तर दिया कि अपने गुरू का साथ किसी भी स्थिति में नहीं छोडूंगा। मौलवी ने उनके कत्ल का फतवा जारी कर दिया क्योंकि उसे लगा कि इनकी मृत्यु से सभी सिक्ख अपने आप ही खत्म हो जायेंगे।

भाई साहिब के शरीर का एक–एक अंग काटा गया। भाई मनी सिंह आंखें बंद करके पाठ करते और अंत में आपके शरीर के सारे अंग काटकर आपको शहीद किया गया।

भाई तारू सिंह जी

18वीं शताब्दी के इतिहास में सिक्ख शहीदों में भाई तारू सिंह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका जन्म 1720 ई. को गाँव पूहला, ज़िला अमृतसर में हुआ। बाबा बंदा सिंह बहादूर जी और उनके साथी सिक्खों की शहादत के पश्चात् मुग़ल सिक्खों पर बहुत अत्याचार करने लगे। यहां तक कि सिक्खों के सिरों का मूल्य लगाने लगे। तत्कालीन समय में लाहौर के गर्वनर जकरीआ खान ने तो अत्याचार की इंतहा ही कर दी थी। ऐसी परिस्थितियों में सिक्खों ने जंगलों में निवास करना उचित समझा ताकि वह अत्याचारी हुकुमत का मुकाबला कर सकें।

भाई तारू सिंह जी गुरू साहिब के श्रद्धालु सिक्ख थे। इन विषम परिस्थितियों में भाई तारू सिंह और उनके परिवार ने जंगल में लंगर तथा जरूरी समान सिक्खों पहुंचाकर उनकी सहायता की। ज्ञानी ज्ञान सिंह 'तवारीख गुरू खालसा' में लिखते हैं, ''भाई तारू सिंह जमींदार अमृतसर के पूहले गांव का एक अनन्य श्रद्धालु सिक्ख था, ज़मीन भी बहुत थी, खेती करवाता लंगर चलाता। इसकी माता जी और बहन रात–दिन लंगर में प्रशादा देती। किसी हिन्दू या मुसलमान को कोई मनाही नहीं, जो भी आए लंगर छक कर जाए, भाई तारू सिंह समस्त जीवन अविवाहित ही रहे, भजन भक्ति में दिन बीतता, (मन यार वन्नी। हथ कार वन्नी)। इसके

अतिरिक्त भाई साहिब को कुछ नहीं पता था। जो सिक्ख शत्रुओं से भयभीत हुए जंगलों में भूख–प्यासे रहते, उन्हें भी किसी न किसी समय में, रात में भी इसी लंगर से रोटी पहुंचाई जाती। कई मुसलमान तो उसे अल्लाह का सुखी पुरुष सुलाकुल समझकर उसका बुरा सोचते भी नहीं थे।

मुखबिर को जब भाई तारू सिंह के बारे में पता लगा तो उसने उसी समय गर्वनर के पास भाई साहिब की चुगली कर दी। जकरीआ खान ये सब सहन न कर सका, उसने तत्काल भाई साहिब को बंदी बनाने का आदेश दिया। भाई साहिब को बंदी बनाया गया, उन्हें बहुत यातनाएं दी गईं। सिक्खों की सहायता करने के जुर्म में उन्हें बहुत अत्याचार सहन करने पड़े किन्तु वे सिक्खी सिदक पर कायम रहे।

जकरीआ खान ने भाई तारू सिंह को अपना धर्म त्याग कर मुस्लिम बनने के लिए कहा और ऐसा न करने पर केश कत्ल करवाने का हुक्म दिया। किन्तु भाई साहिब न तो मुसलमान बनने के लिए माने और न ही केश कत्ल करवाने के लिए। उन्होंने कहा मैं सिर तो कटवा सकता हूँ, किन्तु सतिगुरू की दी पवित्र दात नहीं दे सकता। यह सुनकर जकरीआ खान ने जल्लाद को भाई तारू सिंह जी की खोपड़ी उतारने का आदेश दिया। भाई साहिब ने बिल्कुल भी दुःख जाहिर नहीं किया। उन्होंने सिक्खी केशों–श्वासों के साथ निभाकर मिसाल कायम की। माना जाता है कि खोपड़ी उतारे जाने के बाद भी आप 22 दिनों तक जीवित रहे और 1745 ई. में आप शहीद हो गए।

रवीन्द्र नाथ टैगोर भाई तारू सिंह जी की शहादत के विषय में लिखते हैं कि, ''लाहौर के नवाब ने तारू सिंह से कहा कि आप एक महान योद्धा हो, केवल अपने केश मुझे दे दो।''

भाई तारू सिंह जी ने उत्तर दिया, ''मैं आपको इससे अधिक देता हूँ। मेरे केशों के साथ मेरा सिर भी ले लो।'' टैगोर आगे लिखते हैं कि, '' गुरू जी ने अपने सिक्खों को खण्डे बाटे का अमृत छकाया है। इसलिए वे अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सकते।''

भाई तारू सिंह का उत्तर था कि मेरे केश मेरे सिर के साथ ही जायेंगे। ऐसी भावना के प्रति टैगोर जी लिखते हैं कि ''वह भारतीय लोगों को सिक्खों की तरह निर्भीक नस्ल बनाना चाहता है, जिनमें झुकने का साहस हो जैसे कि सिक्खों में देखा है। ऐसी भावना टैगोर प्रत्येक भारतीय

में देखना चाहते थे।

भाई तारू सिंह के जीवन से संदेश मिलता है कि अत्याचार के समक्ष कभी झुकना, कभी समर्पण नहीं करना चाहिए और अपने विश्वास पर स्थिर रहना चाहिए।

भाई सुबेग सिंह और भाई शाहबाज़ सिंह जी

शहीदों में भाई सुबेग सिंह और भाई शाहबाज सिंह जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन सिक्खों ने भी धर्म छोड़ने की अपेक्षा शहीद होना स्वीकार किया। भाई सुबेग सिंह और भाई शाहबाज सिंह जी रिश्ते में पिता–पुत्र थे। शाहबाज सिंह सुबेग सिंह का पुत्र था। सुबेग सिंह लाहौर के जंबर इलाके के प्रसिद्ध फारसी विद्वान् थे। वे मुग़ल हुकुमत में नौकरी करते थे। मुग़ल दरबार में एक सिक्ख को किसी पदवी मिलने का अर्थ यह नहीं था कि वह मुग़लों का ही हो गया। सुबेग सिंह अपनी विद्वता के कारण मुग़ल दरबार में नौकरी करते थे। भाई काह्न सिंह नाभा लिखते हैं, सिक्ख इतिहास में सुबेग सिंह को ''वकील'' नाम से जाना जाता है। इसका कारण यह है कि 18वीं शताब्दी में जकरीआ खान ने सुबेग सिंह को अपनी ओर से वकील बनाकर एक लाख नवाबी खिताब सिक्ख पंथ को देने के लिए भेजा था। ताकि खालसा मार–पीट छोड़कर शान्तिपूर्वक रहे। सुबेग सिंह ने खालसा पंथ को मनाया और खालसा पंथ ने कपूर सिंह को नवाबी भेंट की।

भाई सुबेग सिंह के मुग़लों के साथ अच्छे सम्बन्ध थे। जकरीआ खान ने उन्हें कोतवाल की पदवी दी हुई थी। कोतवाल बनते ही भाई

सुबेग सिंह जी ने अनेक कुप्रथाओं को बन्द करवा दिया।

ज्ञानी ज्ञान सिंह अनुसार, ''सुबेग सिंह ने कोतवाल बनते हुए कठिन यातनाएँ देकर मारे जाने का नियम तोड़ दिया, केवल कत्ल, फांसी तथा तोप के सामने तीन तरह से मौत देने का नियम जारी रखा। दूसरे सिक्खों के अनन्त सिर जिन्हें कोट पर किनारियों की तरह चिनवाया जाता था और कुछ जो कुओं में फैंके गए थे, सभी का संस्कार करवाया। तीसरे शहर में खुलेआम गौवध पर रोक लगवाकर, उसे परदे में करने का आदेश दिया। चौथे शंख बजाने, पोथी और पुराण के पठन पर जो रोक थी, वह हटा दी गई। पांचवें हिन्दु की बहु–बेटी को जो मुसलमान जबरदस्ती उठाकर ले जाते और कई दिनों तक अपने घर में रखते थे, उस पर पाबन्दी लगाई। ऐसी अनेक अन्य कुप्रथाएं बन्द करके सभी को सुखी किया, शुभ कर्म करते हुए यश प्राप्त किया।''

किन्तु कई मुसलमान इस बात से द्वेष करते थे कि सुबेग सिंह जी का बड़ी पदवी पर विराजमाान है। उन्होंने सुबेग सिंह जी पर झूठा दोष लगाया कि वह सिक्खों को रहस्य बताता है। इस दोष के बाद सुबेग सिंह को कोतवाल की पदवी से हटा दिया गया।

इतना ही नहीं सुबेग सिंह के बेटे शाहबाज सिंह को भी बंदी बना लिया और पहिए पर घुमा कर कत्ल कर दिया। नवाब सिंह ने सोचा था कि अपने सामने पुत्र की दर्दनाक मौत देखकर इसके पिता का मन पिघल जाएगा। परन्तु धन्य गुरू–सिक्ख, विलाप की अपेक्षा सुबेग सिंह कह रहा था, वाह पुत्र तुमने गुरू सिक्खी बहुत सिदक से निभाई है।

अंततः अत्याचारी और पापी लोग यातनाएँ दे देकर थक गए किन्तु पिता–पुत्र दोनों ही अपने सिद्धान्तों पर डटे रहे। सबसे पहले शाहबाज सिंह को बड़े बड़े नुकीली सुईयों वाले पहिए पर घुमाकर शहीद कर दिया। इसी तरह भाई सुबेग सिंह को भी शहीद किया गया। इस प्रकार पिता–पुत्र गुरू प्रेम में शहीद हो गए।

बाबा दीप सिंह जी

सिक्ख कौम के महान जरनैल और शूरवीर योद्धा बाबा दीप सिंह जी का जन्म 26 फरवरी, माता जिऊणी और पिता भाई भगता संधू के घर गाँव पहूविंड में हुआ। माता–पिता ने आपका नाम दीपा रखा। 18 वर्ष की आयु में आप माता–पिता तथा माझा की संगत के साथ होला–महल्ला के अवसर पर आनन्दपुर साहिब गए। वहां धन्य श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के दर्शन–दीदार करके और गुरू जी की प्रेरणा स्वरूप पूरे परिवार ने पवित्र अमृतपान की दात प्राप्त की। अमृत दात प्राप्त करने पश्चात् आपका नाम दीप सिंह रखा गया। कुछ महीने सेवा के पश्चात् जब संगत वापिस जाने लगी तो गुरू पातशाह जी ने दीप सिंह को अपने पास रख लिया।

आनन्दपुर साहिब में रहते हुए बाबा दीप सिंह जी ने गुरमुखी, फारसी और अरबी लिपि में निपुणता प्राप्त की और यहीं आपने शस्त्रविद्या, घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और भाला चलाना आदि में कुशलता हासिल की। कलगीधर पातशाह जब भी शिकार पर जाते बाबा दीप सिंह जी उनके साथ ही जाते। यहीं पर आपने भाई मनी सिंह के निर्देशन में धार्मिक ग्रन्थों और गुरबाणी का गहन अध्ययन किया।

खिदराणा युद्ध के पश्चात् दमदमा पहुंच कर श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी बाबा दीप सिंह जी को वहीं रूकने और सेवा करने का हुक्म दिया। गुरू जी द्वारा आदि बीड़ के पुनः लेखन का कार्य शुरू करने पर बाबा दीप सिंह जी ने दसम पातशाह के हुक्म अनुसार लेखक की भूमिका

निभाई।

बाबा जी ने अपने हाथों से गुरू ग्रन्थ साहिब जी की चार बीड़ें तैयार कीं, जिन्हें बाद में चारों तख़्तों पर प्रकाश करने के लिए भेज दिया गया। इतिहास में वर्णित है कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब का लेखन कार्य शुरू करने से पहले से बाबा दीप सिंह जी ने कलमें बना बना कर कमरा भर लिया। जब लिखते लिखते कलम घिस कर मोटी जाती तो वे उसे सरोवर में डाल कर दूसरी कलम ले लेते। उनको ऐसा करते देख पास बैठे एक सिक्ख ने बाबा जी से कहा, बाबा जी आप कलम क्यों फेंक देते हो, कलम तो ठीक है, चाकू से इसे थोड़ा छीलकर कितना कुछ और लिखा जा सकता है। तब बाबा जी ने उत्तर दिया, भाई तुम मेरी भावना समझ नहीं पाए, जिस कलम से महाराज की पवित्र बाणी लिखी गई है, उस कलम के मुख को चाकू से छील कर उसका सम्मान करने की अपेक्षा उसका अपमान करूँ, यह मुझसे नहीं हो सकता। यह थी उनकी उच्च सोच की पराकाष्ठा।

दक्षिण की ओर जाते समय गुरू पातशाह जी ने बाबा दीप सिंह जी को गुरू की काशी दमदमा साहिब स्थान की संभाल, गुरबाणी पठन–पाठन और लिखने की सेवा हेतु नियुक्त किया। बाबा दीप सिंह ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक यह सेवा निभाई। दमदमा साहिब में सेवा–संभाल करते हुए बाबा दीप सिंह जी ने एक कुआं लगवाया जो तख़्त साहिब की परिक्रमा में है और जिसे 'शहीदों का कुआं' नाम से जाना जाता है।

बंदा सिंह बहादुर के साथ युद्ध में बाबा दीप सिंह जी ने जरनैल की भूमिका निभाई थी। 18 वीं शताब्दी में नादेरशाह और अहमदशाह जैसे हमलावरों और विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को बहुत लूटा और युवा बच्चों को गुलाम बनाकर गज़नी के बाज़ारों में कौड़ियों के दाम बेचा। बहु–बेटियों को सरेआम बेइज्ज़त किया। इन परिस्थितियों से मुकाबला करने के लिए खालसा को 12 मिसलों में विभाजित किया गया। सभी ने समूहबद्ध होकर इन हमलावरों का मुकाबला किया। उन पर हमला किया गया, लूटपाट की गई। इनके हाथों से बहु–बेटियों को छीन कर सिक्ख उन्हें बा–इज्ज़त घर पहुंचाकर आते। इन शूरवीरों में 'शहीद मिसल' के प्रमुख जत्थेदार बाबा दीप सिंह जी थे।

अहमद शाह दुरानी जो सिक्खों का घोर विरोधी था और सिक्ख कौम को मिटाना जी जिसका मिशन था, 1757 ई. में दिल्ली जाते हुए उसने अमृतसर शहर को लूटा और शहर की इमारतों को ध्वस्त कर दिया। इस आक्रमण दौरान अमृतसर शहर के प्रभारी जमाल खान ने श्री

दरबार साहिब जी का अपमाान किया और पवित्र सरोवर को तोड़ने का आदेश दिया। यह समाचार सुनते ही बाबा दीप सिंह के मन को गहरा आघात पहुंचा। उस समय आप तलवंडी साबो में श्री गुरू साहिब लिखने का पवित्र काम कर रहे थे। तत्काल ही यह जिम्मेवारी किसी दूसरे सिक्ख को सौंपकर आप अमृतसर जाने के लिए तैयार हो गए। दल खालसा का नेतृत्व करते हुए ब्यास दरिया पार करके सिक्खों का एक समूह माझा क्षेत्र में दाखिल हो गया। तरनतारन पवित्र स्थान पर पहुंच कर सभी ने अरदास की।

फिर शहर से बाहर आकर बाबा दीप सिंह जी ने एक रेखा खींची और कहा जो सिक्ख शहीद होने के लिए तैयार है, वह इस रेखा को पार करे, जो शहीद नहीं होना चाहता, वह वापिस चला जाए।

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।। सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै।। सिरु दीजै काणि न कीजै।।

सभी सिक्खों ने जै जैकार करते हुए रेखा पार करके अमृतसर की ओर प्रस्थान किया। उधर लाहौर के सूबेदार ने भी जहान खान के नेतृत्व में तरनतारन से 10 मील की दूरी पर गोहलवड़ के नज़दीक नाकाबंदी की हुई थी। दोनों दलों में मुकाबला हुआ, जहान खान मारा गया। शाही सेना में भगदड़ मच गई। उसी समय हाजी हताई खान भी सेना सहित पहुंच गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। जमाल खान के साथ आमने–सामने होने वाले युद्ध में बाबा जी का शीश कट गया। जब बाबा जी धरती पर गिरने लगे तो एक सिक्ख ने बहुत प्यार से कहा, ''बाबा जी आपने तो अरदास की थी कि दरबार साहिब में ही शहीद होओगे किन्तु आप यहीं फतह बुला रहे हो।'' यह सुनकर बाबा जी हिम्मत की और उठकर बायें हाथ पर शीश रखकर दायें हाथ से खण्डा चलाते हुए शत्रुओं के शीश काटते हुए हरिमन्दिर साहिब की परिक्रमा में पहुंच कर गुरू साहिब के चरणों में अपना शीश भेंट कर शहीद हो गए।

बाबा दीप सिंह जी के जीवन द्वारा हमें अपने जीवन में पांच तथ्य सीखने की आवश्यकता है–

– स्वस्थ और तंदरुस्त शरीर रखें।
– हमारा संकल्प दृढ़ होना चाहिए।
– ज्ञान जीवन को दिशा देता है। इसलिए हमें अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।
– सेवा और सिमरन दो मन्त्र हैं, इनसे आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

– गुरू ग्रन्थ साहिब हमारा गुरू है, इसके प्रति समर्पित रहें ताकि जीवन में पाखण्डों और कर्मकाण्ड से दूर रहा जा सके।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भाई मतीदास जी किस गुरू के समय में शहीद हुए?
(क) पहले (ख) नौवें
(ग) दसवें (घ) पांचवें

प्रश्न 2. भाई मतीदास जी कब शहीद हुए?
(क) 1670 ई. (ख) 1672 ई.
(ग) 1675 ई. (घ) 1674 ई.

प्रश्न 3. भाई दिआला जी किस गुरू के समय में शहीद हुए?
(क) श्री गुरू अर्जन देव जी (ख) श्री गुरू तेग बहादर जी
(ग) श्री गुरू नानक देव जी (घ) श्री गुरू हरिराय जी

प्रश्न 4. भाई दिआला जी के पिता का क्या नाम था?
(क) भाई परागा जी (ख) भाई तारू सिंह जी
(ग) भाई हीरा नंद जी (घ) माधी दास

प्रश्न 5. भाई दिआला जी को कैसे शहीद किया गया?
(क) आरी से चीर कर (ख) गर्म तवे पर बिठाकर
(ग) देग में उबाल कर (घ) दीवार में चिनवा कर

प्रश्न 6. भाई सती दास जी किसके बड़े भाई थे?
(क) भाई मोहकम जी (ख) भाई मती दास जी
(ग) भाई हिम्मत जी (घ) भाई दिआला जी

प्रश्न 7. किस शताब्दी के महान् सिक्खों में भाई तारू सिंह जी का नाम आता है?
(क) 14वीं शताब्दी (ख) 20वीं शताब्दी
(ग) 15वीं शताब्दी (घ) 18वीं शताब्दी

प्रश्न 8. भाई तारू सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क)	1720 ई.	(ख)	1710 ई.
(ग)	1725 ई.	(घ)	1705 ई.

प्रश्न 9. खोपड़ी उतारे जाने के बाद भी भाई तारू सिंह जी कितने दिन जीवित रहे?

(क)	20 दिन	(ख)	22 दिन
(ग)	25 दिन	(घ)	30 दिन

प्रश्न 10. भाई तारू सिंह जी ने कब शहीद हुए?

(क)	1740 ई.	(ख)	1730 ई.
(ग)	1745 ई.	(घ)	1725 ई.

प्रश्न 11.बाबा बंदा सिंह बहादुर जी का जन्म कब हुआ?

(क)	1680 ई.	(ख)	1650 ई.
(ग)	1660 ई.	(घ)	1670 ई.

प्रश्न 12.भाई मनी सिंह जी का जन्म कब हुआ?

(क)	1660 ई.	(ख)	1662ई.
(ग)	1665 ई .	(घ)	1664 ई.

प्रश्न 13.भाई तारू सिंह जी को किसके हुक्म से शहीद किया गया?

(क)	जहांगीर के	(ख)	फरुखशीअर के
(ग)	जकरीआ खान के	(घ)	औरंगज़ेब के

प्रश्न 14.अंग अंग काटकर किस सिक्ख को शहीद किया गया?

(क)	भाई मनी सिंह जी को	(ख)	भाई सुखा सिंह जी को
(ग)	बाबा गरजा सिंह जी को	(घ)	बाबा बोता सिंह जी को

प्रश्न 15. दिल्ली में सबसे पहले किस सिक्ख को शहीद किया गया?

(क)	गुरू तेग बहादर जी	(ख)	भाई दिआला जी
(ग)	भाई मती दास जी	(घ)	भाई सती दास जी

प्रश्न 16. इनमें से कौन भाई परागा जी का सुपुत्र नहीं है?
(क) भाई मती और सती दास जी (ख) भाई जती दास जी
(ग) भाई सखी दास जी (घ) भाई दिआला जी

प्रश्न 17. बाबा बंदा सिंह बहादुर जी को कब शहीद किया गया?
(क) 1716 ई. (ख) 1718 ई.
(ग) 1712 ई. (घ) 1710 ई.

प्रश्न 18. बाबा दीप सिंह जी किस बीड़ के लेखक थे?
(क) करतारपुरी बीड़ (ख) आदि बीड़
(ग) दमदमा साहिब की बीड़ (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 19. बाबा दीप सिंह जी कहां शहीद हुए?
(क) तरनतारन (ख) करतारपुर
(ग) आनन्दपुर साहिब (घ) हरिमन्दिर साहिब

प्रश्न 20. भाई मनी सिंह जी कहां के प्रमुख ग्रन्थी थे?
(क) हरिमन्दिर साहिब (ख) तरततारन
(ग) छेहरटा साहिब (घ) दमदमा साहिब

प्रश्न 21.भाई मनी सिंह जी किस गुरू साहिबान के समय में अमृतसर आए?
(क) गुरू गोबिन्द सिंह जी (ख) गुरू हरिराय साहिब जी
(ग) गुरू तेग बहादर जी (घ) गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी

प्रश्न 22. सुबेग सिंह के बेटे का क्या नाम था?
(क) शाहबाज़ सिंह (ख) बघेल सिंह
(ग) गरजा सिंह (घ) दिलबाग सिंह

प्रश्न 23. भाई मनी सिंह के समय में किस मुगल शासक का शासन था?
(क) जकरीआ खान (ख) शाह आलम दूजा
(ग) फरुखसीअर (घ) बहादुर शाह

प्रश्न 24.भाई मनी सिंह जी ने सिक्खों को किस दिन एकत्रित होने का संदेश दिया?

(क) वैसाखी के दिन (ख) दीवाली के दिन

(ग) लोहड़ी के दिन (घ) बसंत के दिन

प्रश्न 25.सिक्ख इतिहास में भाई सुबेग सिंह को किस नाम से जाना जाता है ?

(क) कौड़ा मल्ल (ख) मीठा मल्ल

(ग) वकील (घ) इनमें से कोई नही

.

प्रश्न 26. भाई सुबेग सिंह जी कहां नौकरी करते थे?

(क) रणजीत सिंह के दरबार में (ख) मुगल सल्तनत में

(ग) ब्रिटिश दरबार में (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

उत्तरः—1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ख) 7.(घ)8. (क) 9. (ख) 10.(ग) 11. (घ) 12.(ख) 13.(ख) 14.(क) 15.(ग) 16.(घ) 17. (क)18. (ग)19. (घ)20. (क)21. (ग)22. (क)23.(क) 24.(ख) 25. (ग) 26. (ख)

वाहिगुरू

चौथा अध्याय

प्रमुख सिक्ख बीबीआं

वाहिगुरू

बेबे नानकी जी

श्री गुरू नानक प्रकाश में महाकवि संतोख सिंह जी ने लिखा है, कि माता तृप्ता जी और मेहता कालू जी ने बहुत लम्बे समय तक तप किया और प्रभु के चरणों में लम्बा समय व्यतीत किया। ईश्वर भक्ति की कृपा से उनके घर दो बच्चों ने जन्म लिया। पहले पुत्री का जन्म हुआ जिस का नाम नानकी रखा गया। सिक्ख धर्म में आपको बेबे नानकी कहकर सम्मानित किया जाता है। बेबे नानकी को सिक्ख धर्म के पहले सिक्ख होने का सम्मान भी प्राप्त है। नानकी जी का जन्म 1464 ई. में चहल गांव में हुआ।

बेशक बेबे नानकी जी गुरू नानक देव जी से आयु में पांच वर्ष बड़े थे किन्तु वे नानक जी को ही बड़ा समझकर प्यार और सम्मान देते थे। यदि भाई–बहन के प्रेम का दृष्टान्त देखना हो तो गुरू नानक देव जी और बेबे नानकी के प्रेम से बड़ा कोई दृष्टान्त नहीं मिलता। बेबे नानकी जी अपने छोटे भाई से बहुत स्नेह करती थी। वे नानक जी का बहुत ध्यान रखती थीं ताकि उन्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो। बालक नानक जी भी अपनी बहन की संगति में खुश रहते। गुरू साहिब को पहले पण्डित के पास फिर मौलवी के पास पढ़ने के लिए भेजा गया फिर गाये–भैंसे चराने के लिए बाहर भेजा तदनन्तर व्यापार करने के लिए

पिता ने 20 रूपये देकर लाहौर भेजा किन्तु बालक नानक हर बार कुछ ऐसा कर आते जो सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर था। गुरू नानक के प्रत्येक कार्य के पीछे बहन नानकी निरंकार के स्वरूप के दर्शन कर रही थी। जिसके बारे में उन्होंने कई बार माता तृप्ता और पिता कालू से कहा था कि आप नानक को केवल अपना पुत्र ही मत समझो। नानक इस जगत का जीव नहीं, यह फ़कीर है। गुरू नानक देव जी को निरंकार रूप में पहचानने वाली और उनका धर्म धारण करने वाली पहली सौभाग्यशाली नारी (अर्थात् पहला सौभाग्यशाली जीव) बेबे नानकी ही थीं।

महान कोश अनुसार आपका विवाह सन् 1475 ई. में जैराम पलटा, परमानन्द पलटा के पुत्र, दौलत खान लोधी के दरबारी कर्मचारी के साथ हुआ। विवाह उपरान्त अपना अगला सारा जीवन आपने सुलतानपुर लोधी में ही व्यतीत किया। गुरू नानक देव जी को भी आपने यहीं बुला लिया। भाई जैराम जी ने गुरू जी को नवाब दौलत खान लोधी के मोदीखाने में नौकरी दिलवा दी। बहुत समय तक गुरू जी यहीं नौकरी करते रहे। एक बार शिकायत हुई कि गुरू जी 'तेरा–तेरा' कहकर पूरा मोदीखाना लुटा रहे हैं। जब नवाब खान ने मोदीखाने की जांच की तो सामान कम नहीं अपितु अधिक निकला। क्योंकि गरीब–जरूरतमंदों को बांटने से कमी नहीं बरकत ही होती है। यहीं सुलतानपुर में बेबे नानकी जी ने नानक जी का रिश्ता सुलखणी जी से तय किया। बीबी सुलखणी जो मूल चन्द की पुत्री और बटाला की निवासी थी। गुरू जी के घर दो पुत्रों बाबा श्री चन्द जी और बाबा लखमी दास जी ने जन्म लिया। बेबे नानकी जी अपनी भाभी और दोनों भतीजों को बहुत प्यार करते थे। जिस समय नानक जी धर्म प्रचार के लिए विभिन्न देशों में गए तो बेबे नानकी जी ने बीबी सुलखणी और दोनों पुत्रों को अपने पास रखा और कभी कोई कमी नहीं आने दी। बेबे नानकी जी माता तृप्ता जी की तरह ही सूझवान और गुणी थीं। बेबे नानकी जी के जीवन से हमें आदर्श जीवन जीने और रिश्ते निभाने का महान सूत्र मिलता है।

माता खीवी जी

सिक्ख धर्म में सिक्ख स्त्रियों के ऐतिहासिक वर्णन दौरान माता खीवी जी का नाम बहुत ही सम्मानपूर्वक लिया जाता है। माता खीवी जी दूसरे गुरू, गुरू अंगद देव जी की सुपत्नी थीं। गुरू साहिबान की सुपत्नियों में एक केवल माता खीवी जी हैं जिनका नाम श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में 'सत्ते बंलवड की वार' में मिलता है। जब गुरू नानक देव जी गुरू अंगद देव जी को खडूर साहिब भेजा तब माता खीवी जी ने गुरू जी से पूछा कि उनका क्या हुक्म है? तब बख्शिश घर में आए गुरू अंगद देव जी ने कहा, जब मेरे दाता ने मुझे शब्द की दौलत बांटने की आज्ञा दी थी तो मेरे हिस्से में अन्न और देग की कड़छी आई थी, निसंग होकर बांटो।

माता खीवी जी का जन्म 1506 ई. को गांव संघर, ज़िला तरनतारन में हुआ। आपके पिता का नाम भाई देवी चन्द और माता का नाम करम देवी था। आपका विवाह गुरू अंगद देव जी के साथ 1519 ई. को हुआ। गुरू जी ने माता खीवी जी को लंगर का मुखिया नियुक्त किया। माता खीवी जी ने गुरू जी द्वारा बख्शी इस सेवा को तन–मन से निभाया। लंगर में किसी प्रकार की कभी कोई कमी नहीं आने दी। नियमावली अनुसार लंगर का सारा काम संभाला और समस्त आयु लंगर में ही सेवा करते रहे। इस सेवा को निभाते हुए आप पारिवारिक दायित्व भी अच्छी तरह निभाते रहे। आपके घर दो पुत्रों बाबा दातू जी और बाबा दासू जी और दो पुत्रियों बीबी अनोखी और बीबी अमरो ने जन्म लिया।

माता खीवी जी ने समस्त जीवन ऐतिहासिक भूमिका निभाई। गुरू दरबार में लंगर का समूचा प्रबन्ध, संगत की सेवा और देखरेख का

काम सफलतापूर्वक किया। माता जी ने अपने गुरू के प्रति असीम सेवा प्रकट किया। जब गुरू अंगद देव जी ने गुरूगद्दी अमरदास जी को सौंपी तब माता जी ने प्रत्येक सम्भव प्रयास करते हुए अपने पुत्रों को तीसरे गुरू के चरणों नतमस्तक कर सिक्ख–परम्पराओं में एक नया दृष्टान्त पैदा किया। अंत में गुरू ग्रन्थ साहिब बाणी की यह पंक्ति 'बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली' किसी गुरू सुपत्नी के व्यक्तित्व के उच्चतम शिखर की प्रतीक है।

बीबी भानी जी

शान्त स्वभाव, प्रभु भक्ति में लीन रहने वाली बीबी भानी जी गुरू अमरदास जी की सुपुत्री, गुरू रामदास की सुपत्नी, गुरू अर्जन देव जी की माता और छठे पातशाह की दादी जी थे। बीबी भानी जी का जन्म पिता गुरू अमरदास जी और माता मनसा देवी जी के घर बासरके गिल्ला नामक स्थान पर हुआ। बीबी भानी जी सभी बहन भाईयों में सबसे छोटे थे।

बचपन से आप धैर्यशील और अति विनम्र स्वभाव की थीं। आप अधिकतर समय गुरू पिता की सेवा में व्यतीत करतीं। रात के चौथे पहर में घर के कुएं से पानी भरकर पिता गुरू जो स्नान करवाना और उनके सिमरन दौरान यह विशेष रूप ये ध्यान रखना कि उनकी समाधि में किसी तरह का कोई विघ्न उत्पन्न न हो, आपका नित्य कर्म था। आपने गुरू पिता को पिता रूप में नहीं अपितु ब्रह्म रूप में देखते हुए उनकी सेवा की।

बीबी भानी जी श्रद्धालु और त्यागी व्यक्तित्व की थीं। 'महान कोश' में भाई काह्न सिंह नाभा ने लिखा है, पिता की सेवा करने और सिक्खी नियमों का पालन करने वे अद्वितीय थे। इसी प्रकार की सेवा भाई जेठा जी (चौथे गुरू श्री रामदास जी) ने गुरू अमरदास जी की थी।

गुरू अमरदास जी ने जब ब्यास दरिया के किनारे गोइंदवाल नगर बसाया तब गुरू साहिब का सारा परिवार गोइंदवाल आ गया। धीरे–धीरे यह नगर पूरी तरह आबाद हो गया।

1602 ई. में बीबी भानी जी का विवाह रामदास (जेठा) जी के साथ हुआ। बीबी भानी जी और रामदास जी के घर तीन पुत्रों पृथी चंद, महांदेव और अर्जन देव जी ने जन्म लिया।

गुरमति कार्यों में जब बीबी भानी जी की सेवा को देखें तो प्राप्त जानकारी अनुसार, सभी प्रकार की सेवा जैसे गुरबाणी संकलन, अमृत सरोवर का पक्का होना, रामसर, संतोखसर और तरनतारन आदि सरोवरों का निर्माण और गोइंदवाल साहिब में बाऊली निर्माण जैसे पवित्र कार्य किसी न किसी रूप में बीबी भानी जी की सेवाओं से जुड़े हैं। ऐसी महान् बीबीआं ही समाज की दिशा और इतिहास का प्रवाह बदल देती हैं। समाज को बीबी भानी जी के जीवन और शिक्षाओं से दिशा लेने की आवश्यकता है।

माता गुजरी जी

माता गुजरी जी नौवें पातशाह श्री गुरू तेग बहादर जी की सुपत्नी और दसवें पातशाह श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की माता थीं। माता गुजरी जी का जीवन त्याग, सिदक और कुर्बानियों भरा था। माता गुजरी जी का जन्म 1624 ई. में करतारपुर, ज़िला जालन्धर निवासी, भाई लाल चन्द्र खत्री और माता बिशन कौर जी के घर में हुआ। आपका मायका परिवार लखनौर (ज़िला अम्बाला) से करतारपुर आकर रहने लगा। श्री गुरू अर्जन देव जी ने करतारपुर नगर बसाया था। माता गुजरी जी का बचपन यहीं व्यतीत हुआ। आपका परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का था। आपकी

माता बिशन कौर जी अति नेक, मधुर भाषी थे। गुजरी ने ये गुण अपनी माता जी से ग्रहण किए थे। आपका विवाह छठे पातशाह श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के सबसे छोटे पुत्र श्री गुरू तेग बहादर जी के साथ 1633 ई. में हुआ। माता गुजरी जी ने अपने पुत्र और पौत्रों को सदैव निर्भीक रहने की शिक्षा दी। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने सबसे पहला युद्ध भंगाणी में किया। जिसमें उन्होंने जीत हासिल की। इसी समय इनके बड़े पुत्र का जन्म हुआ गुरू जी ने उसका नाम 'अजीत' रखा। माता गुजरी जी हर समय सिक्खी सिद्धान्तों में दृढ़, अटल और शान्त चित्त गुरबाणी में लीन रहते। बाबा अजीत सिंह जी के जन्म के पश्चात् बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतह सिंह जी का जन्म आनन्दपुर साहिब में हुआ। शत्रुओं ने जब आनन्दपुर साहिब पर आक्रमण करके किले को घेर लिया तो पांच प्यारों के कहने पर गुरू जी ने किला छोड़ दिया। किन्तु मुग़ल सेना और पहाड़ी राजाओं ने गुरू साहिब की सेना पर आक्रमण कर दिया। उस समय सरसा नदी में बाढ़ आई हुई थी। गुरू जी का सारा परिवार उनसे बिछुड़ गया। माता जी और छोटे साहिबज़ादों को गंगू अपने साथ ले गया। उसने माता जी की मोहरों की थैली चुरा ली। माता गुजरी जी गंगू को चोरी करते देख लिया जब माता जी ने गंगू से इसके बारे में पूछा तो उसने माता गुजरी और छोटे साहिबज़ादों को बंदी बनवा दिया। माता जी ने हर समय छोटे बालकों को धर्म में दृढ़ रहने की शिक्षा दी थी। साहिबज़ादा जोरावार सिंह और फतह सिंह उस समय केवल 7 वर्ष और 9 वर्ष के थे। तीन दिनों तक साहिबज़ादों को सूबेदार की कचहरी में लेकर जाते रहे और उन्हें इस्लाम कबूल करने के लिए कई प्रकार के लालच दिए और धमकाया भी। किन्तु साहिबज़ादे दादी की दी हुई शिक्षा पर डटे रहे एक क्षण के लिए भी डांवाडोल नहीं हुए। अंत में छोटे–छोटे बालकों को अमानवीय ढंग से शहीद कर दिया गया। उन्हें दीवार में चिनवा दिया। जब माता गुजरी जी ने यह समाचार सुना तो उन्होंने अकाल पुरख का शुक्रिया अदा किया कि बच्चों ने धर्म में दृढ़ रहते हुए देश और कौम के लिए स्वयं को कुर्बान कर दिया। फिर माता गुजरी जी ने भी प्राण त्याग दिए।

माता साहिब कौर जी

माता साहिब कौर जी का पहला नाम साहिब देवां जी था। भाई काह्न सिंह जी ने महान् कोश में आपके विषय में लिखा है, 'रोहतास निवासी भाई रामू बसी खत्री जी की सुपुत्री, जिसका आनन्द कारज (विवाह) 18 वैसाख संवत् 1757 ई. को श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के साथ हुआ। कलगीधर ने इनकी गोद में खालसा पंथ की बख्शिश की। इसी कारण अमृत समय (ब्रह्म वेला) में माता साहिब कौर और पिता श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के उपदेश सुनाए जाते हैं। अविचल नगर में पहुंच कर गुरू साहिब ने माता जी को दिल्ली भेजा और गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के पांच शस्त्र सम्मान सहित संभालने के लिए उन्हें सौंप दिए। वर्तमान समय में ये शस्त्र दिल्ली गुरूद्वारा रकाब गंज में सुरक्षित हैं।

माता साहिब कौर के पिता भी गुरू घर के श्रद्धालु सिक्ख थे। रोहतास नगर के बहुसंख्यक लोग बाणी का पाठ और गुरू उपदेशों का अनुसरण करते थे। भाई रामा जी भी रोहतास नगर की संगत के साथ गुरू गोबिन्द सिंह जी के दर्शनों हेतु जाते थे।

भाई रामा जी अपनी पुत्री को गुरू जी को समर्पित करने के लिए दृढ़ निश्चय थे। उन्होंने अपने मन की बात संगत के साथ सांझी करते हुए इस शुभ कार्य में उनके सहयोग की मांग की। अतः एक दिन अरदास करके संगत के साथ भाई रामा जी आनन्दपुर साहिब की ओर चल दिए और 18 वैसाख, विक्रमी संवत् 1757 को माता साहिब कौर का विवाह गुरू गोबिन्द सिंह जी के साथ हो गया और माता साहिब कौर जी गुरू जी के महल में आ गए। माता साहिब कौर जी के माता गुजरी जी और माता सुन्दरी जी के साथ अति स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बन गए।

माता साहिब कौर जी हर समय गुरू पति की सेवा, माता गुजरी जी और संगत की सेवा में मग्न रहते। साहिबज़ादों से आप बहुत ही प्रेम और स्नेह करते थे। जब गुरू साहिब हर रोज की तरह महल में आए तो

उन्होंने संतान प्राप्ति की इच्छा व्यक्त की तब गुरू साहिब ने 'खालसा पुत्र' उनकी गोद में डाल दिया। युग–युगों तक कायम रहने वाले 'खालसा पुत्र' की माँ आदर्श पत्नी ही हो सकती है। इस प्रकार 'खालसा पुत्र' की बख्शिश करके गुरू साहिब ने उन्हें सदा के लिए पुत्रवती बना दिया। आनन्दपुर में ही शाही सेना ने गुरू जी पर आक्रमण कर दिया। गुरू जी का सारा परिवार बिछुड़ गया। माता साहिब कौर और माता सुन्दरी जी भाई धन्ना सिंह और जवाहर सिंह के साथ दिल्ली चले गए। गुरू गोबिन्द सिंह जी के ज्योति जोत समा जाने के पश्चात् भाई मनी सिंह जी के समय तक माता साहिब कौर जी सिक्ख पंथ को दिशा देते रहे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बेबे नानकी जी का जन्म कब हुआ?

(क)	1465 ई.	(ख)	1468 ई.
(ग)	1462 ई.	(घ)	1464 ई.

प्रश्न 2. बेबे नानकी जी का विवाह कब हुआ?

(क)	1479 ई.	(ख)	1470 ई.
(ग)	1475 ई.	(घ)	1472 ई.

प्रश्न 3. सिक्ख धर्म में पहले सिक्ख होने का सम्मान किसे प्राप्त है?

(क)	बेबे नानकी जी	(ख)	माता गंगा जी
(ग)	माता नानकी जी	(घ)	माता सुलखणी जी

प्रश्न 4. माता खीवी जी किस गुरू साहिबान की सुपत्नी थे?

(क)	श्री गुरू अर्जन देव जी	(ख)	श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी
(ग)	श्री गुरू अंगद देव जी	(घ)	श्री गुरू नानक देव जी

प्रश्न 5. माता खीवी जी का जन्म कब हुआ?

(क)	1504 ई.	(ख)	1510 ई.
(ग)	1506 ई.	(घ)	1512 ई.

प्रश्न 6. माता खीवी जी के पिता जी का क्या नाम था?

(क)	भाई रामा	(ख)	भाई चंद
(ग)	मूल चंद	(घ)	भाई देवी चंद

प्रश्न 7. माता खीवी जी की माता जी का क्या नाम था?
(क) माता करम देवी (ख) माता चंदो
(ग) माता नानकी जी (घ) माता बिशन कौर

प्रश्न 8. माता खीवी जी का विवाह कब हुआ?
(क) 1520 ई. (ख) 1530 ई.
(ग) 1525 ई. (घ) 1519 ई.

प्रश्न 9. माता खीवी जी के कितने बच्चे थे?
(क) दो (ख) पांच
(ग) तीन (घ) चार

प्रश्न 10. गुरू जी ने लंगर का मुखिया किसे नियुक्त किया?
(क) माता खीवी जी (ख) बीबी भानी जी
(ग) बेबे नानकी जी (घ) माता नानकी जी

प्रश्न 11.बीबी भानी जी किस गुरू की सुपुत्री थीं?
(क) श्री गुरू नानक देव जी (ख) श्री गुरू अर्जन देव जी
(ग) श्री गुरू अंगद देव जी (घ) श्री गुरू अमरदास जी

प्रश्न 12.बीबी भानी जी किस गुरू की सुपत्नी थीं?
(क) श्री गुरू अर्जन देव जी (ख) श्री गुरू रामदास जी
(ग) श्री गुरू नानक देव जी (घ) श्री गुरू अंगद देव जी

प्रश्न 13.बीबी भानी जी किस गुरू की दादी थीं?
(क) श्री गुरू हरिरराय जी (ख) श्री गुरू नानक देव जी
(ग) श्री गुरू हरिगोबिन्द जी (घ) श्री गुरू अंगद देव जी

प्रश्न 14. बीबी भानी जी की माता जी का क्या नाम था?
(क) माता गंगा जी (ख) माता मनसा देवी जी
(ग) माता नानकी जी (घ) माता करमा देवी जी

प्रश्न 15. बीबी भानी जी के कितने बच्चे थे?
(क) दो (ख) पांच
(ग) चार (घ) तीन

प्रश्न 16. माता साहिब कौर जी किस गुरू की सुपत्नी थे ?
(क) श्री गुरू अंगद देव जी (ख) श्री गुरू अर्जन देव जी
(ग) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (घ) श्री गुरू हरिराय जी

प्रश्न 17. माता साहिब कौर जी की सास कौन थीं ?
(क) माता सुन्दरी जी (ख) माता गुजरी जी
(ग) माता सुलखणी जी (घ) माता गंगा जी

प्रश्न 18. माता गुजरी जी किस गुरू साहिबान की सुपत्नी थे?
(क) श्री गुरू अर्जन देव जी (ख) श्री गुरू अंगद देव जी
(ग) श्री गुरू नानक देव जी (घ) श्री गुरू तेग बहादर जी

प्रश्न 19. माता गुजरी जी किस गुरू साहिबान की माता थे?
(क) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (ख) श्री गुरू हरिगोबिन्द जी
(ग) श्री गुरू नानक देव जी (घ) श्री गुरू अर्जन देव जी

प्रश्न 20. माता गुजरी जी की माता जी का क्या नाम था?
(क) माता करमा देवी जी (ख) माता बिशन कौर जी
(ग) माता नानकी जी (घ) माता मनसा देवी जी

प्रश्न 21. माता गुजरी जी के कितने पौत्र थे?
(क) चार (ख) तीन
(ग) पांच (घ) दो

प्रश्न 22. माता खीवी जी किस स्थान पर लंगर की सेवा करते थे?
(क) गोइंदवाल साहिब (ख) खडूर साहिब
(ग) तरनतारन साहिब (घ) करतारपुर साहिब

प्रश्न 23. माता गुजरी जी का गुरू तेग बहादर के साथ विवाह कब हुआ ?
(क) 1633 ई. (ख) 1635 ई.
(ग) 1638 ई. (घ) 1637 ई.

प्रश्न 24. माता खीवी जी का वर्णन किस वार में मिलता है?
(क) माझ की वार (ख) सारंग की वार
(ग) सत्ते बंलवंड की वार (घ) मलार की वार

प्रश्न 25. माता खीवी जी का वर्णन किस ग्रन्थ में मिलता है?

(क) दसम ग्रन्थ (ख) सरब लोह ग्रन्थ

(ग) श्री गुरू ग्रन्थ साहिब (घ) वैदिक ग्रन्थ

प्रश्न 26. भाई जेठा जी किस माता जी के दामाद थे?

(क) माता मनसा देवी जी (ख) माता मरवाही जी

(ग) माता सुलखणी जी (घ) माता नानकी जी

प्रश्न 27. माता तृप्ता जी के कितने बच्चे थे?

(क) दो (ख) पांच

(ग) चार (घ) एक

प्रश्न 28. माता तृप्ता जी के पति कौन थे?

(क) मेहता कालू जी (ख) राम जन जी

(ग) मेहता दास जी (घ) कालू दास जी

प्रश्न 29. माता खीवी जी की सुपुत्री का क्या नाम था?

(क) अमरो और अनोखी जी (ख) जीवनी और मरवाही जी

(ग) दानी ओर भानी जी (घ) दमोदरी और गंगोत्री जी

प्रश्न 30. बाबा दासू जी की माता का क्या नाम था?

(क) माता भानी जी (ख) माता दानी जी

(ग) माता खीवी जी (घ) माता सुलखणी जी

उत्तरमाला

उत्तरः—1. (घ) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (ग) 6. (घ) 7. (क) 8. (घ) 9.(घ) 10.(क) 11.(घ) 12.(ख) 13.(ग) 14.(ख) 15. (घ) 16.(ग) 17. (ख) 18. (घ)19. (क)20. (ख)21. (क)22. (ख)23. (क)24. (ग)25. (ग) 26.(क) 27.(क) 28.(क) 29.(क) 30.(ग)

वाहिगुरू

पांचवा–अध्याय
सिक्ख धर्म की प्रमुख शख्सीयतें

वाहिगुरू

भाई मरदाना जी

जन्म

भाई मरदाना जी का जनम 1459 ई. में राय भोई की तलवण्डी (ज़िला शेखपुरा, वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। आपके पिता जी का नाम मीर बादरे और माता जी का नाम लख्खो था। कहा जाता है कि भाई मरदाना जी से पहले माता लख्खो जी के छह नवजात बच्चों की मौत हो चुकी थी। इसी कारण इनका नाम 'मर–जाणा' रखा गया किन्तु गुरू नानक देव जी ने इन्हें मरदा–ना' कहकर सम्बोधित करते थे और स्थायी रूप में यही नाम प्रचलित हो गया।

गुरू जी के साथ मिलाप

भाई मरदाना जी के पिता, मीर बादरे गाँव का मरासी था। उन दिनों में चिट्ठी, पत्र भेजने का कोई साधन नहीं था। मरासी ही यह काम करते थे। गाँव निवासियों के संदेश उनके रिश्तेदारों को देने जाते और उन्हें सब कुछ मौखिक याद रखना पड़ता था। भाई मरदाना के पिता जी का इसी कारण गुरू नानक साहिब के पिता के पास आना–जाना लगा रहता। भाई मरदाना भी उनके साथ आते। मरासियों को समाज में निम्न जाति माना जाता था। इनका व्यवसाय मनोरंजन के लिए गाना–बजाना

होता है, चाहे वह राजा–महाराजाओं के लिए हो चाहे सामान्य लोगों के लिए। गुरू नानक देव जी ने जब मरदाना को रागों में रबाब बजाते सुना तब उन्होंने उसे अपना मित्र और उदासियों में साथी होने का सम्मान दिया। पहाड़ियों की सर्दी, रेगिस्तान की गर्मी, जंगलों में जानवरों का भय, उजाड़ और एकान्त में भूख प्यास न सहना, घर का मोह आदि ये सब गुरू जी का साथ देते समय कहीं बाधा न बने, इसीलिए गुरू साहिब जी ने मरदाना के मन से पंच विकारों–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि को खत्म करके सत्य, संयम, सब्र, दया और धर्म ये पांच गुण उनके अन्तर्मन में स्थापित कर दिए। सभी उदासियों दौरान भाई मरदाना जी गुरू जी के साथ गए। गुरू नानक देव जी ने भाई मरदाना को अपने साथ रखकर ऊँच–नीच और जाति–पाति का भेदभाव मिटाया। मरदाना जी लगभग 47 वर्ष गुरू जी के साथ रहे।

गुरू घर के पहले रबाबी

भाई मरदाना जी को गुरू घर के पहले रबाबी होने का सम्मान प्राप्त हुआ। भाई मरदाना में वंशीय गुणों के साथ–साथ रबाब बजाने का विशेष गुण था, जिससे उन्होंने गुरू नानक देव जी द्वारा रचित बाणी 19 रागों में का गायन किया। आज भी कीर्तनकर्त्ताओं के लिए भाई मरदाना जी की रबाब प्रेरणा स्रोत है। भाई मरदाना जी का त्याग और निष्काम भाव से परिपूर्ण जीवन समस्त सिक्ख समाज विशेषतः कीर्तनकर्त्ताओं, रागी सिक्खों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

बाणी

सिक्ख धर्म के धर्म ग्रन्थ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में भाई मरदाना जी के तीन शब्द बिहागड़ा राग में दर्ज हैं। कई विद्वान् इन्हें एक सम्पूर्ण शब्द मानते हैं।

अंतिम समय

जब गुरू जी तीसरी उदासी से वापिस लौट रहे थे तब अफगानिस्तान में कुरम नदी के किनारे बसे कुरम (खुरम) नगर में मरदाना जी ने 1534 ई. में प्राण त्याग दिए।

बाबा बुड्ढा जी

जन्म

बाबा बुड्ढा जी का जन्म 22 अक्तूबर, 1506 ई. को गाँव गग्गो नंगल, वर्तमान में कत्थूनंगल के शाही किले ज़िला अमृतसर में भाई सुघ्घा सिंह रंधावा जी के घर में हुआ। आपकी माता गौरां जी आध्यात्मिक और धार्मिक प्रवृत्ति की थी। उनकी भजन बन्दगी ने बाबा बुड्ढा जी के व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित किया।

नाम

माता–पिता ने आपका नाम बूढ़ा रखा। कुछ समय बाद आपका परिवार गाँव रामदास में आकर रहने लगा। आप पशु चराने का काम करते थे। जब आप बारह वर्ष के थे, तब एक दिन गुरू नानक देव जी रामदास गाँव में आए। आप भैंसे चराते हुए उनके पास पहुंच गए। आपने गुरू जी का उपदेश सुना, फिर आप रोज़ ही गुरू जी के पास आते, उनका उपदेश सुनते और उनके लिए दूध भेंट स्वरूप लेकर आते। एक दिन गुरू नानक देव जी बूढ़ा जी को उनके बारे में पूछा तो उनका उत्तर सुनकर कहा तुम हो तो बच्चे, किन्तु बातें बुड्ढों जैसी करते हो। तू बच्चा नहीं, तू बुड्ढा है।' उस दिन से बूढ़ा जी का नाम बुड्ढा जी हो गया। सिक्ख इतिहास में उन्हें सम्मानपूर्वक बाबा बुड्ढा जी कहा जाता है।

गुरूगद्दी की रस्म

बाबा बुड्ढा जी गुरू नानक देव जी के सिक्ख बन गए। वे सारा दिन संगत की सेवा करते और खेतीबाड़ी करते हुए नाम जपते रहते। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संगत–सेवा में लगा दिया और नानक जी के नाम जपो, किरत करो, वंड छको के उपदेश को कमाकर दिखाया। गुरू

नानक देव जी उन पर बहुत प्रसन्न रहते। जब गुरू नानक देव जी ने गुरूगद्दी गुरू अंगद देव जी को सौंपी, तब उन्होंने गुरियाई की रस्म बाबा बुड्ढा जी से करवाई। बाद में तीसरी, चौथी, पांचवी और छठी पातशाही की गुरूगद्दी पर बैठने की रस्म बाबा बुड्ढा जी ही निभाते रहे।

पहले ग्रन्थी

बाबा बुड्ढा जी को गुरू घर और दरबार साहिब, अमृतसर के पहले ग्रन्थी होने का सम्मान प्राप्त हुआ। श्री गुरू अर्जन देव जी ने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बीड़ तैयार करने के बाद बाबा बुड्ढा जी को पहला ग्रन्थी नियुक्त किया था। श्री गुरू अर्जन देव जी की सुपत्नी बीबी गंगा जी को बाबा बुड्ढा जी ने पुत्र की दात बख्शिश की थी।

अंतिम समय

1631 ई. में 125 वर्ष की आयु में गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी की गुरूगद्दी की रस्म के समय बाबा बुड्ढा जी का देहान्त हो गया।

भाई गुरदास जी

भाई गुरदास जी सिक्ख धर्म के पहले व्याख्याकार और दार्शनिक हैं। इनकी रचनाओं को 'गुरबाणी की कुंजी' कहा जाता है। डॉ. दर्शन सिंह अनुसार, सिक्ख धर्म में भाई गुरदास जी का स्थान उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना कि हिन्दू धर्म में वेद व्यास जी का, बौद्ध धर्म में आनन्द का और ईसाई धर्म में संतपाल का। 'आदि बीड़' जिसका

सम्पादन गुरू अर्जन देव जी ने किया था, उस बीड़ को लिखने की सेवा भाई गुरदास जी ने निभाई। भाई गुरदास जी ने स्वयं वारां, कबित्त और सवैयों की रचना की। इनकी वारों में वर्णित ऐतिहासिक संकेत गुरू इतिहास का मूल स्रोत माने जाते हैं। सिक्ख विरासत और इतिहास में भाई गुरदास जी बहुप्रतिभाशाली और बहुप्रसिद्ध शख्सीयत माने जाते हैं।

भाई गुरदास जी के सम्बन्ध में भाई काह्न सिंह नाभा जी ने लिखा है, भाई गुरदास जी सत्गुरू के सच्चे सिक्ख, बीबी भानी के नज़दीकी भ्राता थे। इन्होंने चौथे गुरू साहिब से 1636 ई. सिक्ख धर्म धारण किया और गुरबाणी का सिद्धान्त पांचवें गुरू साहिब से समझा। आप सिक्ख धर्म के बड़े प्रचारक थे। लाहौर, आगरा और काशी आदि स्थानों पर आपने सिक्ख धर्म का बहुत प्रचार किया। भाई गुरदास जी की रचनाएँ सिक्ख धर्म के नियमों का भण्डार हैं। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि '' श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के पश्चात् सिक्खी का रहतनामा भाई साहिब की रचनाओं से बढ़कर कहीं नहीं।''

जन्म

भाई गुरदास जी का जन्म 1551 ई. में पंजाब के गाँव गोइंदवाल में पिता भाई दातार चन्द भल्ला और माता जीवनी के घर में हुआ।

पालन–पोषण और विद्या

आप जब तीन वर्ष के हुए तब माता जी का देहान्त हो गया और बारह वर्ष की आयु में आपके पिता जी की भी मृत्यु हो गई। आपके पालन–पोषण और शिक्षा का प्रबन्ध श्री गुरू अमरदास जी ने किया। तीसरे गुरू जी की देखरेख में आपने पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत और ब्रज भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। आप ने श्री गुरू अमरदास के पश्चात् चौथे पातशाह श्री गुरू रामदास तत्पश्चात् श्री गुरू अर्जन देव जी के उचित निर्देशन में आगरा तथा कांशी में रहते हुए गुरमति का प्रचार किया।

गुरू परिवार के साथ सम्बन्ध

भाई गुरदास जी रिश्तेदारी में तीसरे पातशाह गुरू श्री अमरदास जी के भतीजे और पंचम पातशाह श्री गुरू अर्जन देव जी के मामा जी थे।

प्रचार भ्रमण

आपने जीवन के पहले वर्ष गोइंदवाल में व्यतीत किए और यहीं आपने मूल शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त आप बनारस चले गए, यहां आपने संस्कृत और ब्रज भाषा सीखी। आगरा, लखनऊ, बनारस, बुरहानपुर,

जम्मू, चम्बा आदि अनेक स्थानों पर आप ने सिक्खी का प्रचार किया।

डॉ. गंडा सिंह लिखते हैं कि ''भाई साहिब जब प्रचार के लिए आगरा गए तो वहां अकबर बादशाह से मिले। बादशाह आपके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ। भाई साहिब ने प्रेरणात्मक ढंग से अकबर बादशाह को सिक्खी सिद्धान्तों की जानकारी दी। वहां आसपास के कई क्षेत्रों में आपने कई सिक्ख संगतों की स्थापना की।'' महाकवि संतोख सिंह ने लिखा है, यहीं आगरा में गुरू रामदास जी के ज्योति जोत समा जाने का समाचार मिलते ही आप वापिस 'चक्क गुरू' लौट आए। 'चक्क गुरू' अमृतसर का पुराना नाम है।

आदि बीड़ के लेखक

आदि बीड़ को लिखने के लिए गुरू अर्जन देव जी ने अपने प्रमुख सिक्खों की सहायता ली। डॉ. रतन सिंह जग्गी अनुसार सारी बाणी एकत्रित करने के लिए भाई गुरदास जी तथा बाबा बुड्ढा जी जैसे वरिष्ठ सिक्खों को नियुक्त किया गया। एकत्रित तथा अपनी रचित बाणी को लिखने का कार्य पहले भाई संतदास, भाई हरिआ जी, भाई सुखा जी तथा भाई मनसा जी को सौंपा गया। अनेक वर्षों की मेहनत के पश्चात् जब सारी बाणी एकत्रित हो गई तो उसे संशोधित और रागबद्ध करके लिखने का अंतिम कार्य भाई गुरदास जी ने किया। आपको आदि बीड़ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की पहली बीड़ के लेखक होने का सम्मान प्राप्त है। यह महान कार्य आपने श्री गुरू अर्जन देव जी के उचित निर्देशन और देखरेख में सम्पन्न किया।

विशेष योगदान

गुरू अर्जन देव जी जब गुरूगद्दी पर विराजमान हुए तो भाई गुरदास जी उनके दर्शनों के लिए आए। आप हर समय गुरू साहिब की सेवा में उपस्थित रहते। गुरू अर्जन देव जी के समय में ऐसी परिस्थितियां भी आईं जब गुरू घर के लंगर कम होने लगे। इसका कारण ये था कि पृथी चन्द मसंदों से रसद, माया आदि ले तो लेता किन्तु गुरू दरबार में नहीं पहुंचाता था। भाई गुरदास जी ने परिस्थितियों को समझते हुए मसंदों से सीधा सम्पर्क किया और उन्हें समझाया कि राशन–पानी और माया आदि सीधे गुरू दरबार में ही दिया करें।

गुरू अर्जन देव जी की शहादत के पश्चात् गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के समय में अकाल तख़्त के निर्माण की सारी सेवा भाई

गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी ने निभाई थी।

वारां, कबित्त सवैये

पंजाबी भाषा में रचित आपकी महान रचना 'वारां ज्ञान रत्नावली' को पंचम पातशाह श्री गुरू अर्जन देव जी ने गुरबाणी की कुंजी कहकर सम्मानित किया। सिक्ख इतिहास और पंजाबी साहित्य में इनकी वारों का विशेष स्थान है। गुरू पातशाह के निर्देशन में सृजनात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से 40 वारों की रचना करके आपको प्रथम शिरोमणि वारकर्त्ता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसमें 913 पउड़ियां, 6,444 पंक्तियां और 46,166 के लगभग शब्द हैं। ब्रज भाषा में आपने लगभग 675 कबित्त और सवैयों लिखे।

ईश्वर द्वार बख्शी श्वास पूंजी को गुरू घर को समर्पित करते हुए आप 74 वर्ष की आयु में श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब की हजूरी में 1619 ई. में इस संसार को छोड़ कर चले गए। गुरू साहिब ने अपने हाथों से आपका संस्कार किया।

भाई नंद लाल जी

भाई नंद लाल जी गुरू घर की प्रसिद्ध शख्सीयत थे। आप अरबी, फारसी भाषा के विद्वान् थे। आपकी रचनाएँ ईश्वर के साथ सुरति जोड़ने के साथ–साथ दार्शनिक रचनाएँ हैं। आपका साहित्य विनम्रता, सहजता, संयम का भण्डार है। इसी कारण आपका नाम गुरू गोबिन्द साहिब के प्रमुख सिक्खों में शामिल है।

भाई नंद लाल जी का जन्म 1633 ई. को गज़नी (अफगानिस्तान)

में हुआ। आपके पिता छज्जू मल्ल जी शहज़ादा दारा शिकोह के मुंशी और एक विद्वान् व्यक्ति थे। भाई नंद लाल जी बारह वर्ष की आयु में ही कविता लिखने लगे। आपने अपना तख्लुस 'गोया' रखा। 17 वर्ष की आयु में आपकी माता जी और उसके दो वर्ष पश्चात् ही पिता जी का देहान्त हो गया। भाई नंद लाल जी पंजाब वापिस आ गए और मुलतान में रहने लगे।

गुरू गोबिन्द जी ने आनन्दपुर साहिब में विद्वानों, कवियों और कलाकारों को अपने दरबार में प्रत्येक प्रकार का संरक्षण देकर सम्मानित किया। भाई नंद लाल जी गुरू जी के 52 कवियों में एक कवी और अरबी, फारसी भाषा के महान् विद्वान् थे। भाई नंदलाल जी ने गुरू महिमा, भक्ति और आत्मिक ज्ञान के विषय पर कई पुस्तकों की रचना की।

उनके द्वारा लिखित रचनाएं हैं–

1. गज़लें दीवानि गोया
2. ज़िन्दगीनामा
3. गंजनामा
4. जोति–बिगास (फारसी)
5. जोति–बिगास (पंजाबी)
6. रहतनामा
7. तनख़ाह नामा
8. दसतूरुल–इन्शा
9. अरजुल–अलफ़ाज
10. तौसीफोसना
11. खातिमा

गुरू साहिब के पास आने से पहले भाई नंद लाल जी आगरा में शहज़ादा मुअज्जम के पास नौकरी करते थे। इस समय दौरान बादशाह अकबर ने पवित्र कुरान की एक आयत के अर्थ पता करने की जिम्मेवारी शहज़ादा मुअज्जम को दी और भाई नंद लाल जी द्वारा कुरान की आयत के किए अर्थ देखकर बादशाह दंग रह गया। उसने शहज़ादे को संकेत द्वारा समझाया कि इतने बड़े विद्वान् को इस्लाम में शामिल करना चाहिए। भाई नंदलाल जी चुपचाप वहां से निकल कर गुरू साहिब के पास आनन्दपुर पहुंच गए।

तत्कालीन समय में आनन्दपुर साहिब ज्ञान और विद्या का केन्द्र

था। इस वातावरण में भाई साहिब की रचनाओं का प्रवाह भी बहने लगा। आप गुरू गोबिन्द साहिब जी के कवियों में शामिल हो गए। गुरू के प्रति आप की श्रद्धा अथाह थी। आपने गुरू प्रेम में अनेक कृतियों की रचना की। दूसरी ओर गुरू पातशाह ने लंगर की सेवा भी आपको सौंप दी। आनन्दपुर साहिब में जितने भी डेरे थे, सभी में हर समय लंगर चलता और प्रत्येक जरूरतमंद को प्रशादा मिलता। एक दिन गुरू साहिब भाई नंद लाल जी के लंगर की तरफ गए तो उन्होंने देखा कि भाई साहिब एक हाथ से लंगर बांट रहे हैं और उनके दूसरे हाथ में कागज़ हैं। गुरू जी ने भाई नंद लाल जी को कागज़ों के बारे में पूछा तो भाई साहिब ने बताया कि उन्होंने एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम बंदगीनामा रखा है। गुरू जी ने उस पुस्तक को पढ़ा और उसका नाम बदलकर ज़िन्दगीनामा रख दिया क्योंकि उस पुस्तक में बंदगी के साथ–साथ ज़िन्दगी जीने की कला का भी वर्णन था।

इस प्रकार गुरू घर की सेवा करते हुए भाई नंदलाल जी गुरू जी के दक्षिण की ओर चले जाने पर वापिस मुलतान आ गए और यहीं आपने जीवन के अंतिम श्वास लिए।

भाई घनईया जी

भाई घनईया जी का जन्म 1648 ई. में पाकिस्तान क्षेत्र के सोदरा गांव में पिता नत्थू राम और माता सुन्दरी के घर में हुआ। आप के पिता खत्री थे। आपके पिता जी मुगल शासकों को रसद पहुंचाने की ठेकेदारी का काम करते थे। बचपन में ही आपके पिता जी का देहान्त हो गया। आपका पालन–पोषण आपकी माता जी ने ही किया। अल्पायु में ही

आपके भक्त ननूआ जी की शरण में गुरबाणी प्रेम और सिक्खी सिदक प्राप्त किया। भाई ननूआ जी की संगति में आप सेवक बन गए। तदुपरान्त नौंवे गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी की शरण में भाई धनईया जी ने सिमरन और सेवा का बल प्राप्त किया।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के प्रति समर्पित भाई घनईया जी खालसा की जन्मभूमि श्री आनन्दपुर साहिब में जुल्म, अत्याचार के विरुद्ध और गरीबों, दीनों की रक्षा हेतु हो रहे धर्म युद्ध में चमड़े की मशक में पानी भर कर तोपों, गोलियों की और बाणों की बौछार में रणभूमि में घूमते और जो कोई भी पानी मांगता, उसे पानी पिलाते। यह सिक्ख घायल दुश्मनों को भी पानी पिलाकर जीवित कर रहा है, कहीं वह दुश्मनों से तो मिला हुआ नहीं हैं। यह सोचते हुए कुछ सिक्खों ने गुरू जी से शिकायत की, हम तो युद्ध भूमि में मुश्किल से दुश्मनों को घायल करते हैं, हताश करते हैं किन्तु यह सिक्ख उन्हें पानी पिलाकर जीवित कर देता है, भाव उनकी चेतना जगा देता है। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भाई घनईया को बुलाया। पूछने पर भाई घनईया जी ने कहा कि प्रत्येक घायल व्यक्ति में मुझे आपकी सूरत दिखाई देती है। अपने और दुश्मनों में किसी प्रकार का भेद न समझने वाले भाई घनईया जी पर गुरू जी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आपको घायलों की मरहमपट्टी करने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार भाई घनईया जी बिना भेदभाव के घायलों की सेवा करते रहे।

वर्ष 1705 ई. में गुरू जी ने जब आनन्दपुर छोड़ा तब आप अपने आश्रम 'कव्हा' चले गए। गुरू जी ने आपको नाम–सिमरन और सेवा करने का वरदान दिया। आपने लोगों की बहुत सेवा की। 1718 ई. को कव्हा में ही 71 वर्ष की आयु में आपने शरीर छोड़ दिया।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सिक्खी के पहले व्याख्याकार कौन थे?

(क) भाई नंदलाल जी (ख) भाई गुरदास जी

(ग) भाई मनी सिंह जी (घ) श्री गुरू नानक देव जी

प्रश्न 2. भाई गुरदास जी का जन्म कहां हुआ?

(क) करतारपुर (ख) खडूर साहिब

(ग) अमृतसर (घ) गोइंदवाल

प्रश्न 3. भाई गुरदास जी के पालन–पोषण और शिक्षा का प्रबन्ध किसने किया ?

(क) बाबा बुड्ढा जी ने (ख) गुरू रामदास जी ने

(ग) गुरू अमरदास जी ने (घ) गुरू अंगद देव जी ने

प्रश्न 4. आदि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की पहली बीड़ के लेखक होने का सम्मान किसे प्राप्त है ?

(क) श्री गुरू नानक देव जी को (ख) श्री गुरू अर्जन देव जी को

(ग) भाई मनी सिंह जी को (घ) भाई गुरदास जी को

प्रश्न 5. भाई गुरदास जी की महान् रचना 'वारां' ज्ञान रत्नावली जी को गुरू अर्जन देव जी ने किस नाम से नवाजा?

(क) बाणी खज़ाना (ख) सहायक बाणी

(ग) गुरबाणी की कुंजी (घ) वारां

प्रश्न 6. भाई गुरदास जी ने कितनी वारों की रचना की?

(क) 22 (ख) 31

(ग) 40 (घ) 45

प्रश्न 7. भाई गुरदास जी ने कितने कबित्त सैवेयों की रचना की?

(क) 650 (ख) 675

(ग) 674 (घ) 670

प्रश्न 8. भाई नंदलाल जी का जन्म कहां हुआ?

(क) पाकिस्तान (ख) लाहौर

(ग) हिन्दुस्तान (घ) गज़नी (अफगानिस्तान)

प्रश्न 9. गुरू पातशाह ने भाई नंदलाल जी की किस रचना का नाम बदलकर 'ज़िन्दगीनामा' रखा ?

(क) रहतनामा (ख) खातिमा

(ग) तनखाहनामा (घ) बंदगीनामा

प्रश्न 10. बाबा बुड्ढा जी के बचपन का क्या नाम था?

(क) भाई बुड्ढा (ख) बुड्ढा मल्ल

(ग) बूड़ा (घ) बुड्ढा राम

प्रश्न 11.बाबा बुड्ढा जी का जन्म कहां हुआ?

(क) अमृतसर (ख) कथ्थूनंगल

(ग) खडूर साहिब (घ) तरनतारन

प्रश्न 12.बाबा बुड्ढा जी ने किस गुरू साहिबान तक गुरूगद्दी के तिलक लगाने की रस्म निभाई?

(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) गुरू तेग बहादर जी

(ग) गुरू रामदास जी (घ) गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी

प्रश्न 13.देहान्त के समय बाबा बुड्ढा जी कितने वर्ष के थे?

(क) 105 वर्ष (ख) 120 वर्ष

(ग) 134 वर्ष (घ) 125 वर्ष

प्रश्न 14. भाई घनईया जी का जन्म कहां हुआ?

(क) अमृतसर (ख) आनन्दपुर साहिब

(ग) लाहौर (घ) सोदरा

प्रश्न 15. भाई घनईया जी का देहान्त कब हुआ?

(क) 1718 ई. (ख) 1720 ई.

(ग) 1719 ई. (घ) 1721 ई.

प्रश्न 16. भाई घनईया जी किसमें पानी पिलाते थे?

(क) मशक (ख) बाल्टी

(ग) जग्ग (घ) गड़वी

प्रश्न 17. भाई गुरदास जी किसके भतीजे थे?

(क) श्री गुरू नानक देव जी (ख) श्री गुरू रामदास जी

(ग) श्री गुरू अमरदास जी (घ) श्री गुरू अर्जन देव जी

प्रश्न 18. भाई गुरदास जी किस ग्रन्थ के लेखक थे?

(क) श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी (ख) दसम ग्रन्थ

(ग) आदि बीड़ (घ) सरब लोह ग्रन्थ

प्रश्न 19. किस गुरू साहिबान ने भाई गुरदास जी से अकाल तख़्त का निर्माण करवाया ?

(क) गुरू अर्जन देव जी (ख) गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी

(ग) गुरू हरिराय साहिब जी (घ) गुरू हरिकृष्ण साहिब जी

प्रश्न 20.गुरू गोबिन्द सिंह जी के दरबार में भाई नंदलाल जी किस कारण प्रसिद्ध हुए ?

(क) सैनिक गुणों के कारण (ख) कवि होने के कारण

(ग) दोनों (घ) कोई नहीं

प्रश्न 21.गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भाई नंदलाल जी की पुस्तक का नाम बदलकर क्या नाम रखा ?

(क) बंदगीनामा (ख) ज़िन्दगीनामा

(ग) रहतनामा (घ) तनखाहनामा

प्रश्न 22.भाई नंदलाल जी ने अपना अंतिम समय कहां व्यतीत किया?

(क) काबुल (ख) मुलतान

(ग) पंजाब (घ) दिल्ली

प्रश्न 23.बाबा बुड्ढा जी कहां के पहले ग्रन्थी थे ?

(क)	हरिमन्दिर साहिब	(ख)	अकाल तख़्त
(ग)	तरनतारन	(घ)	कीरतपुर साहिब

प्रश्न 24. मरदाना जी किसके साथी थे ?

(क)	गुरू नानक साहिब के	(ख)	हसन के
(ग)	सज्जन के	(घ)	पण्डित के

प्रश्न 25. मरदाना जी कौन थे ?

(क)	मुस्लिम	(ख)	पारसी
(ग)	हिन्दू	(घ)	सिक्ख

प्रश्न 26. मरदाना जी कहां रहते थे?

(क)	अफगानिस्तान	(ख)	कज़ाकिस्तान
(ग)	पाकिस्तान	(घ)	हिन्दुस्तान

प्रश्न 27.सिक्ख इतिहास में मरदाना जी को किस नाम से जाना जाता है?

(क)	रबाबी	(ख)	रागी
(ग)	ढाडी	(घ)	नादी

प्रश्न 28. मरदाना जी कौन सा वाद्य बजाते थे?

(क)	सितार	(ख)	सरंदा
(ग)	रबाब	(घ)	दिलरुबा

प्रश्न 29. अपने अंतिम समय में मरदाना जी कहां थे ?

(क)	अफ़गानिस्तान	(ख)	कज़ाकिस्तान
(ग)	पाकिस्तान	(घ)	हिन्दुस्तान

,

प्रश्न 30. भाई गुरदास जी की वारें किस भाषा में हैं?

(क)	हिन्दी	(ख)	उर्दू
(ग)	पंजाबी	(घ)	संस्कृत

उत्तरमाला

उत्तरः—1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ग) 7.(ख)8. (घ) 9. (घ) 10. (ग) 11. (ख) 12. (घ) 13. (घ) 14. (घ) 15.(क) 16.(क) 17. (ग) 18. (ग) 19. (ख) 20. (ख) 21. (ख) 22. (ख) 23. (क) 24.(क) 25.(क) 26. (ग) 27. (क) 28. (ग) 29. (क) 30.(ग)

वाहिगुरू

अध्याय—छठा

सिक्ख का दैनिक/नित नेम, सिद्धान्त और अरदास

वाहिगुरू

1. सिक्ख का दैनिक/नित नेम

गुरू साहिब जी ने गुरबाणी में सिक्ख के नित नेम का वर्णन करते हुए कहा है–

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।।
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अम्रित सर नावै।।
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै।।
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै।।
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै।।
जिस नो दइआलु होवै सुआमी तिसु गुरसिखु गुरू मनि भावै।।
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिखु की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।।

(शब्दार्थ, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, अंग 305)

गुरू साहिब के अनुसार प्रत्येक सिक्ख का कर्त्तव्य है कि वह अमृत/ब्रह्म समय में उठकर, स्नान करके परमात्मा का सिमरन करे और गुरबाणी का पाठ करे। किरत करते समय भी उसकी चेतना में प्रभु का नाम बसा होना चाहिए। ऐसे कर्म करने वाला मनुष्य ही वास्तव में गुरू का प्रिय बन सकता है, जो स्वयं सिमरन करता है और दूसरों को भी नाम जपने के लिए प्रेरित करता है। इस नेम की प्राप्ति यह है कि नेमधारण करने से सभी पाप और विकार खत्म हो जाते हैं।

2. गुर मन्त्र और मूल मन्त्र

वाहेगुरू शब्द गुर मन्त्र है। इसे जपने के लिए कहा गया है।

" सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर

प्रसादि ।।'' यह मूल मन्त्र है।

3.नितनेम की बाणिआ :

अमृत समय की बाणिआं

बाणी	बाणीकार	शब्द / सलोक
जपुजी साहिब	श्री गुरू नानक देव जी	पउड़ियां 38, सलोक 2
जापु साहिब	श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी	199 पउड़ियां
आनन्द साहिब	श्री गुरू अमरदास जी	40 पउड़ियां
तवप्रसादि सवैये	श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी	30 पउड़ियां
चौपई साहिब	श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी	25 बंद, 1 दोहरा, 1 सवैया

संध्या और रात की बाणिआं

बाणी	शब्द / सलोक
रहिरास साहिब	गुरू नानक देव जी – 4 शब्द, गुरू अमरदास जी–आनन्द साहिब की पहली पांच पउड़ियां और अंतिम 1 पउड़ी, गुरू रामदास जी – 3 शब्द, गुरू अर्जन देव जी– 4 शब्द, गुरू गोबिन्द सिंह जी– चौपई 25 बंद, 1 सवैया, 1 दोहरा, (सिक्ख रहत मर्यादा अनुसार)
कीर्तन सोहिला	गुरू नानक साहिब –3 शब्द, गुरू रामदास साहिब –1 शब्द, गुरू अर्जन देव जी– 1 शब्द

4. मौलिक सिद्धान्त

I. किरत करो, नाम जपो, वंड छको

जगत गुरू नानक देव जी इस समाज में विचरण करने के लिए तीन सिद्धान्त दिए हैं– किरत करो, नाम जपो, वंड छको।

सच्ची सुच्ची किरत करने और परिश्रम करने की शिक्षा दी है। गुरू साहिब ने स्वयं किरत करके किरत के महत्त्व को दर्शाया है।

नाम जपने का अर्थ है एक अकाल पुरख को मानना उसका ही जाप (सिमरन) करना। नाम सिमरन ही सभी दुःखों, कष्टों और तकलीफों का समाधान है। गुरबाणी में कहा गया है–

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ।।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ।।

गुरू साहिब ने नेक कमाई करने और वंड छकने का उपदेश दिया है अर्थात् समाज में रहते हुए यदि किसी व्यक्ति के समक्ष किसी प्रकार की कोई समस्या पेश आ गई है और उसे सहायता की आवश्यकता है तो सिक्ख उसकी सहायता करे। इस सिद्धान्त की प्रौढ़ता में सिक्ख जाति ने जरूरत के समय लंगर लगाकर विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त की है। सिक्ख धर्म में सेवा और सिमरन दो स्तम्भ हैं, जिस पर सिक्खी कायम है। सेवा समाज में करनी है और सिमरन परमात्मा का, एक अकाल पुरख का करना है।

II. स्त्री को सम्मान

सिक्ख धर्म में स्त्री को बहुत सम्मान दिया गया है। गुरू नानक देव जी ने स्त्री की महानता को प्रकट करते हुए कहा कि स्त्री से ही जगत् की उत्पत्ति होती है, प्रत्येक सम्बन्ध इसी के साथ आगे बढ़ता है। इस जगत का मूल स्त्री ही है–

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगण वीआहु।।
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु।।

राजा–महाराजा को जन्म भी स्त्री ही देती है तो उसे बुरा क्यों कहा जाए, गुरू जी का फरमान है–

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।

III. संयम से रहना

सिक्ख धर्म में संयम से रहने का निर्देश है। कम सोना, कम खाना बुद्धिमानी की निशानी है। गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज है –

खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो।।

संयमहीन जीवन की कड़ी आलोचना करते हुए उपदेश दिया है–

फिटु इवेहा जीविआ जितु खाई वधाइआ पेटु।।

मन नीचा और मति ऊँची

सिक्ख धर्म में मधुर वाणी और विनम रहने का उपदेश दिया गया है। ये दोनों गुण मधुर भाषण और विनम्रता (अहम् का त्याग) सभी गुणों से उत्तम हैं और सभी अच्छाईयों का सार हैं–

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु।

और जो लोग किसी को ताने देते हैं, फीका (कटु) बोलते हैं, उनके बारे में कहा गया है–

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ।
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ।।

अर्थात् फीका बोलने से तन–मन दोनों ही फीके हो जाते हैं। व्यक्ति का सारा व्यवहार ही फीका हो जाता है। लोग ऐसे व्यक्ति को फीका कहकर बुलाते हैं।

V. निर्भीकता / स्वाभिमान से जीना

सिक्ख धर्म में साहस, शूरवीरता और निर्भीकता का प्रमुख गुण माना गया है। गुरू तेग बहादर जी अनुसार स्वाभिमानी जीवन जीने वाला व्यक्ति ही सबसे अधिक ज्ञानी है–

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि।।

अरदास का संकल्प

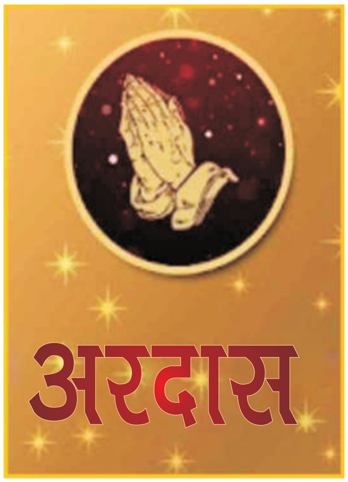

सिक्ख धर्म में अरदास का संकल्प अति महत्त्वपूर्ण और विशेष स्थान रखता है। एक सिक्ख द्वारा गुरू साहिब को अपने मन की बात कहने का विशेष माध्यम 'अरदास' है। गुरू साहिब बहुत ही नज़दीक से अपने सिक्ख की बात सुनते हैं। शाब्दिक पक्ष से अरदास शब्द दो शब्दों अर्ज़ +दाशत से बना है। अर्ज़ का अर्थ है, प्रार्थना और दाशत का अर्थ है पेश करना। जीव द्वारा परमेश्वर के समक्ष की जाने वाली प्रार्थना ही अरदास है। दुःख हो या सुख, खुशी या गम प्रत्येक अवसर पर गुरू का सिक्ख गुरू बख्शिश प्राप्त करने के लिए अरदास करता है। गुरबाणी अनुसार अकाल पुरख के समक्ष मानव का ज़ोर नहीं चल सकता। अतः परमात्मा के समक्ष अरदास करना ही, उसे मनाने का सर्वोत्तम ढंग है। सिक्ख इतिहास में ऐसे विवरण उपलब्ध हैं जब एक सिक्ख द्वारा की गई अरदास को गुरू साहिब ने बहुत नज़दीक होकर सुना। उदाहरणतः मक्खण शाह लबाणा द्वारा अपने डूबते जहाज़ को बचाने के लिए गुरू तेग बहादर जी के समक्ष की गई अरदास एक महत्त्वपूर्ण घटना है। वर्तमान समय में सिक्ख धर्म में नित्य की जाने वाली अरदास, सिक्ख इतिहास और सिक्ख सिद्धान्तों को संक्षिप्त और सुन्दर ढंग से पेश करती है। इस अरदास में दस गुरू साहिबान, सिक्ख धर्म के लिए कुर्बान होने वाले गुरू सिक्खों, सिक्ख धर्म में घटित प्रमुख घटनाओं को याद करने के पश्चात् एक सिक्ख द्वारा सिक्खी जीवन आधारित आठ प्रकार के दान की मांग

की गई है, इनमें नामदान सबसे बड़ा दान माना गया है। अरदास के अंत में सम्बन्धित कार्य के लिए प्रार्थना करने से पहले सिक्ख द्वारा अकाल पुरख के समक्ष अपना मन नीचा और मति उच्च रखने की प्रार्थना की जाती है। यह प्रार्थना स्वयं में अति महत्वपूर्ण है क्योंकि गुरबाणी में विनम्रता को सभी गुणों का सार कहा गया है। विनम्र मन और उच्च बुद्धि का स्वयं में बहुत ही सुन्दर सुमेल है क्योंकि मन में विनम्रता धारण करके उच्च स्तरीय रौशन बुद्धि द्वारा ही इहलोक और परलोक की प्राप्ति सम्भव है। अरदास का सबसे विशेष पक्ष है, अरदास के अंत में सर्व मानव जाति के कल्याण की भावना। सरबत के भले की मांग एक गुरू सिक्ख को निजवाद और संकीर्ण दृष्टिकोण से मुक्त कर भाईचारे और सौहार्द भाव की ओर प्रेरित करती है।

अरदास

वाहिगुरू जी की फतहि।।

सिरी भगौती जी सहाइ।। वार सिरी भगौती जी की पातशाही दसवीं।।

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुरू नानक लईं धिआइ।। फिर अंगद गुरू ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ।। अरजन हरगोबिंद नौ सिमरो श्री हरिराइ।। श्री हरि क्रिशन धिआइऐ जिस डिठै सभि दुख जाइ।। तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ।। सभ थांइ होइ सहाइ।। दसवां पातशाह गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी ! सभ थाइ होइ सहाइ।। दसां पातशाहीआं दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धियान धर के बोलो जी वाहिगुरू!

पंजां पिआरिआं, चौहां साहिबजादिआं, चाह्लीआं मुकतिआं, हठीआं जपीआं, तपीआं, जनां नाम जपिआ, वंड छकिआ, देग चलाई तेग वाही, देख के अनढिठ कीता, तिनां पिआरिआं, सचिआरिआं दी कमाई दा धिआन धर के, खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरू।।

जिनां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दिते, बंद बंद कटाए, खोपरीआ लुहाईआ, चरखड़ीआं ते चढ़े, आरिआ नाल चिराए गए, गुरुदुआरिआं दी सेवा लई कुरबानीआं कीतीआं, धर्म नहीं हारिआ, सिक्खी केसां सुआसां नाल निभाही, तिनां दी कमाई दा धिआन धर के, खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरु।।

पंजां तखतां, सरबत गुरदुआरिआं दा धिआन धर के, खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरु।।

प्रिथमे सरबत खालसा जी की अरदास है जी, सरबत खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु चित्त आवे, चित्त आवण दा सदका सरब सुख होवे।

जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रछिआ रिआइत, देग तेग फ़तह, बिरद की पैज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाइ, खालसे जी के बोलबाले, बोलो जी वाहिगुरु !

सिक्खां नूं सिक्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान, नाम दान श्री अमृतसर साहिब जी दे इशनान, चौकीआं, झंडे, बुंगे, जुगो जुग अटल, धरम का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु !

सिक्खां दा मन नीवां, मत उच्ची मत दा राखा आप वाहेगुरु। हे

अकाल पुरख आपणे पंथ दे सदा सहाई दातार जीओ! श्री ननकाना साहिब ते होर गुरदुआरिआं, गुरधामां दे, जिनां तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है, खुले दर्शन दीदार ते सेवा संभाल दा दान खालसा जी नूं बखशो।

हे निमाणिआं दे माण, निताणिआं दे ताण, निओटिआं दी ओट, सच्चे पिता वाहिगुरू ! आप दे हुजूर .... दी अरदास है जी। अक्खर वाधा घाटा भूल्ल चुक माफ करनी। सरबत दे कारज रास करने। सेई पिआरे मेल, जिन्हां मिलिआ तेरा नाम चित्त आवे। नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।

इसके बाद अरदास में शामिल होने वाली सारी संगत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के आगे आदर पूर्वक माथा टेके और फिर खड़े होकर वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू की जी फतहि' बोले। उपरान्त 'सति श्री अकाल ' का जैकारा लगाया जाए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जपु जी बाणी किस गुरू की रचना है?

(क) श्री गुरू अमरदास जी (ख) श्री गुरू नानक देव जी
(ग) श्री गुरू अर्जन देव जी (घ)श्री गुरू तेग बहादर जी

प्रश्न 2. जपु जी बाणी में कितनी पउड़ियां हैं?

(क) 22 (ख) 32
(ग) 38 (घ) 30

प्रश्न 3. अनंदु बाणी किस गुरू की रचना है?

(क) श्री गुरू अमरदास जी (ख) श्री गुरू रामदास जी
(ग) श्री गुरू अर्जन देव जी (घ) श्री गुरू तेग बहादर जी

प्रश्न 4. अनंदु साहिब में कुल कितनी पउड़ियां हैं?

(क) 40 (ख) 25
(ग) 37 (घ) 30

प्रश्न 5. चौपई साहिब किस गुरू साहिबान की बाणी है?
(क)श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी(ख) श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी
(ग) श्री गुरू हरिकृष्ण साहिब जी (घ) श्री गुरू तेग बहादर जी

प्रश्न 6. चौपई साहिब में कुल कितने बंद हैं?
(क) 24 (ख) 26
(ग) 25 (घ) 29

प्रश्न 7. अमृत समय में कितनी बाणियों का पाठ किया जाता है?
(क) 4 (ख) 6
(ग) 5 (घ) 9

प्रश्न 8. कीर्तन सोहिला बाणी में गुरू रामदास जी के कुल कितने शब्द हैं?
(क) 4 (ख) 2
(ग) 1 (घ) 3

प्रश्न 9. रहिरास साहिब का पाठ किस समय किया जाता है?
((क) प्रातःकाल में (ख) दोपहर के समय में
(ग) संध्या समय में (घ) रात के समय में

प्रश्न 10.गुर मन्त्र क्या है?
(क) वाहिगुरू (ख) करतार
(ग) गुरू (घ) राम

प्रश्न 11.मूल मन्त्र में परमात्मा को क्या कहा गया है?
(क) अकाल (ख) एक ही समय का
(ग) काल के अन्तर्गत आने वाला (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 12. जापु साहिब किसकी रचना है?
(क) दसम पातशाह की (ख) छठे पातशाह की
(ग) नौवें पातशाह की (घ) आठवें पातशाह की

प्रश्न13. सिक्ख धर्म के मूल सिद्धान्त कितने हैं?

(क) दस (ख) तीन
(ग) नौ (घ) आठ

प्रश्न 14.सिक्ख अरदास में कितने प्रकार के दान की प्रार्थना की गई है?

(क) 10 (ख) 12
(ग) 8 (घ) 6

प्रश्न 15.अरदास में किसे झुका कर रखने की प्रार्थना की गई है?

(क) मन (ख) नेत्र
(ग) हाथ (घ) रसना

प्रश्न 16. अरदास में सबसे बड़ा दान कौन सा है?

(क) ज्ञान दान (ख) क्षमा दान
(ग) भरोसा दान (घ) नाम दान

प्रश्न 17.अरदास में प्रभु के समक्ष किसे ऊँचा रखने की प्रार्थना की गई है?

(क) ह्दय (ख) बुद्धि
(ग) विवेक (घ) ज्ञान

प्रश्न 18.अरदास कितने शब्दों से मिलकर बना है?

(क) 2 (ख) 4
(ग) 3 (घ) 5

उत्तरमाला

उत्तरः—1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (क) 5. (क) 6. (ग) 7.(ग) 8. (ग) 9. (ग) 10. (क) 11. (क) 12. (क) 13. (ख) 14. (ग) 15.(क) 16.(घ)17. (ख) 18. (क)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सरबजिन्दर सिंह (डॉ.), धुर की बाणी, सिक्ख फाऊंडेशन, नयी दिल्ली, 2004.
2. वही, मरणु कबूलि, सिक्ख फाऊंडेशन, नयी दिल्ली, 2013.
3. वही, (संपा.) विश्व धर्म बाणी ग्रन्थ, सम्प्रदाय और चिंतक (भाग–4), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2007.
4. सिक्ख रहत मर्यादा, धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर, 2011.
5. शब्दार्थ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब (चार सैंचियां), शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर, 2002.
6. नाभा, काह्न सिंह (भाई), गुरू शब्द रत्नाकर महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, 1981.
7. मुखतार सिंह गुराइया, दस पातशाहियां जी, कार्य और उपदेश संक्षेप वृत्तान्त, आल इंडिया पिंगलवाड़ा, चैरीटेबल सोसाइटी, अमृतसर, 2017.
8. रतन सिंह जग्गी, गुरू ग्रन्थ विश्वकोश, भाग दूसरा, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2002.
9. वही, सिक्ख पंथ विश्व कोश, गुर रतन पब्लिशर्ज़, पटियाला, 2005.
10. रूप सिंह (डॉ.), सिक्ख संकल्प, सिद्धान्त और संस्थाएँ, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर, 2015.

वैबसाइट

पंजाबी पीडिया, https://punjabipedia.org/

विकीपीडिया,https://pa.wikipedia.org/wiki

सिक्ख इतिहास

लेखक के विषय में...

डॉ. कर्मजीत सिंह पंजाब के ऐसे प्रथम प्रबुद्ध कामर्स अकादमिक विशेषज्ञ हैं, जिनकी उपलब्धियाँ राष्ट्रीय स्तर से आगे बढ़ चुकी हैं। कामर्स जैसे अति नीरस और कठिन विषय में आपने उच्च स्तर तो प्राप्त किया ही है साथ ही साथ समय ने आपको इस विषय को साहित्य की तरह पढ़ाने की अन्तःदृष्टि एवं पहुंच विधि के निर्माता और चिन्तक के रूप में पहचान दी है। यद्यपि इस क्षेत्र में ऐसी विधा को मात्र स्वप्न और मृगतृष्णा के रूप में ही देखा गया है। अकादमिक विशेषज्ञ के रूप में यद्यपि शीर्ष पर पहुंचना सहज कार्य नहीं है तथापि अकादमिक विशेषज्ञ के साथ–साथ उच्च प्रबन्धक के रूप में मील पत्थर स्थापित करना सरल नहीं है, किन्तु डॉ. कर्मजीत सिंह ने इसे भी सत्य सिद्ध कर दिया। प्रबन्धन की गुढ़ती पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से ग्रहण की, जहां सैनेट, सिंडीकेट तथा अन्य विभिन्न महत्त्वपूर्ण पड़ावों को पार करते हुए इस विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार जैसी उच्च पदवी पर प्रतिष्ठित हुए। इनके परिश्रम, सत्य निष्ठा और लगन का ही परिणाम था कि रजिस्ट्रार के रूप में इनका कार्यकाल आज भी इस विश्वविद्यालय में ' स्वर्ण युग' (गोल्डेन ऐज) के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार प्रख्यात अकादमिक विशेषज्ञ डॉ. कर्मजीत सिंह की जगत गुरू नानक देव, पंजाब स्टेट ओपन विश्वविद्यालय, पटियाला के पहले अकुलपति के रूप में नियुक्ति तत्कालीन सरकार द्वारा उठाया गया प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय कदम स्वीकार किया जा सकता है।

सरबजिन्दर सिंह (डॉ.)